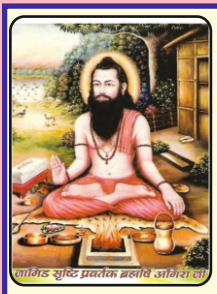
मूल्य - 20



अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा का मासिक पत्र

जांगिड ब्राह्मण

JANGID BRAHMIN



अंगिराऽसि जंगिडः वर्षः 119, अंकः 09, सितम्बर -2026 ई., तारीख 22-27 प्रति माह श्री विश्वकर्मणे नमः

POSTED UNDER LICENCE NO. U(DN) 39/2024-26 OF POST WITHOUT PREPAYMENT OF POSTAGE

"कर्म ही पूजा है,
और श्रम ही सच्ची भक्ति है।"

आइए, परिश्रम, नवाचार और तकनीक के बल पर भारत को विश्व की अग्रणी औद्योगिक शक्ति बनाने का संकल्प लें।

सृजन • निर्माण • प्रगति

विश्वकर्मा पूजा दिवस

की हार्दिक शुभकामनाएं

यह पावन पर्व उन सभी श्रमिकों, अभियंताओं, कौशल-कर्मियों और उद्योग जगत के कर्मयोगियों को समर्पित है, जो अपने श्रम, कौशल और सृजनशीलता से राष्ट्र के विकास में योगदान दे रहे हैं।

आत्मनिर्भर भारत
विकसित भारत
औद्योगिक शक्ति से समृद्ध भारत

आइए, श्रम का सम्मान करें, स्वदेशी को अपनाएं,
नवाचार को बढ़ावा दें और 'विकसित भारत' के निर्माण में
औद्योगिक जगत की भूमिका को और सशक्त बनाएं।

प्रधान- रामपाल शर्मा

विनिर्माण उद्योग | एमएसएमई (लघु एवं मध्यम उद्योग) | निर्माण क्षेत्र | ऑटोमोबाइल उद्योग | इलेक्ट्रॉनिक्स एवं आईटी | हरित ऊर्जा (सौर, पवन, गैस हाइड्रोजन) | बंदरगाह एवं लॉजिस्टिक्स | एयरोस्पेस और रक्षा | रोबोटिक्स व उन्नत तकनीक

कर्म, कौशल और नवाचार से – समृद्ध, सशक, आत्मनिर्भर भारत

प्रधान- श्री रामपाल शर्मा

सम्पादक- रामभगत शर्मा

शुभलाभ
GREEN VALLEY
2&3 BHK LUXURIOUS FLAT & SHOPS

शुभलाभ
VINTAGE
VILLA
6 BHK Luxurious Villas

THE
VINTAGE
शुभलाभ
3 BHK Premium Living

शुभलाभ
HERITAGE
3 | 4 BHK Heritage Living & Penthouse

शुभलाभ
SQUARE
Showrooms | Corporate Entertainment

शुभलाभ
GROUP

AHMEDABAD

THE VINTAGE
Naroda- Dehgam Road
Opp. Shyam Valencia Bungalow
New Naroda, A'bad-382230

Nilesh Sharma 96388 00449
Anurag Sharma 83201 68811

शुभलाभ
HEIGHTS
2 | 3 BHK Premium Living

SENTOSA
ROYAL BUNGALOW
4 BHK Royal Living Homes

PALATE
RESTAURANT & BANQUET

GRAND
Neelkanth
banquet & restaurant
100-1000 Capacity Banquet

FITNESS FUEL
365 Days Open, Luxurious Gym

SUZUKI



Shri Dharamveer Ji



Mr. Vipin Kumar
M. 9911402402



Mr. Vikas Sharma
M. 9911141118

DHARAM SUZUKI

Authorised Dealership Of Suzuki Motorcycle India Private Limited.

Showroom & Workshop

A-12, Amanpuri, Najafgarh Road, Nangloi, Delhi-110041

M. 9911401401

Showroom

RR-26, Mianwali Nagar, Rohtak Road, Peeragarhi, Delhi-110086

M. 7065711133



BURGMAN STREET | Access125 | Avenis | GIXXER SF

INTERIO CRAFT

MERGER OF **ROYAL, SG AND KRISHNA INTERIORS**

With its existence over three and half decades,we have carved a niche in the segment of providing complete interior solutions to various corporates houses, retail stores & residences pan India.

Our Management Team



Rampal Sharma | Deepak Sharma | Jagmohan Sharma | Amith Sharma



Our Sister Concerns:

- Krishna Ventures
- Krishna Retails
- SG Ventures
- NR Retails

Our Franchise Stores

- N R Retails, Uspolo Store, Kammanahalli, BANGALORE
- Uspolo Store, Vega City Mall, BANGALORE
- Krishna Retails, Uspolo Store, USPA-Forum Sujana Mall, HYDERABAD
- Flying Machine, FM-Forum, Sujana Mall, HYDERABAD
- Uspolo Kids, USPA kids-Sarat City Mall, HYDERABAD
- Uspolo Denim, USPA Denim - Sarat City Mall, HYDERABAD
- Flying Machine, FM -Sarat City Mall, HYDERABAD
- Krishna Ventures, Mega Mart, Mega Mart - Kotputli, JAIPUR
- Third Wave Coffee, Bel Road, BANGALORE
- Wrogn Store, L&T Mall, HYDERABAD
- Swish Salon, BANGALORE

OUR SERVICES

ON SITE

- Carpentry
- Painting
- Tiling
- Marble Work
- Electrical & Lighting
- Civil
- Plumbing...

OFF SITE

- Production of Furniture
- Metal Works

WE ARE TURNKEY INTERIOR SOLUTION PROVIDERS

WE MAKE THEM LOOK AESTHETICALLY RICH AND BEAUTIFUL









Reach us:

Corporate Office: No 13/14 Royal Chambers, 3rd Floor, Dodda Banaswadi, Outer Ring Road, Near Vijaya bank Colony, Bengaluru, Karnataka 560043

080 2542 6161

projects@interiocraft.com

www.interiocraft.com

Some of our Valuable Clients

FLYING MACHINE · U.S. POLO ASSN. · AEROPOSTALE · ARROW · LP · PETER ENGLAND · NAUTICA · GAP · trueblue · GANT · Allen Solly · VAN HEUSEN · lifestyle · max · homecentre · ZOYA · TANISHQ · TANEIRA · TITAN · Aelios · fastrack · TITAN eyeplus · Mia · MELORRA · CENTRO · BIRKENSTOCK · THIRD WAVE COFFEE · SWAYAMVAR · SHOPPERS STOP · BLUESTONE · SEAUTY · SWISH · TASVA · Tanagaar

''जांगिड ब्राह्मण महासभा पत्रिका'' के नियम एवं उद्देश्य

1. समाज के सभी वर्ग के व्यक्तियों के सर्वांगीण विकास के लिए नवाचार करना।
2. साहित्य सृजन, आध्यात्मिक चेतना एवं आत्मविश्वास को प्रोत्साहन देना।
3. सामाजिक गतिविधियों के अन्तर्गत केन्द्रीय, प्रादेशिक, क्षेत्रीय एवं स्थानीय समाचारों को प्रकाशित करना।
4. सामाजिक शिक्षा, वैज्ञानिक तकनीकी एवं शिल्पोन्नति संबंधी निबंध तथा लेखों आदि को प्रकाशित करना।
5. समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर करना तथा उन्मूलन के लिए विकास की ओर उन्मुख होने का संचरण करना।
6. पत्रिका प्रत्येक अंग्रेजी माह की 22-27 तारीख को प्रकाशित होती है।
7. लेखों व अन्य प्रकाशनार्थ भेजी गयी सामग्री को छापने, न छापने तथा घटाने-बढ़ाने का पूर्ण अधिकार सम्पादक के पास सुरक्षित है।
8. व्यक्तिगत तथा विवादास्पद लेख पत्रिका में प्रकाशित नहीं किए जाएंगे।
9. लेखन सामग्री भेजने वाले स्वयं उसके लिए उत्तरदायी होंगे।
10. नमूने का अंक उपलब्ध होने पर ही भेजा जा सकता है।

स्वामित्व एवं सर्वाधिकार सुरक्षित

पंजीकृत सं. एस.-27/1919

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा

प्रधान कार्यालय

440, हवेली हैदरकुली, चांदनी चौक, दिल्ली-110006

दूरभाष:- 011-45516719 , 9990070023

Website: www.abjbmahasabha.com

E-mail: jangid.mahasabha@gmail.com

सम्पर्क सूत्र

प्रधान-पं.रामपाल शर्मा ''जांगिड''	-	09844026161
महामंत्री-पं.सांवरमल ''जांगिड''	-	09414003411
सम्पादक-पं.रामभगत शर्मा ''जांगिड''	-	09814681741
सह सम्पादक-पं.प्रहलाद राय शर्मा ''जांगिड''	-	08140229679

'जांगिड ब्राह्मण' महासभा की सदस्यता दर

(01-10-2018 से)

सदस्यता	रुपये
प्लैटिनम सदस्य	1,00,000/-
स्वर्ण सदस्य	51,000/-
रजत सदस्य	25,000/-
विशेष सम्पोषक	21,000/-
सम्पोषक सदस्य	11,000/-
संरक्षक (पत्रिका सहित)	2,100/-
संरक्षक (पत्रिका रहित)	500/-
वार्षिक पत्रिका शुल्क	240/-
मासिक पत्रिका शुल्क	20/-

विज्ञापन शुल्क की दरें

टाईटल का अंतिम पृष्ठ (रंगीन)
मासिक 10000/-,वार्षिक 100000/-

अन्दर का पूरा पृष्ठ (रंगीन)
मासिक 6000/-,वार्षिक 61000/-

अन्दर का आधा पृष्ठ (रंगीन)
मासिक 4000/-, वार्षिक 41000/-

अन्दर का पूरा पृष्ठ (साधारण)
मासिक 3000/-, वार्षिक 31000/-

अन्दर का आधा पृष्ठ (साधारण)
मासिक 1500/-, वार्षिक 17000/-

अन्दर का चौथाई पृष्ठ (साधारण)
मासिक 750/-,वार्षिक 8500/-

वैवाहिक विज्ञापन
मासिक 201/-

UPI ID: akhilbhartiyajangidbrahminmahasabha@sbi



महासभा बैंक खाता

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा के स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया खाता नं. **61012926182, (IFSC Code: SBIN0006814)** में किसी भी स्थान से बैंक (शाखा-एसबीआई, मुण्डका, नई दिल्ली-41) में 49000/- रू. प्रतिदिन नकद जमा करवाए जा सकते हैं। जमाकर्ताओं से अनुरोध है कि नकद जमापर्ची / चेक /Neft जमापर्ची पर पाने वाले का नाम **"अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा"** अवश्य लिखें तथा जमा राशि का सम्पूर्ण विवरण महासभा को आवश्यक रूप से प्रेषित करें। महासभा को दिया गया दान आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80-G के तहत छूट के लिए मान्य है। दानदाता अपनी आयकर विवरणी दान पर आयकर छूट के लिए दावा कर सकते है।

अरूण कुमार (अनिल जांगिड)
कोषाध्यक्ष महासभा, मो. 9810988553

॥ ओ३म् भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

अनुक्रमणिका

07. संपादकीय...
09. प्रधान की कलम से...
11. इंदौर में आयोजित संविधान संशोधन कमेटी.. मिनट्स..
13. बैंगलुरू बैठक मे उद्योगपति सुखदेव जांगिड का आह्वान..
14. स्वतंत्रता दिवस पर महासभा भवन, मुंडका में ध्वजारोहण
15. डॉ. तुलसी राम शर्मा की तस्वीर का कनाडा में अनावरण.
17. राजस्थान प्रदेश सभा द्वारा आयोजित प्रेरणा और प्रयास..
19. ऋषि पंचमी: ऋषि परंपरा, ज्ञान और आत्मशुद्धि का पर्व.
21. अंगिरा ऋषि जयंती:वैदिक ज्ञान, तप और मानव कल्याण
22. संगठन से समाजोत्थान की ओर-..
24. महासभा की विनम्र अपील..जनगणना में मुख्य जाति...
25. डायरी का सच.....
27. इस जीवन में धन और वाणी का संतुलन ही जीवन की...
28. गुरुदेव पं जयकृष्ण मणिठिया को जन्म दिवस की बधाई..
30. हमारा समाज....
31. भगवान श्रीकृष्ण द्वारा दिया गया निष्काम कर्मयोग का...
33. घर के मन्दिर में पूजा अर्चना करने से भी, वही फल प्राप्त..
34. भगवान विश्वकर्मा पूजा दिवस का धार्मिक, वैज्ञानिक.....
36. गोस्वामी सन्त तुलसी दास ने मानवता को अमरता का...
37. 6 सितंबर को खातीवास में,आयोजित जांगिड सम्मेलन..
39. "सिस्टर ऑफ सोल्जर्स" पार्वती जांगिड, रक्षा सूत्र ....
40. मानव सुथार ने रचा इतिहास...
41. हरियाणा,राज्यपाल ने शीशपाल जांगिड को राज्यशिक्षक
42. मातादीन जांगिड बने शास्त्री नगर, शाखा दिल्ली अध्यक्ष.
43. राज्य शिक्षक पुरस्कार बलजीत जांगिड को राज्यपाल...
44. राजेश कुमार 'सरल' को उज्जैन में, काव्य रत्न सम्मान...
45. डॉ.अनुपमा जांगिड, आयुर्वेद चिकित्सा अधिकारी के पद
46. हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं राज नगर निगम, नगर परिषद एवं नगरपालिकाओं के चुनाव में जांगिड समाज
47. ब्रह्मर्षि अंगिरा जयंती समारोह-जवाहर कालोनी..
48. सोरायसिस रोग कारण, लक्षण, बचाव और उपचार.
50. प्लैटिनम सदस्य.. 52. स्वर्ण, रजत सदस्य..
53. वर्तमान प्रधान के कार्यकाल में बने प्लैटिनम सदस्य..
58. वैवाहिक विज्ञापन.,
59. विश्वकर्मा एजुकेशन ट्रस्ट --- छात्रवृति वितरण समारोह..
60. शोक संदेश , 61 शोक संदेश

प्रचार सामग्री (विज्ञापन)

शुभ लाभ ग्रुप
धरम सुजुकी
कृष्णा इंटीरियर
भारत व्हील
शर्मा एंड कंपनी
भागीरथ मोटर्स

न्यायिक क्षेत्र

सभी न्यायिक मामलों में महासभा के किसी भी पदाधिकारी के विरूद्ध महासभा सम्बन्धी मामले में कानूनी कार्यवाही के लिये न्यायिक क्षेत्र दिल्ली ही होगा।

विनम्र निवेदन

(1) 'जांगिड ब्राह्मण' पत्रिका हर माह की 22 से 27 तिथि तक नियमित रूप से भेज दी जाती है, जो आपको 3-7 दिन में मिल जानी चाहिए।

(2) जिन आदरणीय सदस्यों को पत्रिका नहीं मिल पा रही है वे कृपया अपने सम्बन्धित डाक घर में लिखित शिकायत करें और इसकी एक प्रति महासभा कार्यालय में भी भेजें ताकि महासभा कार्यालय भी अपने स्तर पर मुख्य डाकपाल अधिकारी को यह शिकायत आप की फोटो प्रतियों के साथ भेज सके।

हमारे पास बहुत सारी पत्रिकाएं डाक कर्मचारी की इस टिप्पणी के साथ वापिस आ रही है, कि 'पते में पिता का नाम नहीं', 'इस पते पर नहीं रहता', 'पता अधूरा है', 'पिन कोड' बिना भी पत्रिका वापिस आ रही है। यदि आपके पते में उपरोक्त अशुद्धियाँ है तो लिखित रूप में महासभा कार्यालय में भेजें ताकि शुद्ध किया जा सके। हम आपको विश्वास दिलाते है कि प्रत्येक सदस्य को कार्यालय से प्रतिमाह 22 से 27 तिथि को पत्रिकाएं भेज दी जाती है।

(3) समाज के प्रबुद्ध लेखकों, विद्वत्वानों से निवेदन है कि रचनाओं की छाया प्रति न भेजें, वास्तविक प्रति ही सुस्पष्ट, सुन्दर लेख में लिखकर या टाइप कराकर भेजें। वैवाहिक विज्ञापन एवं इसका शुल्क, अन्य लेख व प्रकाशन सम्बन्धी सभी प्रकार की सामग्री हर माह की 10 तारीख तक महासभा कार्यालय में अवश्य पहुंच जानी चाहिए।

कृपया ध्यान दें! बार बार निवेदन करने पर भी लेखक अपनी रचनाएँ अस्पष्ट हस्तलिखित तथा छोटे से कागज पर भेज रहे है। जिससे हमेशा पढ़ने में असुविधा हो रही है। ऐसे लेख प्रकाशित नहीं हो पाएंगे।

(4) आपसे यह भी निवेदन है कि प्रत्येक रचना के अंत में यह घोषणा अवश्य करें कि यह रचना मेरी मौलिक रचना है और अभी तक कहीं प्रकाशित या प्रसारित नहीं हुई है। यदि किसी अन्य स्रोत से ली गई है - तो उसका संदर्भ अवश्य दे तथा लेख के अन्त में अपना नाम, पता, फोन नम्बर हस्ताक्षर सहित अवश्य लिखें।

(5) पत्रिका के विषय में प्रबुद्ध लेखकों के सुझाव सादर आमंत्रित है।

(6) अस्वीकरण-पत्रिका में प्रकाशित लेखों में लेखकों के व्यक्तिगत विचार होते हैं। महासभा का उनसे सहमत होना आवश्यक नही है।

- सम्पादक

इस पत्रिका में अभिव्यक्त विचारों से सम्पादक अथवा महासभा का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। इसमें प्रकाशित सभी रचनाओं में अभिव्यक्त विचारों, तथ्यों आदि की शुद्धता तथा मौलिकता का पूर्ण दायित्व स्वयं लेखकों का है।

सम्पादकीय-------

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी : इतिहास, सनातन संस्कृति और कर्मयोग का शाश्वत संदेश

भारतीय सनातन संस्कृति पर्वों और उत्सवों की ऐसी महान परंपरा है, जिनमें केवल धार्मिक आस्था ही नहीं, बल्कि जीवन-दर्शन, सामाजिक चेतना और मानव कल्याण का संदेश भी निहित है। इन्हीं महान पर्वों में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का विशेष स्थान है। यह पर्व भगवान श्रीकृष्ण के जन्मोत्सव के रूप में मनाया जाता है, लेकिन इसका वास्तविक महत्व केवल उत्सव, व्रत और पूजा तक सीमित नहीं है। श्रीकृष्ण का जीवन संघर्ष, नीति, धर्म, कर्तव्य, प्रेम, करुणा, साहस, बुद्धि और कर्मयोग का अद्भुत समन्वय प्रस्तुत करता है।



प्रहलादराय जांगिड - सहसंपादक

जन्माष्टमी हमें उस महान व्यक्तित्व का स्मरण कराती है जिसने अत्याचार और अधर्म के वातावरण में जन्म लेकर धर्म और न्याय की स्थापना के लिए अपना संपूर्ण जीवन समर्पित किया। श्रीकृष्ण का संदेश किसी एक काल, समाज या वर्ग के लिए नहीं था। भगवद्गीता में दिया गया उनका ज्ञान आज भी मनुष्य को अपने कर्तव्य, नैतिकता और जीवन के उद्देश्य को समझने की प्रेरणा देता है। श्रीकृष्ण का जीवन महाभारत के घटनाक्रम से गहराई से जुड़ा हुआ है। महाभारत भारतीय परंपरा का एक अत्यंत महत्वपूर्ण महाकाव्य है, जिसमें तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक, पारिवारिक और नैतिक संघर्षों का व्यापक चित्रण मिलता है। परंपरा के अनुसार श्रीकृष्ण का जन्म मथुरा में देवकी और वसुदेव के पुत्र के रूप में हुआ। उस समय मथुरा पर कंस का अत्याचार था। कंस ने सत्ता और भय के बल पर शासन स्थापित कर रखा था। देवकी के आठवें पुत्र से अपने विनाश की भविष्यवाणी सुनकर उसने देवकी और वसुदेव को कारागार में बंद कर दिया। इसी कारागार में भाद्रपद कृष्ण पक्ष की अष्टमी की मध्यरात्रि श्रीकृष्ण का जन्म हुआ। धार्मिक परंपरा के अनुसार वसुदेव उन्हें यमुना पार करके गोकुल ले गए, जहां उनका पालन-पोषण नंद और यशोदा के स्नेह में हुआ।

श्रीकृष्ण का बाल्यकाल गोकुल और वृंदावन की लोक-संस्कृति से जुड़ा रहा। उनकी बाल लीलाओं में आनंद, प्रेम, मित्रता और सामुदायिक जीवन का संदेश दिखाई देता है। आगे चलकर उन्होंने कंस के अत्याचार का अंत किया और मथुरा की जनता को भय से मुक्ति दिलाई। महाभारत के राजनीतिक और नैतिक संघर्ष में श्रीकृष्ण की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। वे स्वयं हस्तिनापुर के सिंहासन के दावेदार नहीं बने, बल्कि धर्म की स्थापना के लिए उचित पक्ष का मार्गदर्शन करते रहे। कौरवों और पांडवों के बीच संघर्ष बढ़ने पर श्रीकृष्ण ने युद्ध रोकने के लिए शांति का प्रयास भी किया। वे पांडवों की ओर से शांति-दूत बनकर हस्तिनापुर गए और न्यायपूर्ण समाधान का प्रयास किया। इससे स्पष्ट होता है कि श्रीकृष्ण के लिए युद्ध प्रथम विकल्प नहीं था; धर्म और न्याय की रक्षा के लिए आवश्यक होने पर ही संघर्ष स्वीकार्य था।

जब युद्ध टालना संभव नहीं रहा, तब श्रीकृष्ण ने अर्जुन के सारथी की भूमिका स्वीकार की। कुरुक्षेत्र के युद्धक्षेत्र में अर्जुन अपने संबंधियों, गुरुओं और प्रियजनों को सामने देखकर मोह और विषाद से भर गए। उन्हें अपने कर्तव्य के विषय में भ्रम होने लगा। यहीं से प्रारंभ होता है श्रीमद्भगवद्गीता का अमर संवाद। श्रीकृष्ण ने अर्जुन को केवल युद्ध करने के लिए प्रेरित नहीं किया। उन्होंने उसे कर्तव्य, आत्मज्ञान, कर्म, विवेक, योग और धर्म का व्यापक दर्शन समझाया। गीता का एक प्रसिद्ध संदेश है—**"कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।"** अर्थात मनुष्य का अधिकार कर्म करने में है, उसके फल पर नहीं। इसका अर्थ यह नहीं कि मनुष्य परिणाम की चिंता बिल्कुल न करे। इसका व्यापक भाव यह है कि व्यक्ति को अपने उचित कर्तव्य और प्रयास पर ध्यान देना चाहिए तथा फल की अत्यधिक चिंता से अपने कर्म और विवेक को कमजोर नहीं करना चाहिए।

श्रीकृष्ण के दर्शन में धर्म का अर्थ केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं है। धर्म का एक महत्वपूर्ण पक्ष है—सत्य, न्याय, कर्तव्य और लोककल्याण के अनुरूप आचरण। जब व्यक्ति अपने स्वार्थ से ऊपर उठकर अपने कर्तव्य को समझता है, तब उसका जीवन अधिक सार्थक बनता है। वर्तमान समाज में भी यही आवश्यकता है। यदि प्रत्येक व्यक्ति अपने अधिकारों के साथ अपने कर्तव्यों को भी समझे, तो परिवार, समाज और राष्ट्र अधिक मजबूत बन सकते हैं।

श्रीकृष्ण का व्यक्तित्व केवल महाभारत और कुरुक्षेत्र तक सीमित नहीं है। उनका बाल स्वरूप भारतीय लोकजीवन में आनंद और प्रेम का प्रतीक है। वृंदावन की परंपराओं में कृष्ण और राधा के माध्यम से भक्ति, प्रेम और आत्मिक समर्पण की भावना व्यक्त होती

है। उनकी मित्रता, विशेषकर सुदामा के साथ संबंध, यह संदेश देती है कि सच्चे संबंध धन और पद से नहीं बल्कि विश्वास और आत्मीयता से बनते हैं। श्रीकृष्ण का जीवन यह भी बताता है कि व्यक्ति को परिस्थितियों के अनुसार बुद्धि, धैर्य और व्यवहार-कौशल का प्रयोग करना चाहिए। वे केवल एक योद्धा या राजा नहीं थे; वे एक कुशल रणनीतिकार, कूटनीतिज्ञ, मार्गदर्शक और समाज-संगठक भी थे। सनातन संस्कृति में जन्माष्टमी केवल भगवान के जन्म की स्मृति नहीं है, बल्कि यह धर्म की पुनर्स्थापना और आशा की विजय का पर्व है। श्रीकृष्ण स्वयं गीता में कहते हैं—**"यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत..."** अर्थात जब-जब धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती है, तब धर्म की स्थापना के लिए दिव्य शक्ति का प्राकट्य होता है। इस विचार का संदेश यह है कि समाज में जब अन्याय, हिंसा, अहंकार और असत्य बढ़ने लगे, तब सज्जन शक्तियों को निष्क्रिय नहीं रहना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति को अपनी क्षमता के अनुसार सत्य और न्याय के पक्ष में खड़ा होना चाहिए।

आज भारत की सबसे बड़ी शक्ति उसका युवा वर्ग है। युवाओं के सामने शिक्षा, रोजगार, प्रतियोगिता और तकनीकी बदलाव की अनेक चुनौतियां हैं। श्रीकृष्ण का जीवन युवाओं को तीन महत्वपूर्ण बातें सिखाता है—साहस, विवेक और कर्म। परिस्थितियां चाहे कितनी भी कठिन क्यों न हों, व्यक्ति को निराश होकर बैठना नहीं चाहिए। उसे अपनी क्षमता पहचानकर निरंतर प्रयास करना चाहिए। गीता का कर्मयोग युवाओं को यह सिखाता है कि सफलता का मार्ग केवल इच्छा से नहीं, बल्कि अनुशासन, परिश्रम, ज्ञान और सही दिशा में कर्म से बनता है।

श्रीकृष्ण के उपदेशों को जीवन में कैसे उतारें? - जन्माष्टमी का सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न यही है कि हम श्रीकृष्ण की शिक्षाओं को केवल सुनें या उन्हें अपने व्यवहार का हिस्सा भी बनाएं। सबसे पहले हमें कर्तव्यनिष्ठा अपनानी चाहिए। अपने कार्य को ईमानदारी से करना ही कर्मयोग की पहली सीढ़ी है। दूसरा, हमें विवेकपूर्ण निर्णय लेना सीखना चाहिए। हर परिस्थिति में भावनाओं के आधार पर निर्णय लेना उचित नहीं होता। श्रीकृष्ण अर्जुन को ज्ञान और विवेक के आधार पर निर्णय लेने के लिए प्रेरित करते हैं। तीसरा, हमें अहंकार से बचना चाहिए। ज्ञान, धन, पद या शक्ति का अहंकार व्यक्ति को वास्तविकता से दूर कर सकता है। चौथा, हमें सत्य और न्याय के पक्ष में खड़े होने का साहस रखना चाहिए। पांचवां, हमें फल की चिंता में वर्तमान कर्म को कमजोर नहीं करना चाहिए। लक्ष्य निर्धारित करना आवश्यक है, लेकिन निरंतर चिंता और भय व्यक्ति की कार्यक्षमता को कम कर सकते हैं। छठा, हमें समत्व का भाव विकसित करना चाहिए। सफलता में अत्यधिक अहंकार और असफलता में अत्यधिक निराशा—दोनों से बचकर संतुलित जीवन जीना गीता की महत्वपूर्ण प्रेरणा है।

आज जन्माष्टमी पर मंदिरों में सजावट होती है, झांकियां निकाली जाती हैं, भजन-कीर्तन होते हैं और आधी रात को श्रीकृष्ण जन्मोत्सव मनाया जाता है। यह हमारी समृद्ध सांस्कृतिक परंपरा का सुंदर हिस्सा है। लेकिन इसके साथ यदि हम श्रीकृष्ण के जीवन और गीता के संदेश पर कुछ समय आत्मचिंतन करें, तो पर्व की सार्थकता और बढ़ जाती है। श्रीकृष्ण का जीवन हमें यह भी सिखाता है कि व्यक्तिगत हित से ऊपर उठकर समाज और राष्ट्र के व्यापक हित के बारे में सोचना चाहिए। आज भारत विकसित राष्ट्र बनने की दिशा में आगे बढ़ रहा है। इसके लिए केवल सरकारों के प्रयास पर्याप्त नहीं हैं। प्रत्येक नागरिक को अपने क्षेत्र में ईमानदारी, अनुशासन, परिश्रम और जिम्मेदारी के साथ योगदान देना होगा। कर्मयोग की यही भावना राष्ट्र निर्माण की शक्ति बन सकती है।

महाभारत के कठिन समय में श्रीकृष्ण ने अर्जुन को जो मार्गदर्शन दिया, वह आज भी मनुष्य के जीवन की अनेक उलझनों में दिशा प्रदान कर सकता है। उन्होंने हमें सिखाया कि कठिन परिस्थितियों से भागना समाधान नहीं है; ज्ञान, विवेक और कर्तव्य के साथ उनका सामना करना चाहिए। आज जन्माष्टमी के अवसर पर आवश्यकता है कि हम श्रीकृष्ण को केवल मंदिरों और झांकियों तक सीमित न रखें, बल्कि उनके विचारों को अपने आचरण में उतारें।

हम अपने कर्म के प्रति ईमानदार बनें, सत्य और न्याय का साथ दें, परिवार और समाज में प्रेम बढ़ाएं, अहंकार से बचें, कठिन परिस्थितियों में धैर्य रखें और राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्यों को समझें। श्रीकृष्ण का जीवन हमें यही प्रेरणा देता है कि धर्म केवल कहने की वस्तु नहीं, बल्कि जीवन में उतारने की जिम्मेदारी है; कर्म केवल जीविका नहीं, बल्कि समाज और राष्ट्र के प्रति योगदान भी है।

इस जन्माष्टमी पर हमारा संकल्प हो— **ज्ञान को जीवन में उतारेंगे, कर्म को पूजा मानेंगे, सत्य और न्याय का साथ देंगे, प्रेम और सद्भाव बढ़ाएंगे, और अपने श्रेष्ठ कर्मों से परिवार, समाज तथा राष्ट्र को मजबूत बनाने में योगदान देंगे।**

यही श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का वास्तविक संदेश है और यही सनातन संस्कृति की शाश्वत शक्ति है।

जय श्रीकृष्ण!

प्रधान की कलम से.....

प्रिय समाजबंधुओं, मातृशक्ति, युवाओं एवं सम्मानित वरिष्ठजनों, सादर प्रणाम।



प्रधान,रामपाल शर्मा

श्रावण और भाद्रपद माह (सितंबर) भारतीय संस्कृति, अध्यात्म, ज्ञान, विज्ञान और सामाजिक चेतना की दृष्टि से विशेष महत्व रखता है। यह माह हमें अनेक धार्मिक पर्वों, व्रतों, ऋषि परंपरा और राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय दिवसों के माध्यम से जीवन के विभिन्न मूल्यों का संदेश देता है। जन्माष्टमी, गणेश चतुर्थी, ऋषि पंचमी, विश्वकर्मा पूजा, राधाष्टमी, अनंत चतुर्दशी और पितृपक्ष जैसे अवसर हमारी सनातन संस्कृति की समृद्ध परंपरा का परिचय कराते हैं।

इन पर्वों का उद्देश्य केवल पूजा-पाठ और धार्मिक अनुष्ठान तक सीमित नहीं है। प्रत्येक पर्व के पीछे जीवन को बेहतर बनाने, समाज को संगठित करने और मानव कल्याण की प्रेरणा निहित है। आवश्यकता है कि हम इन पर्वों की मूल भावना को समझें और अपने सामाजिक जीवन में उतारें।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का संदेश : भगवान श्रीकृष्ण का जीवन हमें धर्म की रक्षा, अन्याय के विरोध, कर्मयोग और विपरीत परिस्थितियों में भी विवेक बनाए रखने की प्रेरणा देता है। श्रीकृष्ण ने कर्म को प्रधानता देते हुए मनुष्य को अपने कर्तव्य का पालन करने का संदेश दिया। आज समाज के प्रत्येक व्यक्ति को अपने कर्तव्यों के प्रति जागरूक होना आवश्यक है।

गणेश चतुर्थी और ऋषि पंचमी: गणेश चतुर्थी बुद्धि, विवेक और शुभारंभ का पर्व है। भगवान गणेश हमें यह संदेश देते हैं कि किसी भी कार्य की सफलता के लिए ज्ञान और विवेक आवश्यक हैं। **ऋषि पंचमी हमारी महान ऋषि परंपरा के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का अवसर है।** महर्षियों ने अपने तप, ज्ञान और अनुसंधान से भारतीय सभ्यता को समृद्ध बनाया। यह पर्व हमें आत्मसंयम, शुद्ध आचरण और ज्ञान के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है।

भगवान विश्वकर्मा पूजा : जांगिड समाज का गौरव दिवस - सितंबर माह का सबसे महत्वपूर्ण अवसर हमारे जांगिड ब्राह्मण समाज के लिए भगवान विश्वकर्मा पूजा है। भगवान विश्वकर्मा को भारतीय परंपरा में दिव्य शिल्पकार और निर्माण-कला के अधिष्ठाता के रूप में सम्मान प्राप्त है। हमारे समाज की पहचान सदियों से शिल्प, वास्तु, निर्माण, तकनीकी कौशल और सृजनशीलता से जुड़ी रही है। विश्वकर्मा पूजा हमारे लिए केवल औजारों और मशीनों की पूजा का दिन नहीं, बल्कि कौशल, श्रम, तकनीक और आत्मनिर्भरता के सम्मान का दिवस होना चाहिए।

आज समय बदल रहा है। नई तकनीक, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, आधुनिक इंजीनियरिंग और डिजिटल युग में हमारे युवाओं के सामने अनेक नए अवसर हैं। हमें अपने बच्चों को केवल परंपरागत व्यवसायों तक सीमित नहीं रखना चाहिए। उन्हें इंजीनियरिंग, वास्तुकला, विज्ञान, तकनीक, उद्योग, प्रशासन, चिकित्सा और उद्यमिता सहित प्रत्येक क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। हमारा मंत्र होना चाहिए—

"परंपरा हमारी पहचान है, शिक्षा हमारी शक्ति है और कौशल हमारा भविष्य है।"

भगवान विश्वकर्मा की पूजा के अवसर पर हमें समाज के कारीगरों, श्रमिकों, इंजीनियरों और तकनीकी विशेषज्ञों का सम्मान भी करना चाहिए। श्रम का सम्मान ही राष्ट्र निर्माण की आधारशिला है।

महर्षि आंगिरा : ज्ञान और तप की प्रेरणा - हमारी महान वैदिक ऋषि परंपरा में महर्षि अंगिरा का विशिष्ट स्थान है। अंगिरस परंपरा का वैदिक साहित्य में महत्वपूर्ण उल्लेख मिलता है। महर्षि अंगिरा ज्ञान, तप, साधना और आध्यात्मिक चिंतन के प्रतीक माने जाते हैं।

आज जब युवा पीढ़ी आधुनिक शिक्षा और तकनीक की ओर बढ़ रही है, तब हमें उन्हें अपनी ऋषि परंपरा के मूल्यों से भी जोड़ना चाहिए। ज्ञान तभी सार्थक है, जब उसके साथ चरित्र, अनुशासन और समाज सेवा की भावना हो। अंगिरा ऋषि की परंपरा हमें संदेश देती है कि किसी भी समाज की वास्तविक शक्ति उसकी शिक्षित और संस्कारित पीढ़ी होती है। इसलिए जांगिड समाज के प्रत्येक परिवार को शिक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देनी चाहिए। आर्थिक रूप से कमजोर

विद्यार्थियों की सहायता, प्रतिभावान बच्चों को प्रोत्साहन और प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए मार्गदर्शन जैसे कार्यों को सामाजिक अभियान का रूप देना चाहिए।

राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय दिवसों की प्रेरणा: सितंबर माह में शिक्षक दिवस हमें गुरुजनों के सम्मान का संदेश देता है। अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस शिक्षा के महत्व को रेखांकित करता है। हिंदी दिवस हमें अपनी भाषा और सांस्कृतिक पहचान के प्रति गौरव की भावना प्रदान करता है। अभियंता दिवस आधुनिक भारत के निर्माण में तकनीकी विशेषज्ञों के योगदान का स्मरण कराता है। यह अवसर भगवान विश्वकर्मा की शिल्प परंपरा और आधुनिक विज्ञान के बीच संबंध को समझने का भी अवसर है। विश्व ओजोन दिवस हमें पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक करता है। अंतरराष्ट्रीय शांति दिवस हमें आपसी प्रेम, भाईचारे और सद्भाव का संदेश देता है। विश्व पर्यटन दिवस भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, ऐतिहासिक स्थलों और विविधता को समझने तथा संरक्षित करने की प्रेरणा देता है।

इन सभी दिवसों का एक साझा संदेश है—जागरूक नागरिक ही मजबूत राष्ट्र का निर्माण करते हैं।

पितृपक्ष- पूर्वजों के प्रति श्रद्धा - सितंबर के अंतिम दिनों में पितृपक्ष का आरंभ होता है। यह समय हमें अपने पूर्वजों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने और उनकी परंपराओं एवं संस्कारों को आगे बढ़ाने की प्रेरणा देता है।

पूर्वजों के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि केवल धार्मिक कर्मकांड नहीं, बल्कि उनके अच्छे संस्कारों, ईमानदारी, परिश्रम और सामाजिक मूल्यों को अपने जीवन में अपनाना भी है।

जांगिड समाज के उत्थान का संकल्प: प्रिय समाजबंधुओं, आज हमें अपने समाज की प्रगति के लिए कुछ स्पष्ट लक्ष्य निर्धारित करने होंगे। शिक्षा, संगठन, रोजगार, महिला सशक्तीकरण, युवा नेतृत्व, सामाजिक समरसता और आर्थिक आत्मनिर्भरता हमारे प्रमुख विषय होने चाहिए।

हमारा **"मिशन 1.50 लाख सदस्यता अभियान"** केवल सदस्य संख्या बढ़ाने का अभियान नहीं है। यह समाज के प्रत्येक परिवार को संगठन से जोड़ने और हमारी सामूहिक शक्ति को मजबूत करने का प्रयास है। हमें समाज में यह भावना विकसित करनी होगी कि- **"मैं नहीं, हम"** यही भावना संगठन को मजबूत करेगी।

विश्वकर्मा पूजा पर कौशल और आत्मनिर्भरता का संकल्प लें। ऋषि पंचमी और आंगिरा ऋषि की परंपरा से ज्ञान और संस्कार ग्रहण करें। शिक्षक दिवस से शिक्षा का सम्मान, हिंदी दिवस से भाषा का गौरव और पितृपक्ष से पूर्वजों के प्रति कृतज्ञता सीखें।

राजस्थान में हाल ही में सम्पन्न हुए निकाय चुनावों में हमारे समाज के जिन प्रत्याशियों ने विजय प्राप्त की है, उन्हें मेरी ओर से ढेरों बधाई एवं हार्दिक शुभकामनाएँ। मैं उनके उज्ज्वल कार्यकाल तथा जनसेवा के लिए मंगलकामना करता हूँ। साथ ही, जिन समाजबंधुओं ने चुनाव लड़ा और विजयश्री प्राप्त नहीं कर पाए, वे भी बधाई एवं सम्मान के पात्र हैं। उन्होंने समाज का नाम आगे बढ़ाने के उद्देश्य से राजनीति और सार्वजनिक जीवन में आने का साहस किया तथा अपने परिश्रम, लगन और समर्पण के साथ चुनाव लड़ा। चुनाव में विजय और पराजय लोकतांत्रिक प्रक्रिया का एक हिस्सा है, लेकिन समाज के हित में आगे बढ़कर प्रयास करना स्वयं में महत्वपूर्ण है। अतः मैं समाज के समस्त प्रत्याशियों को महासभा की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ एवं बधाई प्रेषित करता हूँ। आशा है कि आप सभी सामाजिक एकता, सद्भाव और समाजहित की भावना को और मजबूत करते हुए अपने-अपने क्षेत्र में सकारात्मक योगदान देंगे।आइए, विश्वकर्मा पूजा दिवस के इस पावन अवसर पर हम संकल्प लें कि ज्ञान, कौशल, शिक्षा, परिश्रम और एकता के माध्यम से अपने समाज तथा राष्ट्र की प्रगति में निरंतर योगदान देंगे।श्रम ही सम्मान है, कौशल ही पहचान है और आत्मनिर्भर भारत ही हमारा लक्ष्य है।

हमारा संकल्प हो- **शिक्षित समाज, संगठित समाज, संस्कारित समाज और आत्मनिर्भर समाज।**

भगवान विश्वकर्मा हमें कौशल और सृजन की शक्ति दें, महर्षि आंगिरा हमें ज्ञान और तप का मार्ग दिखाएँ और हमारी महासभा समाज के प्रत्येक परिवार को साथ लेकर निरंतर प्रगति की ओर बढ़ती रहे।

।।जय भगवान विश्वकर्मा।। ।।जय ऋषि परंपरा।। ।।जय जांगिड समाज।। ।।जय संगठन।।

****

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा, दिल्ली

रानी खेड़ा रोड़, मुंडका मेट्रो स्टेशन के पास,
मुंडका, नई दिल्ली – 110041
दूरभाष : 9990070023
पंजीकरण संख्या एस. – 27 / 1919


अंगिराऽसि जांगिड

Website: www.abjbmahasabha.com, E-mail: Jangid.mahasabha@gmail.com

रामपाल शर्मा	सांवरमल जांगिड	अरुण कुमार जांगिड
प्रधान	महामंत्री	कोषाध्यक्ष
9844026161	9414003411	9810988553

क्रमांक :- अ.भा.जां.ब्रा.म.-3059/2026 **दिनांक 11/09/2026**

*** इंदौर में आयोजित संविधान संशोधन कमेटी मीटिंग के मिनट्स ***

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा दिल्ली के पत्रांक - **अ.भा.जां.ब्रा.म.-2993/2026 दिनांक 18/06/2026** के तहत गठित संविधान संशोधन कमेटी कि प्रथम मीटिंग प्रदेश सभा मध्यप्रदेश के सौजन्य से **दिनांक 08 सितम्बर, 2026** मंगलवार को **सायंकाल 5 बजे से होटल इनफिनिटी, बॉम्बे हॉस्पिटल के पास, विजय नगर, इंदौर** में महासभा प्रधान रामपाल शर्मा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। उक्त मीटिंग में महासभा द्वारा गठित कमेटी के निम्न पदाधिकारी गण उपस्थित हुए :-

1.	श्रीमान रामपाल शर्मा	बेंगलुरु	प्रधान – महासभा
2.	श्री श्रीगोपाल चोयल	अजमेर	अध्यक्ष - मुख्य सलाहकार
3.	श्री प्रवीण शर्मा	नीमच	सदस्य - मुख्य चुनाव अधिकारी
4.	श्री सुरेन्द्र कुमार शर्मा	अहमदाबाद	सदस्य - सदस्य उच्च स्तरीय कमेटी
5.	श्री प्रभुदयाल जांगिड	इंदौर	सदस्य - प्रदेश अध्यक्ष मध्यप्रदेश
6.	श्री बसंत कुमार जांगिड	ब्यावर	सदस्य - मुख्य चुनाव प्रभारी राजस्थान
7.	श्री मोहन लाल दायमा	नासिक	सदस्य - पूर्व महामंत्री एवं कोर कमेटी सदस्य
8.	श्री सुरेन्द्र कुमार वत्स	दिल्ली	सदस्य - क़ानूनी सलाहकार
9.	श्री बाबूलाल शर्मा	अहमदाबाद	महासभा कोर कमेटी सदस्य
10.	श्री प्रदीप शर्मा	इंदौर	महासभा कोर कमेटी सदस्य
11.	श्री सांवर मल जांगिड	सीकर	समन्वयक (महामंत्री - महासभा)

सर्वप्रथम महासभा महामंत्री सांवरमल जांगिड द्वारा संविधान संशोधन कमेटी मीटिंग मे उपस्थित समस्त कमेटी सदस्यों एवं महासभा पदाधिकारियों का गर्म जोशी के साथ हार्दिक स्वागत एवं अभिनंदन किया गया। तथा उपस्थित समस्त पदाधिकारियों का परिचय करवाने के तत्पश्चात महासभा महामंत्री ने महासभा प्रधान श्री रामपाल शर्मा के निर्देशानुसार में मीटिंग ने उपस्थित समस्त सदस्यों को निम्नलिखित दस्तावेज वितरित किये :-

1. महासभा द्वारा जारी संविधान संशोधन कमेटी गठन का पत्र ।
2. महासभा संविधान दिनांक 27 जनवरी 2013 कि मूल प्रति।
3. महासभा कार्यकारिणी मीटिंगों में 2012 से 2026 तक संविधान में संशोधन हेतु पारित निर्णयों कि प्रतियाँ।
4. महासभा सदस्यों से सुझाव प्राप्त करने के लिए जारी दोनों पत्रों कि प्रतियां।
5. महासभा सदस्यों से प्राप्त सुझावों कि प्रतियां।
6. महासभा के वर्तमान संविधान एवं पारित निर्णयों एवं प्राप्त सुझावों का तुलनात्मक विवरण पत्र।

कमेटी सदस्यों को उक्त दस्तावेज सुपुर्द करने के पश्चात महामंत्री ने मीटिंग की विधिवत शुआत करने एवं महासभा कार्यकारिनियों कि मीटिंगों में पारित निर्णयों पर चर्चा करके निर्णय लेने हेतु कमेटी अध्यक्ष श्री श्रीगोपाल चोयल अजमेर के आदेशानुसार मीटिंग संचालन करने हेतु महासभा के मुख्य चुनाव अधिकारी श्री प्रवीण कुमार शर्मा को निर्देशित किया गया।

महासभा के मुख्य चुनाव अधिकारी एवं कमेटी के सदस्य श्री प्रवीण शर्मा ने सर्व प्रथम मीटिंग में उपस्थित महासभा प्रधान एवं समस्त सदस्यों का अभिवादन करने के उपरांत महासभा की राष्ट्रिय कार्यकारिणी की विभिन्न मीटिंगों में पारित निर्णयों पर एक एक करके विस्तृत विचार विमर्श करने के पश्चात सर्व सम्मत्ति बनाकर संविधान के तुलनात्मक विवरण में स्पष्ट एवं सरल भाषा में लिखकर चिन्हित करवाए गये। मुख्य चुनाव अधिकारी ने वर्तमान संविधान एवं प्रस्तावित संविधान के मुख्य बिंदुओं को कमेटी के सदस्यों के समक्ष विस्तार से रखा।

कमेटी के सदस्य श्री बसंत कुमार जांगिड ने समाज के भविष्य, कार्यप्रणाली और कानूनी आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए कई महत्वपूर्ण एवं लिखित सुझाव दिए। श्री सुरेंद्र वत्स ने महासमिति की मीटिंग में कोरम को वैध बनाने के लिए न्यूनतम उपस्थित सदस्यों की संख्या को व्यावहारिक बनाने हेतु कमेटी के सभी सदस्यों से ऑडियो काल के माध्यम से विचार विमर्श किया गया। उन्होंने महासभा संविधान, चुनाव प्रणाली एवं बांकनेर स्कूल के समुचित प्रबंधन हेतु अपने कई सुझाव दिए।

श्री मोहनलाल दायमा ने समाज के सामूहिक आयोजनों में फिजूलखर्ची, दहेज प्रथा या अन्य सामाजिक कुप्रथाओं को हतोत्साहित करने वाले नियम, नकद लेनदेन को पूरी तरह बंद करके केवल बैंक ट्रांसफर, डिमांड ड्राफ्ट, यूपीआई या चेक के माध्यम से ही लेन-देन करने आदि विषयों पर अपने विचार रखे। श्री बाबूलाल शर्मा अहमदाबाद ने समाज के भीतर होने वाले आपसी विवादों को कोर्ट-कचहरी के बाहर सुलझाने के लिए एक आंतरिक 'विवाद समाधान समिति' गठित करने का सुझाव दिया।

श्री सुरेन्द्र शर्मा ने सुझाव दिया की महासभा के मुंडका स्थित एवं चांदनी चौक स्थित तथा सतीमठ स्थित भवन के समुचित संचालन एवं इसके लिए गठित कमेटी के अधिकार और कर्तव्य के बारे में अपने सुझाव दिए। श्री प्रभुदयाल बरनेला ने समाज के युवाओं को नई तकनीकों, सरकारी नौकरियों और व्यवसाय के अवसरों के बारे में जागरूक करने के लिए नियमित सेमिनार आयोजित करने तथा महासभा की मुख्य समितियों और मीटिंगों में महिलाओं को अनिवार्य प्रतिनिधित्व देने संबंधी सुझाव दिए।

अंत में संविधान में संशोधन के लिए गठित कमेटी के अध्यक्ष श्री श्री गोपाल चोयल ने संगठन की बेहतरी, कानूनी अनुपालन और सुचारू संचालन के लिए कई महत्वपूर्ण सुझाव दिए।

समाजबंधुओं को अपनी मूल सामाजिक पहचान के रूप में जांगिड़ लिखने के प्रेरित करने, महासभा की ऐतिहासिक गरिमा, संगठनात्मक अनुशासन एवं सामाजिक एकता को सर्वोच्च प्राथमिकता देने तथा महिलाओं के लिए सुरक्षित माहौल तैयार करने, विधवा या तलाकशुदा महिलाओं के सम्मानजनक पुनर्विवाह के लिए समाज में सकारात्मक माहौल बनाने एवं शाखा सभा स्तर पर बुजुर्गों के अकेलेपन को दूर करने और उनके अनुभवों का लाभ उठाने के लिए " वरिष्ठ नागरिक सहायता केंद्र" बनाने तथा महासभा का वर्तमान नाम नहीं बदलने आदि विषयों पर भी सभी ने गहन विचार- विमर्श किया।

तदुपरांत संविधान संशोधन कमेटी के सभी सदस्यों ने स्वयं द्वारा रखे गए सुझाव एवं महासभा के सदस्यों तथा महासभा कार्यकारिणी के पदाधिकारियों से प्राप्त सुझावों का भी एक- एक करके विवेचन करने के साथ ही आवश्यक एवं उपयोगी सुझावों पर विस्तृत विचार- विमर्श करने के बाद सर्व सम्मत्ति बनाकर संविधान के तुलनात्मक विवरण में दर्ज किया।

अंत में महासभा प्रधान ने मीटिंग में उपस्थित सभी सदस्यों द्वारा संविधान संशोधन के लिए पारित निर्णयों पर विस्तृत विचार विमर्श करके स्पष्ट एवं सारगर्भित सुझाव देने तथा महासभा संविधान को और अधिक सशक्त एवं उपयोगी बनाने के लिए उचित निर्णय लेने के लिए धन्यवाद देते हुए आभार व्यक्त किया। साथ ही उन्होंने कमेटी अध्यक्ष को अति शीघ्र अगली मीटिंग आयोजित करके समस्त संशोधनों का अंतिम ड्राफ्ट तैयार करने हेतु निर्देशित किया।

कमेटी के अध्यक्ष श्री श्रीगोपाल चोयल अजमेर ने मीटिंग में उपस्थित समस्त पदाधिकारीयों का मीटिंग के लिए अपना अमूल्य समय निकालकर सम्मिलित होने एवं अपने महत्वपूर्ण सार्थक एवं उपयोगी सुझाव देने के लिए आभार... धन्यवाद.. एवं कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए प्रधान जी की अनुमति से श्री विश्वकर्माजी के जयकारे के साथ मीटिंग समाप्ति को घोषणा की गई।

प्रतिलिपि :- सभी को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु :-
महासभा संविधान संशोधन कमेटी के सदस्यों को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु

(सांवरमल जांगिड)
महामंत्री – महासभा

जांगिड समाज के सर्वांगीण विकास के लिए महासभा को एक महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होगी, ताकि प्रगति के नए आयाम स्थापित कर सके।

बैंगलुरू बैठक मे उद्योगपति सुखदेव जांगिड का आह्वान



जांगिड समाज के उदीयमान उद्योगपति, सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र के प्रख्यात उद्यमी और लन्दन प्रवासी, कैप्सिटेक आई टी सर्विसेज लन्दन के सीएमडी और महासभा की बैंगलोर त्रैमासिक बैठक के मुख्य अतिथि, सुखदेव जांगिड ने, महासभा के प्रधान रामपाल शर्मा से आग्रह किया कि महासभा द्वारा समाज में, परिव्याप्त छोटे - छोटे संगठनों को एक मंच पर लाने का स्तुत्य प्रयास किया जाना चाहिए ताकि समाज संगठित और एकजूट हो सके तथा इसकी आशातीत प्रगति का रास्ता प्रशस्त हो सके। उन्होंने कहा कि समाज में छोटे छोटे अनेक संगठन हैं और कुछ संगठन बहुत अच्छा कार्य भी कर रहे हैं, लेकिन महासभा को ऐसा प्रोसेस शुरू करना चाहिए , ताकि सभी संगठन एक मंच पर ही रहें, क्योंकि संगठन ही किसी समाज की वास्तविक ताकत है और इसके साथ ही उन्होंने, समाज के युवाओं का भी आह्वान किया कि वह इंटिरियर क्षेत्र की परिधि से बाहर निकल कर दूसरी इंडस्ट्रीज में अपना भाग्य आजमाएं।

यह उद्गार समाज सेवी सुखदेव जांगिड ने बेंगलुरु में आयोजित अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा की त्रैमासिक बैठक और कर्नाटक प्रदेश सभा की कार्यकारिणी के शपथ ग्रहण समारोह के अवसर पर , उपस्थित लोगों को सम्बोधित करते हुए व्यक्त किए।

सुखदेव जांगिड ने कर्नाटक प्रदेश सभा की कार्यकारिणी के पदाधिकारियों को शपथ ग्रहण करवाई और मनोनीत पदाधिकारियों को बधाई देते हुए कहा कि मैं पिछले 20 वर्षों से लन्दन में रह रहा हूँ। यह एक इत्तफाक ही है कि मुझे फूलों की नगरी बेंगलुरु में और सिलिकॉन वैली में, पहली बार आने का मौका मिला है। आपका प्यार एवम श्री अमराराम जी तथा प्रधानजी एवं महामंत्री जी का विशेष आग्रह ही मुझे यहां पर खीच लाया है। इन्ही की वजह से मुझे पहली बार महासभा के इस गरिमामय मंच पर आने का अवसर मिला है। उन्होंने कहा कि प्रधान रामपाल शर्मा ने अभी थोड़ी देर पहले ही कहा था कि आज जांगिड - सुथार समाज में पैदा होने वाला प्रत्येक बच्चा जन्मजात ही एक आर्किटेक्ट होता है, लेकिन मैं तो यहां तक कहता हूँ कि वह बच्चा एक आर्किटेक्ट ही नहीं होता है, अपितु वह एक इंजीनियर होने के साथ ही वास्तुकला और शिल्प कला मे भी अपनी विशेष पहचान रखता है।

सुखदेव जांगिड ने कहा कि जितने भी हुनर के कार्य हैं, वह हमारे समाज के बच्चे बिना हुनर के ही कर लेते हैं, जबकि दूसरे लोग उस कार्य को हुनर होते हुए भी उन कामों को इतनी दक्षता और इतनी पारंगत विधि के साथ नहीं कर पाते हैं। मैं आपको कुछ बातें कहना चाहता हूँ। हमारा समाज इंटेलीजेंट होते हुए भी, आज केवल इंटीरियर के काम में ही अटका हुआ है। आज हमें इससे बाहर निकलने की महत्ती आवश्यकता और जरूरत है। हमारे समाज के बच्चों को दूसरे क्षेत्रों और दूसरी इंडस्ट्रीज में भी अपना भाग्य आजमाना चाहिए। उन्होंने कहा कि मैं पहली बार आपको बता रहा हूँ कि मैं एक ऐसी मुहिम चला रहा हूँ जिससे हमारे समाज के बच्चे उच्च शिक्षा ग्रहण करके, आने वाले 10-20 सालों में बहुत आगे निकल जाएंगे और प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी के सन् 2047 तक विकसित भारत के सपनों को साकार करने में अमूल्य योगदान दे सकेंगें।

सुखदेव जांगिड ने, समाज के सक्षम परिवारों का आह्वान किया कि वह अपने बच्चों के साथ - साथ समाज के आर्थिक रूप से कमजोर बच्चों को भी उच्च शिक्षित बनाने का प्रयास करे। उन्होंने कहा कि मुझे विश्वास है कि ऐसे बच्चे देश में ही नहीं अपितु विदेशों में भी अपने समाज का परचम लहराएंगे। मेरे द्वारा ऐसे बच्चों को किसी भी देश में सहायता करने की जरूरत होगी, मैं उनकी सहायता करने के लिए हमेशा ही तत्पर और आगे रहूंगा। उन्होंने जोर देकर कहा कि आज समाज में प्रतिभाओं की कोई भी कमी नहीं है, लेकिन **सबसे यक्ष प्रश्न यह है कि इन प्रतिभाओं को कैसे तराशा जाए?** क्योंकि इनको आज तराशने की महत्ती आवश्यकता के साथ ही इनकी पहचान कैसे की जाए, यह भी एक बहुत बड़ा प्रश्न है। समाज को प्रतिभाओं की पहचान करके उनको आगे बढ़ाने की जरूरत है और इसके लिए यह जरूरी है कि सभी को एक साथ मिलकर कार्य करना होगा। अब वह समय आ गया है कि युवा पारम्परिक क्षेत्रों तक सीमित न रहकर अपनी प्रतिभा और दक्षता के बल पर अपनी एक अलग विशेष पहचान बनाएं। **********

देश के 80 वें स्वतंत्रता दिवस पर महासभा भवन, मुंडका में ध्वजारोहण एवं विचार गोष्ठी का आयोजन।

देश के 80वें स्वतंत्रता दिवस के पावन अवसर पर, अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा, दिल्ली के महासभा भवन, मुंडका, दिल्ली में, राष्ट्र भावना, देशप्रेम, राष्ट्रभक्ति और सामाजिक एकता से ओत-प्रोत एक भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर महासभा के महामंत्री सांवरमल जांगिड द्वारा महासभा भवन में, राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा फहराया गया और उपस्थित समाजबंधुओं ने, राष्ट्रगान के साथ, देश की आन -बान और शान तिरंगे को नमन किया गया और देश की एकता, अखंडता एवं गौरव को अक्षुण्ण बनाए रखने का संकल्प भी लिया गया।



इस अवसर पर , **महासभा के महामंत्री सांवरमल जांगिड ने,** अपने उद्बोधन में, स्वतंत्रता संग्राम के वीर सेनानियों, अमर शहीदों और देश भक्तों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि, देश को स्वतंत्रता का उपहार, हमें लाखों देशभक्तों के अनेक बलिदानों के बाद प्राप्त हुआ है। इसलिए आज हमारा सबका यह सर्वोच्च दायित्व है कि, हम राष्ट्र की एकता और अखंडता को अखण्ड बनाए रखने का, संकल्प लेने के साथ- साथ ही , समाज को शिक्षित, संगठित एवं संस्कारित बनाने में भी अपना बहुमूल्य योगदान दें।

दिल्ली प्रदेश सभा के अध्यक्ष धर्मपाल शर्मा ने कहा कि, देशभक्तों के जीवन से हमें प्रेरणा लेनी चाहिए, जिन्होंने देश प्रेम की भावना से अभिप्रेरित होकर महान कुर्बानियां दी और देश को विदेशी दास्तां के पंजों से मुक्त करवाया। उन्होंने कहा कि अपने बच्चों को बेहतर शिक्षा, उदात्त संस्कार एवं राष्ट्रभक्ति और देशप्रेम की भावना का पाठ पढ़ाते हुए ही, अपने बच्चों को,देश और समाज के लिए समर्पित नागरिक बनाना चाहिए। यदि समाज शिक्षित होगा तो, निश्चित रूप से ही देश आगे बढ़ेगा।

महासभा की कोर कमेटी के सदस्य ओम प्रकाश शर्मा ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि, स्वतंत्रता का वास्तविक अर्थ तभी सार्थक होगा, जब समाज का प्रत्येक व्यक्ति अपने अधिकारों के साथ-साथ अपने कर्तव्यों के प्रति भी जागरूक और सजग होगा। उन्होंने समाज में आपसी भाईचारा, सहयोग एवं संगठन को मजबूत करने की आवश्यकता पर भी बल दिया। **प्राचीन श्री विश्वकर्मा मंदिर, पहाड़गंज, दिल्ली के प्रधान गंगादीन जांगिड ने कहा कि,** हमारे महापुरुषों और स्वतंत्रता सेनानियों के त्याग, बलिदान एवं संघर्ष से हमें प्रेरणा लेनी चाहिए। समाज की नई पीढ़ी को अपनी गौरवशाली परंपराओं, संस्कृति और राष्ट्र के प्रति जिम्मेदारियों से जोड़ना ही आज के समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है। मैं भारत माँ के वीर सपूतों और देश भक्तों को हृदय से नमन करता हूँ। **महासभा के पूर्व कोषाध्यक्ष सत्य नारायण जांगिड ने** कहा कि, उन सभी जाने-अनजाने वीर शहीदों और देशभक्तों को नमन करता हूँ, जिनके बलिदान के कारण ही हम आज खुली हवा में सांस ले रहे हैं।



कार्यक्रम के अंत में **प्रदेश सभा, दिल्ली के महामंत्री ब्रह्मानंद शर्मा ने** अपने उद्बोधन में कहा कि, हमें स्वतंत्रता सेनानियों के त्याग से प्रेरणा लेकर राष्ट्र और समाज के प्रति अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से निर्वहन करना चाहिए। उन्होंने सभी समाजबंधुओं का आह्वान किया कि **"संगठन, शिक्षा, संस्कार और सेवा"** को अपना मूल मंत्र बनाकर समाज को नई ऊंचाइयों पर ले जाने के लिए मिलकर कार्य करें। ध्वजारोहण के पश्चात, एक विचार गोष्ठी का आयोजन भी किया गया, जिसका कुशल एवं प्रभावी ढंग से मंच संचालन, दिल्ली प्रदेश सभा के महामंत्री ब्रह्मानन्द शर्मा ने किया।

कार्यक्रम की शोभा को द्विगुणित करने वालों में, महासभा के कार्यालय अधीक्षक ऋषि प्रकाश जांगिड, महासभा के सह कोषाध्यक्ष रामकिशन जांगिड, महासभा के उपप्रधान सुबोध कुमार जांगिड और नरेश कुमार जांगिड, नजफगढ़ से कंवर सिंह ठेकेदार, रमेश शर्मा कमल प्रिंटर आनन्द पर्वत, राकेश जांगिड द्वारका, महासभा कार्यालय में कार्यरत, दीपक जांगिड और कम्प्यूटर आपरेटर चन्दन प्रकाश सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित थे।

कार्यक्रम में उपस्थित सभी सम्माननीय पदाधिकारियों, कार्यकर्ताओं एवं समाजबंधुओं का महासभा के महामंत्री सांवरमल जांगिड और दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष की तरफ़ से इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए आभार एवं धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

वंदे मातरम्! जय हिंद!

ब्रह्मानन्द शर्मा - महामंत्री, दिल्ली प्रदेश सभा

बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी, अनेक भाषाओं के मर्मज्ञ और प्रकाण्ड विद्वान डॉ. तुलसी राम शर्मा की तस्वीर का कनाडा में अनावरण किया गया।

कैलाशचंद बरनेला - पूर्व प्रधान, महासभा



20 वीं सदी के महानायक, जांगिड समाज की अनमोल धरोहर और अद्वितीय प्रतिभा के धनी, हिंदी, अंग्रेजी और संस्कृत साहित्य के मर्मज्ञ, विद्वान और समाज सेवा के प्रति समर्पित व्यक्तित्व के धनी, उत्कृष्ट और समर्पण भाव की प्रतिमूर्ति, विराट व्यक्तित्व के धनी डॉ. तुलसीदास शर्मा एक ऐसे महान युग पुरुष थे, जिन्होंने अपनी आध्यात्मिक चेतना के माध्यम से भारतीय सभ्यता और संस्कृति का अद्भुत संगम करके, इसे देश की प्राचीरों से निकाल कर इसे, विश्व पटल पर आलोकित किया। अपनी आध्यात्मिक चेतना के माध्यम से इसकी छाप न केवल देश में अपितु विदेशों में भी छोड़ी। वह भारत देश की प्राचीर को लांघ कर कनाडा तक आ पहुंची है। उन्होंने चार वेदों का अंग्रेजी भाषा में अनुवाद और लिपयांकरण कनाडा की धरा पर ही 75 साल की आयु में शुरू किया। इस दुष्कर और कठिन कार्य को पूरा करने में उनको 14 साल का समय लगा। इसके पीछे भगवान की प्रेरणा ही रही है, क्योंकि कनाडा आने के बाद उन्होंने अपने अंतर्मन में महसूस किया कि विदेशों में अंग्रेजी के बढ़ते हुए प्रभाव के कारण भारतीय युवाओं में और विश्व में वेदों के प्रचार और प्रसार की महत्ती आवश्यकता है, इसलिए उन्होंने इस चुनौती को स्वीकार किया और अंग्रेजी भाषा में चारों वेदों का रुपान्तरण करके विश्व के लिए ज्ञान का दरवाजा खोल दिया।



अपने उद्बोधन में ज्ञानेश कुमार शर्मा ने, अपने ब्रह्मलीन पिता डॉ. तुलसी राम शर्मा की तस्वीर का आर्य समाज मार्खम (कैनडा) में 15 अगस्त 2026 को किए गए अनावरण के अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुय कहा कि भारत में जहां 15 अगस्त को देश का 80 वां स्वतंत्रता दिवस मनाया जा रहा था, वहीं जांगिड ब्राह्मण समाज की अनमोल धरोहर की तस्वीर का कनाडा में अनावरण किया जा रहा था। उन्होंने कहा कि मुझे अपने पिता पर गर्व है, कि वह हरियाणा के एक छोटे से गांव बढ़ मलिक, तत्कालीन जिला रोहतक में माता श्रीमती बख्तावरी देवी और पिता जुगलाल शर्मा के घर में एक साधारण परिवार में 16 दिसम्बर सन् 1923 में पैदा हुए और विषम परिस्थितियों में भी अपनी असीम प्रतिभा और दक्षता का परिचय देते हुए न केवल देश में, अपितु विदेशों में भी अपनी विद्वत्ता का लोहा मनवाया।

संयुक्त पंजाब में उनको तीसरी कक्षा में ही, छात्रवृत्ति मिलने लगी थी। इसके बाद 8 और 10वीं कक्षा में भी पंजाब सरकार से वजीफा प्राप्त किया और फिर 12वीं कक्षा में स्नातक और स्नातकोत्तर परीक्षा दिल्ली विश्वविद्यालय से पास की और निरन्तर छात्रवृत्ति हासिल करते रहे। उन्होंने बताया कि सन् 1960 में फोर्ड फाउंडेशन से स्कालरशिप मिली, जिसके कारण पिता जी को लन्दन जाने का अवसर मिला और उन्होंने लन्दन विश्वविद्यालय से केवल दो वर्ष में ही अंग्रेजी में पी.एच.डी. की डिग्री हासिल की। उनकी प्रखर विद्वत्ता का एक और सटीक उदाहरण यह है कि उन्होंने तीन साल तक रेडियो बी बी सी के माध्यम से भारतीय सभ्यता और संस्कृति की विदेशों में चमक बिखेरने के लिए ब्राडकास्ट भी किया और जिसकी सर्वत्र भूरि-भूरि प्रशंसा की गई।

ज्ञानेश कुमार शर्मा ने कहा कि पिताजी ने राष्ट्र निर्माता के रूप में कालेजों में प्रोफेसर, प्रिंसिपल और महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय रोहतक में अंग्रेजी विभाग के विभागाध्यक्ष और वाइस चांसलर भी रहे। पिताजी को अनेक प्रतिष्ठित पुरस्कार भी हासिल हुए, जिनमें कनाडा सरकार का सर्वोत्तम सेवा पुरस्कार, हिन्दू रत्न अवार्ड, ब्राह्मण रत्न अवार्ड, आर्य समाज टोरंटो वैदिक सामुदायिक अवार्ड और की नोट वक्ता के रूप में भी ओरलैंडो, एफआई यूएस ए और कनाडा सीनियर सिटीजन अवार्ड सहित अनेक अवार्ड शामिल हैं, इनको हासिल करके एक बैंच मार्क स्थापित किया गया।

इस समारोह को देवेन्द्र गौतम ने सम्बोधित करते हुए कहा कि अपने जीवन काल में उन्होंने 40 से अधिक पुस्तकें लिखी, जिनमें सत्यार्थ प्रकाश, योग का मूल दर्शन, स्वामी दयानंद सरस्वती की आत्मकथा, 9 उपनिषद, चार वेद और श्रीमद्भगवद्गीता एक वैदिक परिप्रेक्ष्य में विशेष रूप से शामिल हैं। उन्होंने कहा कि मैंने इन सभी पुस्तकों को (वैदिक वाइस , डॉ. तुलसी राम शर्मा) वैब साइट्स पर डाल दिया हैं ताकि लोग उनको मुफ्त में पढ़ सकें। इसका सबसे सन्तोष जनक पहलू यह है कि इन पुस्तकों को औसतन 5000 लोग प्रतिदिन पढ़ते हैं।

देवेन्द्र गौतम ने कहा कि उन्होंने कनाडा, अमेरिका और इंग्लैंड में कई अन्तर्धार्मिक मंचों पर और दूसरे धर्मों के प्लेटफार्म पर

चाहे वह मन्दिर हो, मस्जिद हो या चर्च हो, अपने सारगर्भित विचार व्यक्त किए और यही कारण है कि उनके महान आदर्श भविष्य में, आगे आने वाली पीढ़ियों के लिए चरित्र निर्माण और संस्कार गढ़ने का कार्य करेंगे और वह उनके विराट व्यक्तित्व से प्रेरणा लेकर अपने जीवन में अग्रसर होते रहेंगे।

टोरंटो कनाडा में, बैरिस्टर लिंकन गौतम ने अपने दादा डॉ. तुलसी राम की याद को ताजा बनाए रखने के लिए उनकी स्मृति में, भारतीय मुद्रा के हिसाब से आर्य समाज मार्खम को, 60 हजार रुपए का दान देने की घोषणा की। उन्होंने कहा कि मेरे दादा अंग्रेजी भाषा के प्रकाण्ड पंडित थे और आर्य समाज के प्रति उनका विशेष लगाव था और वह जीवनपर्यन्त आर्य समाज से जुड़े रहे। उन्होंने स्वामी दयानंद के बारे में भी विस्तारपूर्वक लेखन करते हुए अपनी कलम का लोहा मनवाने का काम किया और स्वामी दयानंद के सिद्धांतों को अपने जीवन में आत्मसात किया।



भारत राजस्व सेवा के अधिकारी और आयकर विभाग के पूर्व मुख्य प्रधान आयुक्त, डॉ. नरेन्द्र शर्मा ने भी उनके बारे में अपने शब्दों को अभिव्यक्ति देते हुए कहा कि विनम्रता और सौम्यता की प्रतिमूर्ति डॉ. साहब से मेरा विशेष लगाव था और मुझे, उनसे कई बार व्यक्तिगत रूप से मिलने का अवसर भी मिला और उन्होंने मुझे अंग्रेजी भाषा में लिखे गए चारो वेदों की मूल प्रतियां भी भेंट की थी। जो काम आज करोड़ों रुपए में नहीं किया जा सकता है, उस काम को, उन्होंने अपनी बुद्धिमता, ज्ञान और भगवान के आशीर्वाद से सहज और स्वाभाविक रूप से पूरा करके एक अनूठा उदाहरण प्रस्तुत किया है। मैं ब्रह्मलीन डॉ. साहब को शत् शत् नमन करता हूँ।



महासभा प्रधान रामपाल शर्मा ने डॉ. तुलसी राम शर्मा के जज्बे को सलाम कहते हुए कहा कि, यह उनकी उत्कट जिजीविषा का ही परिणाम है कि उन्होंने 75 साल की आयु में चारों वेदों का अंग्रेजी में अनुवाद और रुपान्तरित करना शुरू किया। उन्होंने समाज में शिक्षा और आध्यात्मिकता में एक अनूठा और अद्भुत सामंजस्य स्थापित किया। डॉ. तुलसीराम ने जिस प्रकार से आध्यात्मिक साधना से अभिप्रेरित होकर वेदों, उपनिषद, सत्यार्थ प्रकाश, मनुस्मृति, रामायण, संस्कार विधि सहित अनेक धार्मिक पुस्तकों का अंग्रेजी भाषा में अनुवाद करके इनको सरल बनाया और इसके साथ ही 40 पुस्तकें भी लिखी, जो उनकी अद्वितीय प्रतिभा और बहुआयामी व्यक्तित्व का द्योतक है।

जांगिड पत्रिका के संपादक राम भगत शर्मा ने, डॉ. तुलसी राम शर्मा के बारे में अपनी यादों को ताजा करते हुए कहा कि मैं भी महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय में पढ़ाई कर रहा था और मुझे भी, महासभा के पूर्व प्रधान आनन्द स्वरूप भारद्वाज के सौजन्य से डॉ. तुलसी राम शर्मा से उनके प्रो वाइस चांसलर होते हुए, मुलाकात करने का सौभाग्य मिला था। जिस शालीनता और विनम्रता पूर्वक उन्होंने मुझको मान सम्मान दिया, उससे मैं बहुत अधिक प्रभावित हुआ और आज भी वह छवि मेरे मन में यथावत बसी हुई है। मैं उनके उदार सदव्यवहार को, हृदय से नमन करता हूँ।

इस समारोह की शोभा को द्विगुणित करने वालों में विजय शर्मा, मंजू शर्मा, कुसुम लता शर्मा आकाश शर्मा शामिल हैं। लिंकन गौतम और आकाश शर्मा ने मिलकर इस समारोह की व्यवस्था को सुचारू बनाने और इसकी गरिमा को चार चांद लगाने के समुचित व्यवस्था की और उन दोनों द्वारा की गई, उनकी इस उत्कृष्ट सेवा भावना की , कार्यक्रम में उपस्थित सभी लोगों ने भूरि - भूरि प्रशंसा करते हुए उनकी सेवा की मुक्त कंठ से भरपूर सराहना की।

मैं, डॉ. तुलसी राम शर्मा के बारे में कह सकता हूँ कि वह अनेक भाषाओं के मर्मज्ञ विद्वान थे और भारतीय सभ्यता और संस्कृति के उन्नयन के लिए समर्पण और समर्पित भाव से ओत-प्रोत थे। यह मेरा परम सौभाग्य रहा है कि मुझे, डॉक्टर तुलसीराम शर्मा से अनेक बार मिलने और उनका आशीर्वाद लेने का अवसर प्राप्त हुआ।

70 वर्ष के एक व्यक्ति को चलना फिरना दुष्कर हो जाता है उस 70 वर्ष की आयु में डॉ. तुलसी राम शर्मा ने संस्कृत भाषा में दिल्ली विश्वविद्यालय से संस्कृत भाषा में एम ए, स्नातकोत्तर की डिग्री हासिल की और इसके पीछे रहस्य यही था कि भारतीय वेदों और पुराणों तथा शास्त्रों की गूंज , संस्कृत भाषा को भली भांति समझ कर और इन ग्रन्थों का अंग्रेजी में अनुवाद करके इनको विश्व के कौने - कौने तक पहुंचाया जा सके। मेरी मनस्कामना है कि भारत सरकार द्वारा डॉ. साहब को मरणोपरांत भारत रत्न देकर सम्मानित किया जाए। इसके लिए महासभा को सभी के साथ मिलकर प्रयास करने की महत्ती आवश्यकता है ताकि इस लक्ष्य को हासिल किया जा सके। मैं डॉ. साहब को,हृदय के अन्तःकरण से श्रद्धा पूर्वक नमन करता हूँ।

विपुल धन्यवाद। ***

युवाओं के उज्ज्वल भविष्य के लिए, राजस्थान प्रदेश सभा द्वारा आयोजित प्रेरणा और प्रयास से परिणाम कार्यक्रम अपनी अमिट छाप छोड़ने में सफल रहा।

जीवन में सफलता हासिल करने के लिए दृढ़ संकल्प, सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ - साथ निरंतर प्रयास और अग्रसर रहने की प्रबल इच्छा शक्ति, आत्मविश्वास, हौसले तथा जज्बे के साथ आगे बढ़ने से सफलता निश्चित रूप से हासिल हो सकती है। प्रेरणा से प्रयास से परिणाम भी सफलता का मूल मंत्र है। आत्मविश्वास के साथ संकल्प और पुरुषार्थ की बलवती भावन से विपरीत परिस्थितियों में भी, सफलता हासिल की जा सकती है।



यह उद्गार, मुख्य वक्ता और राजस्थान प्रदेश में भारतीय प्रशासनिक सेवा के वरिष्ठ अधिकारी, शासन सचिव, जनरेटिक दवाओं के प्रणेता तथा मोटिवेशनल स्पीकर, डॉ. समित शर्मा ने राजस्थान प्रदेश सभा द्वारा, बिड़ला आडिटोरियम जयपुर में, 30 अगस्त को आयोजित प्रेरणा और प्रयास से परिणाम तक विषय पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए व्यक्त किए। अपने डेढ़ घंटे के उद्बोधन में, डॉ. समित शर्मा ने जहां अपने प्रभावशाली और प्रेरणा से परिपूर्ण वक्तव्य के माध्यम से सफलता के, शिखर पर पहुंचे महान् विभूतियों की विशिष्ट परिस्थितियों और उपलब्धियों काउल्लेख करते हुए, कार्यक्रम की निरंतरता को बनाए रखा।

माँ सरस्वती वंदना से समारोह का श्री गणेश करते हुए उन्होंने , सबसे पहले राजस्थान प्रदेश अध्यक्ष घनश्याम शर्मा और उसकी कार्यकारिणी का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि प्रदेश सभा ने एक बैंचमार्क स्थापित किया है और उन्होंने सुझाव दिया कि इस प्रकार का आयोजन साल में दो बार आयोजित किया जाना चाहिए , एक बार जयपुर में और एक बार जयपुर से बाहर दूसरे जिलों में। उन्होंने कहा कि मन की दृढ़ इच्छाशक्ति के साथ अपने मन को परिवर्तित करने की शुरुआत करें , जिससे सफलता का रास्ता प्रशस्त होता है और इस सफलता के 25 ऐसे मूल सूत्र हैं, जिनको आत्मसात करने से सफलता आपके कदम चूमेगी।

डॉ. समित शर्मा ने जोर देकर कहा कि, सफलता हासिल करने के लिए अपनी मंजिल के बारे में अवश्य ही पता होना चाहिए। मंजिल का पता होगा तभी हम ट्रेन से वहां पहुंच सकते हैं, जहां पर जाना होता है। इसी प्रकार अनेक महत्वपूर्ण कारक हैं, जो सफलता की पटकथा लिखते हैं, जिनमें फोकस सबसे महत्व पूर्ण है। इसी प्रकार से जो नीट की परीक्षा या अन्य शासकीय परीक्षा दे रहे होते हैं, उनके सामने लक्ष्य बिल्कुल स्पष्ट होना चाहिए।

इसी प्रकार सकारात्मक सोच और निरन्तर प्रयास से जो हम चाहते हैं वहीं परिणाम हासिल होता है। डॉ. समित ने कहा कि इसके साथ ही भगवान पर भरोसा भी रखें। भगवान जो कुछ भी करता है, वह सब आपके भले के लिए ही होता है। स्टीम जो ने पहली बार, इन्टरनेट, यूट्यूब और जीमेल और फेसबुक वाला मोबाइल फोन बना दिया। परिस्थितियों के अनुसार नजरिया बदलना बहुत जरूरी है।

डॉ. समित शर्मा ने कहा कि, जीवन में सफलता हासिल करने के लिए अनुशासन एवं आत्मसंयम, अदम्य इच्छाशक्ति, अपना कार्य ईमानदारी से करना भी जरूरी है। आपको चाहे कोई भी देख रहा है या नहीं। सही आचरण करें, भगवान के मन्दिर में जाएं, फिर जो भी आप संगीत सीखना है या चैस सीखना है या कोई भी परीक्षा पास करनी है तो, उसके लिए निर्धारित घण्टों के दौरान ईमानदारी से परिश्रम करें और आपके प्रयासों में कोई भी कमी नहीं होनी चाहिए। जो काम कठिन है, उसको सबसे पहले करो, और ध्यान से पढ़ें और 7 दिन बाद दोबारा और 30 दिन बाद तीसरी बार दोहराने से आपका 70 प्रतिशत कार्य आसान हो जाएगा और सफलता हासिल होगी।

प्रोफेसर डॉ. राधेश्याम चोयल ने अपना प्रेरणादायक उद्बोधन देते हुए कहा कि, जीवन में एक व्यक्ति जो सोचता है, वह घटित अवश्य ही होता है। उन्होंने कहा कि जो व्यक्ति मंजिल और मौके का अर्थ समझ लेता है वह सफलता जरूर हासिल करता है। **मैं क्या हूँ, और क्या कर सकता हूँ और मैं कौन हूँ , इसका जवाब अपने आप से मांगने वाला व्यक्ति ही निश्चित रूप से सफलता हासिल करता है।** दुनियां में आज बहुत अधिक संसाधन उपलब्ध हैं। मन से प्रार्थना करें और ईश्वर से जुड़ेंगे तो सफलता अवश्य हासिल होगी।

डॉ. चोयल ने कहा कि पात्रता के मूल्यांकन के लिए चार बातें जरुरी हैं। सबसे पहले अपने भीतर छिपी हुई ताकत को पहचाने से सफलता की कहानी लिखी जा सकती है। अपनी कमजोरियों को पहचान कर, उनको दूर करो और उन पर नियंत्रण पाने का प्रयास करें।

इसके साथ ही सहन शक्ति को बढ़ाना होगा और यह सुनिश्चित करना होगा कि इसमें क्या-क्या अवसर उपलब्ध हैं और क्या - क्या खतरा है। इन सभी की एक लघु रिपोर्ट तैयार करके उस पर कार्य शुरू करें और देखें कि हमें नौकरी से अधिक उद्यमिता की जरूरत है तभी आप उसमें सफलता हासिल कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि आज लघु उद्योग दिवस भी है और आज देश की आर्थिक प्रगति में इन्टरीप्यन्योर का बहुत बड़ा योगदान है। इसलिए जो विचार आपको आते हैं वह ही कल भविष्य बनेंगे।

उन्होंने कहा कि अपनी एक टास्क लिस्ट तैयार करें और कोई भी बहाना ना बनाए कि मैं, इस काम को कैसे कर सकता हूँ और दुनिया में कोई भी काम साहस से बड़ा नहीं होता है। इसके साथ ही ज्ञान और लक्ष्य भी स्पष्ट होना चाहिए। आज कृत्रिम बुद्धिमत्ता का जमाना है और आज के इस सूचना प्रौद्योगिकी के युग में टैक्नोलॉजी हर घंटे बदल रही है और इसलिए सफलता के लिए यह जरूरी है कि बौद्धिक आध्यात्मिकता को भी साथ ले कर चलना होगा। उन्होंने प्रदेश अध्यक्ष घनश्याम शर्मा को, युवाओं के लिए इस प्रकार का प्रेरणादाई कार्यक्रम आयोजित करने के लिए बधाई भी दी।

डॉ. रुचि शर्मा ने युवाओं को मोबाइल एवं तकनीक के दौर में, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मोबाइल एप का उपयोग बुद्धिमता पूर्ण तरीके से करने की सलाह देते हुए कहा कि भविष्य आपका है और अपने बचपन की चींजों को कभी भी अपनी कमजोरी मत बनने देना। उन्होंने जोर देकर कहा कि नई टैक्नोलॉजी के कारण थोड़े दिनों में डॉ. की जगह रोबोट सर्जरी करेंगे। इसलिए सफलता हासिल करने के लिए पहला इम्प्रैशन बहुत जरूरी है। आपका भविष्य, आपकी यात्रा और आपका पहला प्रभाव बहुत अधिक महत्व रखता है। हर दिन जो फैसले लेते हैं, वहीं आपका भविष्य बनाएगा और कृत्रिम बुद्धिमत्ता से डरने की अपेक्षा इस पर गम्भीरता से सोचना शुरू करें तभी जीवन में आशातीत सफलता हासिल की जा सकती है।

भारतीय रेलवे सेवा की पूर्व अधिकारी रश्मि कपूर ने भी अपने सारगर्भित विचार रखते हुए कहा कि जो भी व्यक्ति अपने लक्ष्य में सफल हुए हैं, उनको माता-पिता ने सदैव ही आगे बढ़ाया है। उन्होंने अभिभावकों का आह्वान किया कि वह अपने बच्चों द्वारा परीक्षा में हासिल किए गएरैंक के आधार पर कोई भी निष्कर्ष न निकाले बल्कि, माता - पिता से अनुरोध है कि, वह घर में अपने बच्चों के विकास के लिए एक ऐसा सृजनात्मक वातावरण तैयार करें और बच्चों को यह निर्णय करना है कि वह जीवन में, क्या बनना चाहते हैं? और फिर उसी पर अपना ध्यान केंद्रित करें।

महासभा के पूर्व प्रधान रविशंकर शर्मा ने कहा कि, यह राजस्थान प्रदेश सभा का युवाओं और छात्र छात्राओं के लिए आयोजित किया गया दूसरा कार्यक्रम है। डॉ. समित शर्मा ने वर्ष में दो बार युवाओं के लिए कार्यक्रम आयोजित करने का जो सुझाव दिया गया है वह स्वागत योग्य है। उन्होंने कहा कि प्रदेश सभा अध्यक्ष घनश्याम शर्मा बेहतरीन कार्य कर रहे हैं और मैं महासभा प्रधान रामपाल शर्मा से बात करुंगा कि, घनश्याम शर्मा को बेहतरीन प्रदेश अध्यक्ष का अवार्ड देकर सम्मानित किया जाए। 125 साल पुरानी महासभा के बारे में उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि , महासभा का एक मात्र उद्देश्य यही था कि, समाज के बच्चों को एक ऐसा प्लेटफार्म मिले ताकि वह अपना भविष्य उज्ज्वल बना सकें।

मैं जयपुर के मारुति कास्टिंग के निदेशक भामाशाह और इस समारोह के प्रायोजक राजन शर्मा का इस कार्यक्रम का समस्त खर्चा वहन करने के लिए उनका आभार व्यक्त करता हूँ। यह उनकी समाज और युवाओं के प्रति सकारात्मक सोच को परिलक्षित करता है। उन्होंने यह गुण अपने पिता नन्द कुमार शर्मा से आत्मसात किए हैं। यह कार्यक्रम समाज के बच्चों के लिए एक रामबाण सिद्ध होगा। कुछ बच्चे ऐसे भी हैं, जो 16-17 साल के बाद अपने लक्ष्य से भटक जाते हैं। इस कार्यक्रम का उद्देश्य यही है कि ऐसे दिग्भ्रमित युवाओं को, इस प्रकार के प्रेरणा दायक कार्यक्रम के माध्यम से भटकाव छोड़कर लक्ष्य को हासिल करने के प्रयास मे लगाना है।

महासभा मिलकर एक ऐसा वातावरण तैयार करें कि हमारे बच्चे दूसरे समाज के बच्चों से आगे निकले। राजस्थान के सभी जिला अध्यक्ष और प्रदेश सभा की टीम ने मिलकर इस कार्यक्रम को सफल बनाया इसके लिए पुनः धन्यवाद।

इस कार्यक्रम का लाईव प्रसारण विश्वकर्मा टूडे के सम्पादक और विश्वकर्मा यूट्यूब चैनल के हैड नरेश शर्मा द्वारा किया गया और मंच का गरिमा पूर्ण ढंग से संचालन, प्रदेश सभा के महामंत्री और हिंदी भाषा के मर्मज्ञ कैलाश चन्द्र शर्मा साली वाले ने बेहतरीन तरीके से किया।

इस अवसर को सुशोभित करने वालों में, समारोह के प्रायोजक राजन शर्मा, हरियाणा प्रदेश के पूर्व अध्यक्ष खुशी राम जांगिड, राजस्थान प्रदेश सभा के कार्य कारी अध्यक्ष, गजानंद जांगिड , वरिष्ठ उपाध्यक्ष सुरेन्द्र कासलीवाल, वरिष्ठ मंत्री हरीश जिठावा, महिला प्रकोष्ठ की कार्यकारी अध्यक्ष कंचन जांगिड, पूर्व प्रदेश अध्यक्ष नीलू जांगिड, पूर्व प्रदेश अध्यक्ष लखन शर्मा, महासभा के मिशन 1.50 लाख प्रभारी रामजी लाल जांगिड, प्रदेश युवा अध्यक्ष धर्मवीर जांगिड, विश्वकर्मा टूडे के सम्पादक नरेश शर्मा, दीप विश्वकर्मा के सम्पादक हरिराम जांगिड, कार्यालय मंत्री द्वारका प्रसाद, कोषाध्यक्ष मुकेश कुमार, समन्वयक राहुल शर्मा, प्रवक्ता महेश जांगिड, जिला अध्यक्ष, तहसील अध्यक्ष, ब्लॉक अध्यक्ष और भारी संख्या में मातृशक्ति उपस्थित थीं।

घनश्याम शर्मा - राजस्थान प्रदेश अध्यक्ष,

ऋषि पंचमी : ऋषि परंपरा, ज्ञान और आत्मशुद्धि का पर्व

कैलाशचंद बरनेला - पूर्व प्रधान, महासभा



ऋषियों के ज्ञान, तप और लोककल्याण की परंपरा को नमन। भारत की सनातन संस्कृति पर्वों और उत्सवों की समृद्ध परंपरा से जुड़ी हुई है। हमारे यहां प्रत्येक पर्व केवल पूजा-पाठ तक सीमित नहीं है, बल्कि उसके पीछे कोई न कोई जीवन-मूल्य, सामाजिक संदेश और आध्यात्मिक प्रेरणा भी छिपी होती है। इन्हीं महत्वपूर्ण पर्वों में ऋषि पंचमी का विशेष स्थान है। भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की पंचमी को मनाया जाने वाला यह पर्व भारतीय ऋषि परंपरा के प्रति श्रद्धा, कृतज्ञता और आत्मचिंतन का अवसर प्रदान करता है।

ऋषि पंचमी पर विशेष रूप से सप्तर्षियों- कश्यप, अत्रि, भारद्वाज, विश्वामित्र, गौतम, जमदग्नि और वशिष्ठ—का स्मरण और पूजन किया जाता है। अनेक परंपराओं में माता अरुंधती का भी श्रद्धापूर्वक स्मरण किया जाता है। यह दिन हमें उन महान ऋषियों की तपस्या, ज्ञान-साधना और लोककल्याणकारी चिंतन को याद करने की प्रेरणा देता है, जिन्होंने भारतीय सभ्यता और संस्कृति के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

'ऋषि' शब्द भारतीय संस्कृति में अत्यंत व्यापक अर्थ रखता है। ऋषि वह है जो सत्य की खोज करता है, ज्ञान का चिंतन करता है और अपने अनुभव एवं ज्ञान को समाज के कल्याण के लिए समर्पित करता है।

भारतीय परंपरा में ऋषियों ने जीवन के अनेक प्रश्नों पर विचार किया—सृष्टि क्या है, मनुष्य का उद्देश्य क्या है, सत्य क्या है, प्रकृति के साथ हमारा संबंध कैसा होना चाहिए और समाज को किस प्रकार व्यवस्थित किया जाए। वेदों और उपनिषदों की ज्ञान-परंपरा से लेकर योग, दर्शन, आयुर्वेद, भाषा, गणित और खगोल जैसे विषयों तक भारतीय चिंतन की अनेक धाराएं ऋषि-मुनियों की परंपरा से जुड़ी रही हैं। इसलिए ऋषि पंचमी केवल अतीत का स्मरण नहीं, बल्कि ज्ञान और जिज्ञासा का उत्सव भी है।

ऋषि पंचमी पर सप्तर्षियों का विशेष रूप से पूजन किया जाता है।

ऋषि कश्यप को सृष्टि और प्राणी-जगत से संबंधित परंपराओं से जोड़ा जाता है।

ऋषि अत्रि तप और ज्ञान के प्रतीक माने जाते हैं।

ऋषि भारद्वाज विद्या और अध्ययन की परंपरा से जुड़े हैं।

ऋषि विश्वामित्र का जीवन तप और साधना द्वारा आत्मपरिवर्तन की प्रेरणा देता है।

ऋषि गौतम की परंपरा तर्क और दर्शन से जुड़ी है।

ऋषि जमदग्नि तप और ज्ञान के प्रतीक हैं,

ऋषि वशिष्ठ राजधर्म और आध्यात्मिक मार्गदर्शन की महान परंपरा का प्रतिनिधित्व करते हैं।

इन सभी ऋषियों का स्मरण हमें यह संदेश देता है कि समाज की वास्तविक शक्ति केवल धन और सत्ता में नहीं, बल्कि ज्ञान, चरित्र और विवेक में होती है। इस दिन श्रद्धालु प्रातः स्नान करके स्वच्छ वस्त्र धारण करते हैं और सप्तर्षियों का पूजन करते हैं। विभिन्न क्षेत्रों और परिवारों में व्रत एवं पूजा-विधि अलग-अलग हो सकती है। कई स्थानों पर महिलाएं विशेष श्रद्धा के साथ यह व्रत करती हैं। व्रत का व्यापक अर्थ केवल भोजन का त्याग करना नहीं है। भारतीय संस्कृति में व्रत एक संकल्प और आत्मसंयम से जुड़ा हुआ है। इसका उद्देश्य व्यक्ति को अपनी इच्छाओं, आदतों और व्यवहार पर नियंत्रण रखने की प्रेरणा देना है।

इस दृष्टि से ऋषि पंचमी हमें अपने जीवन की समीक्षा करने का अवसर देती है—**क्या हमारे विचार शुद्ध हैं? क्या हमारा व्यवहार दूसरों के प्रति सम्मानपूर्ण है? क्या हम अपने कर्तव्यों को ईमानदारी से निभाते हैं? क्या हम अपनी गलतियों को स्वीकार करके उनमें सुधार करने का प्रयास करते हैं?** ऋषि पंचमी का व्रत अनेक क्षेत्रों में महिलाओं द्वारा विशेष रूप से किया जाता रहा है। इसके साथ मासिक धर्म और शुचिता से संबंधित कुछ पारंपरिक मान्यताएं भी जुड़ी हैं।

आधुनिक समय में इस विषय को वैज्ञानिक दृष्टिकोण और महिलाओं के सम्मान के साथ समझना आवश्यक है। मासिक धर्म एक प्राकृतिक जैविक प्रक्रिया है। इसलिए आज ऋषि पंचमी को महिलाओं में अपराधबोध उत्पन्न करने के बजाय स्वास्थ्य,

स्वच्छता, आत्मसम्मान और जागरूकता से जोड़ना अधिक सार्थक होगा। माता अरुंधती का स्मरण भी इस अवसर पर महत्वपूर्ण है। वे भारतीय परंपरा में ज्ञान, निष्ठा, गरिमा और आदर्श दांपत्य की प्रतीक मानी जाती हैं। इससे यह संदेश मिलता है कि भारतीय संस्कृति में नारी के योगदान और सम्मान का भी महत्वपूर्ण स्थान है।

भारतीय संस्कृति में गुरु का स्थान अत्यंत ऊंचा माना गया है। गुरु केवल पुस्तक का ज्ञान देने वाला व्यक्ति नहीं, बल्कि जीवन को सही दिशा देने वाला मार्गदर्शक भी माना गया है। ऋषि पंचमी के अवसर पर हमें अपने माता-पिता, गुरुजनों, शिक्षकों और उन सभी व्यक्तियों के प्रति कृतज्ञ होना चाहिए जिन्होंने हमारे जीवन में ज्ञान और संस्कार का प्रकाश फैलाया।

आज की नई पीढ़ी के लिए यह संदेश विशेष रूप से महत्वपूर्ण है कि शिक्षा केवल परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करने का माध्यम नहीं है। शिक्षा का उद्देश्य विवेक, चरित्र, जिम्मेदारी और समाजोपयोगी दृष्टिकोण विकसित करना भी है। ऋषि परंपरा का प्रकृति से गहरा संबंध रहा है। प्राचीन आश्रमों और गुरुकुलों की कल्पना प्रकृति के बीच शिक्षा और साधना से जुड़ी रही है।

आज पर्यावरण प्रदूषण, जल संकट, वनों की कमी और जलवायु परिवर्तन जैसी चुनौतियां हमारे सामने हैं। ऐसे समय में ऋषि पंचमी हमें प्रकृति के प्रति अपनी जिम्मेदारी याद दिला सकती है। इस अवसर पर पौधारोपण करना, जल बचाना, स्वच्छता रखना और प्राकृतिक संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग करना पर्व को सामाजिक सरोकार से जोड़ने का सुंदर माध्यम बन सकता है।

आज विज्ञान और तकनीक ने हमारे जीवन को पूरी तरह बदल दिया है। हमारे हाथ में पूरी दुनिया की जानकारी उपलब्ध है, लेकिन जानकारी और ज्ञान में अंतर है। सही ज्ञान के लिए विवेक, चिंतन और सत्य की खोज आवश्यक है।

ऋषि पंचमी हमें यही प्रेरणा देती है कि हम केवल सूचनाओं के उपभोक्ता न बनें, बल्कि जिज्ञासु, विवेकशील और जिम्मेदार नागरिक बनें। डिजिटल युग में हमें अफवाहों और अपुष्ट सूचनाओं को आगे बढ़ाने के बजाय सत्य की जांच करने की आदत विकसित करनी चाहिए। यही आधुनिक समय में ऋषि परंपरा की सार्थक व्याख्या हो सकती है।

आज के युवाओं के सामने शिक्षा, रोजगार, प्रतियोगिता और तकनीकी बदलाव की अनेक चुनौतियां हैं। ऋषियों का जीवन उन्हें सिखाता है कि सफलता के लिए केवल प्रतिभा पर्याप्त नहीं है; उसके साथ अनुशासन, निरंतर अध्ययन, धैर्य और परिश्रम भी आवश्यक हैं। युवाओं को अपनी परंपरा को जानना चाहिए, लेकिन साथ ही आधुनिक विज्ञान और तकनीक को भी अपनाना चाहिए। परंपरा हमें अपनी जड़ों से जोड़ती है और आधुनिक ज्ञान हमें भविष्य के लिए तैयार करता है।

ऋषि पंचमी का सबसे सुंदर संदेश आत्मशुद्धि है। मनुष्य यदि अपने भीतर के क्रोध, ईर्ष्या, अहंकार और द्वेष को कम करने का प्रयास करे तथा सत्य, सेवा, करुणा और संयम को जीवन में अपनाए, तो उसका प्रभाव उसके परिवार और समाज पर भी पड़ता है। इसलिए ऋषि पंचमी पर केवल बाहरी पूजा न करें, बल्कि अपने भीतर भी झांकें। एक बुरी आदत छोड़ने और एक अच्छी आदत अपनाने का संकल्प लें। किसी जरूरतमंद की सहायता करें। अपने गुरुजनों और बुजुर्गों का सम्मान करें। प्रकृति की रक्षा का संकल्प लें।

ऋषि पंचमी भारतीय सनातन संस्कृति का एक ऐसा पर्व है जो हमें ज्ञान, तप, संयम, गुरु-परंपरा, प्रकृति और लोककल्याण से जोड़ता है। सप्तर्षियों का स्मरण केवल धार्मिक परंपरा नहीं, बल्कि हमारी हजारों वर्षों पुरानी ज्ञान-साधना के प्रति कृतज्ञता का प्रतीक है।

आज आवश्यकता है कि हम ऋषियों को केवल पूजा तक सीमित न रखें, बल्कि उनके जीवन से प्रेरणा लेकर ज्ञान की खोज करें, सत्य का सम्मान करें, अपने कर्तव्य को ईमानदारी से निभाएं और समाज के लिए उपयोगी बनें।

आइए, इस ऋषि पंचमी पर हम संकल्प लें—

ज्ञान को जीवन का आधार बनाएंगे, गुरुजनों का सम्मान करेंगे, प्रकृति की रक्षा करेंगे, नारी की गरिमा का सम्मान करेंगे, अपने आचरण को बेहतर बनाएंगे और अपने ज्ञान एवं कर्म से समाज और राष्ट्र के कल्याण में योगदान देंगे।

यही ऋषि पंचमी की सच्ची भावना है। "ऋषियों की परंपरा हमें ज्ञान का प्रकाश देती है, और वही प्रकाश हमारे वर्तमान को दिशा देकर भविष्य को उज्ज्वल बनाने की प्रेरणा देता है।"

ऋषि पंचमी की हार्दिक शुभकामनाएं।

****

अंगिरा ऋषि जयंती : वैदिक ज्ञान, तप और मानव कल्याण की महान परंपरा

प्रवीण कुमार शर्मा , मुख्य चुनाव अधिकारी-महासभा



भारतीय सनातन संस्कृति में ऋषि-मुनियों का स्थान अत्यंत ऊँचा है। उन्होंने अपने तप, त्याग, साधना और ज्ञान के माध्यम से समाज को जीवन जीने की श्रेष्ठ दिशा प्रदान की। ऐसे ही महान वैदिक ऋषियों में महर्षि अंगिरा का नाम अत्यंत श्रद्धा और सम्मान के साथ लिया जाता है। अंगिरा ऋषि जयंती हमें केवल एक महान ऋषि का स्मरण कराने वाला अवसर नहीं है, बल्कि यह ज्ञान, तपस्या, सदाचार, सत्य और लोक कल्याण के आदर्शों को अपने जीवन में उतारने की प्रेरणा देती है। महर्षि अंगिरा का उल्लेख वेदों, पुराणों और विभिन्न वैदिक ग्रंथों में मिलता है। उन्हें सप्तर्षियों में प्रमुख स्थान प्राप्त महान ऋषि माना जाता है। अग्नि, यज्ञ, मंत्र और आध्यात्मिक साधना से जुड़ी वैदिक परंपरा में उनका विशेष योगदान माना जाता है।

भारतीय चिंतन परंपरा में आंगिरा ऋषि केवल आध्यात्मिक पुरुष ही नहीं, बल्कि ज्ञान और अनुसंधान की परंपरा के प्रतिनिधि भी माने जाते हैं। महर्षि अंगिरा का जीवन इस बात का प्रतीक है कि मनुष्य की वास्तविक शक्ति उसके बाहरी साधनों में नहीं, बल्कि उसके ज्ञान, आत्मसंयम और तप में निहित होती है। ऐसे समय में आंगिरा ऋषि की परंपरा हमें आत्मचिंतन और संयम का मार्ग दिखाती है। ज्ञान तभी सार्थक है जब उससे व्यक्ति का जीवन बेहतर हो और समाज को नई दिशा मिले।

आज शिक्षा के विस्तार के साथ हमें इस विचार को अपनाने की आवश्यकता है कि शिक्षा केवल रोजगार प्राप्त करने का माध्यम न बने, बल्कि चरित्र निर्माण, कर्तव्यबोध और राष्ट्र निर्माण का आधार भी बने। सनातन संस्कृति में ऋषि परंपरा का एक महत्वपूर्ण संदेश है—संस्कारवान परिवार ही मजबूत समाज की आधारशिला है।

अंगिरा ऋषि से जुड़ी परंपराएँ हमें परिवार में बड़ों के सम्मान, छोटों के प्रति स्नेह, सत्यनिष्ठा और कर्तव्यपालन की प्रेरणा देती हैं। आज संयुक्त परिवारों के विघटन और व्यस्त जीवनशैली के कारण कई बार परिवार के सदस्यों के बीच संवाद कम होता जा रहा है। अंगिरा ऋषि जयंती के अवसर पर हमें संकल्प लेना चाहिए कि हम अपने परिवार में प्रेम, सम्मान और संस्कारों को मजबूत करेंगे तथा नई पीढ़ी को अपनी संस्कृति और परंपराओं से जोड़ेंगे। महर्षि अंगिरा का जीवन युवाओं को अध्ययन, अनुशासन, परिश्रम और आत्मविश्वास का संदेश देता है। युवा यदि अपने समय का सदुपयोग करें, ज्ञान प्राप्त करें, नशे और बुरी आदतों से दूर रहें तथा राष्ट्र और समाज के प्रति अपने कर्तव्यों को समझें, तो भारत को विकसित और सशक्त राष्ट्र बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं।

वैदिक जीवन-पद्धति में यज्ञ केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं था, बल्कि उसमें त्याग, सहयोग और प्रकृति के प्रति कृतज्ञता की भावना भी निहित थी। अंगिरस परंपरा का वैदिक साहित्य से गहरा संबंध इस व्यापक दृष्टिकोण की याद दिलाता है। यदि हम प्रकृति को केवल उपभोग की वस्तु न मानकर जीवन का आधार समझें, तो यही हमारी ऋषि परंपरा के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। ऋषि परंपरा हमें "मैं" से आगे बढ़कर "हम" की भावना अपनाने की प्रेरणा देती है।

अंगिरा ऋषि जयंती के अवसर पर समाज में शिक्षा, संस्कार, सेवा, संगठन और परस्पर सहयोग को बढ़ावा देने का संकल्प लिया जा सकता है। जरूरतमंदों की सहायता, विद्यार्थियों को प्रोत्साहन, बुजुर्गों का सम्मान और समाज के कमजोर वर्गों के प्रति संवेदनशीलता- ये सभी ऋषि परंपरा की लोककल्याणकारी भावना को आगे बढ़ाने के माध्यम हैं। अंगिरा ऋषि जयंती केवल पूजा और धार्मिक आयोजन तक सीमित न रहे। इस अवसर पर हम संकल्प लें कि— सत्य और सदाचार को अपने जीवन का आधार बनाएँगे। शिक्षा और ज्ञान को समाज के हित में उपयोग करेंगे। परिवार में संस्कार और आपसी सम्मान बढ़ाएँगे। युवाओं को सकारात्मक दिशा देने का प्रयास करेंगे। प्रकृति और पर्यावरण की रक्षा करेंगे। समाज में एकता, सहयोग और सेवा की भावना मजबूत करेंगे। अपनी वैदिक और सांस्कृतिक विरासत को नई पीढ़ी तक पहुँचाएँगे।

महर्षि अंगिरा भारतीय ऋषि परंपरा के उन महान प्रकाश-स्तंभों में हैं, जिनकी स्मृति हमें ज्ञान, तप, अनुशासन और लोककल्याण की राह दिखाती है। उनकी जयंती का वास्तविक उद्देश्य तभी पूर्ण होगा, जब हम उनके आदर्शों को केवल स्मरण न करें, बल्कि अपने आचरण में भी उतारें। यही हमारी सनातन संस्कृति की शक्ति है और यही आने वाली पीढ़ियों के लिए हमारी सबसे बड़ी विरासत भी है। महर्षि अंगिरा को शत-शत नमन। उनकी ज्ञान, तप और लोककल्याण की परंपरा सदैव मानव समाज को प्रकाश देती रहे।

****

संगठन से समाजोत्थान की ओर-

सुनील कुमार जांगिड, प्रवक्ता - जिला सभा सीकर



समाज और उसके उत्थान के लिए सहभागिता परम आवश्यक है। समाजहित के कार्य में व्यक्ति को अपने समय, श्रम, सामर्थ्य, विचार और संवेदना का योगदान देना पड़ता है। आज आवश्यकता है कि हम स्वयं से एक प्रश्न पूछें—**मैंने समाज से क्या पाया?** लेकिन इससे भी बड़ा प्रश्न है— **मैंने समाज को क्या दिया?** यही प्रश्न किसी भी सामाजिक कार्यकर्ता के आत्ममंथन का आधार होना चाहिए।

यदि हम संगठन से केवल अपनी अपेक्षाएँ रखते हैं, अपने लिए सम्मान, पद और प्रतिष्ठा चाहते हैं, लेकिन **संगठन के लिए अपना समय नहीं देते, नए सदस्यों को नहीं जोड़ते, समाज के अंतिम व्यक्ति तक नहीं पहुँचते और अपनी सामर्थ्य के अनुसार सहयोग नहीं करते, तो हमें स्वयं विचार करना होगा कि हम वास्तव में संगठन के लिए कार्य कर रहे हैं या केवल संगठन से अपने लिए कुछ प्राप्त करना चाहते हैं।**

सच्ची समाजसेवा वहीं से प्रारम्भ होती है जहाँ **'मैं'** समाप्त होकर **'हम'** प्रारम्भ होता है। इसके लिए समय, समर्पण और समभाव की जरूरत होती है। संगठन को मजबूत करने के लिए तीन शब्द हमारे जीवन का मूल मंत्र बनने चाहिए—**समय, समर्पण और समभाव।** समय इसलिए कि समाज के लिए कुछ करना है तो समय देना ही होगा। समर्पण इसलिए कि आधे-अधूरे मन से कोई बड़ा सामाजिक परिवर्तन संभव नहीं और समभाव इसलिए कि संगठन में छोटे-बड़े, समर्थ-असमर्थ, वरिष्ठ-कनिष्ठ, गाँव-शहर अथवा किसी भी प्रकार के भेद के बिना प्रत्येक व्यक्ति को सम्मान और सहभागिता का अवसर मिले। **संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।**

अर्थात्—साथ चलें, साथ संवाद करें और हमारे मन एक दिशा में चलें। यही संगठन का मूल दर्शन है। संगठन में किसी एक व्यक्ति का सर्वेसर्वा होना संगठन की शक्ति नहीं, उसकी कमजोरी है। संगठन तब मजबूत होता है जब हर व्यक्ति स्वयं को महत्वपूर्ण समझे और हर कार्यकर्ता स्वयं को उत्तरदायी माने। पद व्यक्ति को बड़ा नहीं बनाता, व्यक्ति का कर्तव्यबोध पद को बड़ा बनाता है। किसी संगठन की सफलता तभी मानी जा सकती है जब उसकी पहुँच केवल कागजों पर नहीं, बल्कि समाज के अंतिम व्यक्ति तक हो। संगठन का ढाँचा— केंद्र — राज्य — जिला — तहसील — शाखा सभा — गाँव — परिवार — व्यक्ति तक सक्रिय और जीवंत होना चाहिए। हर गाँव में संगठन की सहभागिता हो। हर परिवार को संगठन की गतिविधियों से जोड़ा जाए। प्रत्येक व्यक्ति को यह अनुभव हो कि महासभा कोई दूर बैठी हुई संस्था नहीं, बल्कि हमारे अपने समाज की सामूहिक शक्ति है।

यदि डेढ़ लाख सदस्यों की बात होती है, तो हमें केवल संख्या पर संतुष्ट नहीं होना चाहिए। हमें यह देखना चाहिए कि उन सदस्यों में कितने वास्तव में सक्रिय हैं, कितनों ने नए सदस्य बनाए, कितनों ने समाज के किसी परिवार की सहायता की और कितनों ने संगठन को आगे बढ़ाने के लिए अपना समय दिया। सदस्य संख्या संगठन का आकार बताती है, लेकिन सक्रिय सदस्य संगठन की शक्ति बताते हैं।

सदस्यता – शुल्क नहीं, जिम्मेदारी: यदि कोई आर्थिक रूप से सक्षम व्यक्ति महासभा की सदस्यता के लिए ₹500 जैसी सामान्य राशि भी स्वयं देने को तैयार नहीं है, तो यह केवल राशि का प्रश्न नहीं है; यह उसके संगठन के प्रति जुड़ाव और जिम्मेदारी का प्रश्न है। हमें ऐसी मानसिकता बदलनी होगी। हमे इस सोच के साथ आगे बढ़ना होगा कि समाज हमारा है, संगठन हमारा है और उसकी जिम्मेदारी भी हमारी है। हर सक्षम व्यक्ति को स्वयं सदस्य बनना चाहिए और कम से कम कुछ नए सदस्यों को जोड़ने का लक्ष्य रखना चाहिए।

हर पदाधिकारी और कार्यकर्ता स्वयं से पूछे— **मैंने कितने नए सदस्य बनाए? कितने परिवारों को संगठन से जोड़ा? कितने युवाओं को प्रेरित किया? कितनी महिलाओं को सहभागिता के लिए आगे लाया? कितने ऐसे परिवारों तक पहुँचा जो संगठन से दूर हैं? समाज के लिए मैंने अपना कितना समय दिया?** यदि प्रत्येक व्यक्ति वर्ष में केवल कुछ परिवारों को संगठन से जोड़ने का संकल्प ले ले, तो संगठन की शक्ति कई गुना बढ़ सकती है।

नेतृत्व का अर्थ अधिकार नहीं, दायित्व: सामाजिक नेतृत्व का अर्थ यह नहीं कि व्यक्ति कहे **"मैं ही सर्वेसर्वा हूँ।"** वास्तविक नेतृत्व वह है जो दूसरों को आगे बढ़ाए। जो स्वयं से अधिक संगठन को महत्व दे। जो स्वयं से अधिक समाज की चिंता करे। जो अंतिम पंक्ति के व्यक्ति को मंच की पहली पंक्ति तक लाने का प्रयास करे। जो अपने बाद दस नए कार्यकर्ता तैयार करे। जिस नेतृत्व के बाद संगठन कमजोर हो जाए, वह नेतृत्व नहीं; जो नेतृत्व अपने बाद भी संगठन को मजबूत छोड़ जाए, वही वास्तविक नेतृत्व है। अतः हमें व्यक्ति-केंद्रित संगठन से आगे बढ़कर व्यवस्था-केंद्रित, विचार-केंद्रित और समाज-केंद्रित संगठन की ओर बढ़ना होगा।

"मैं समाज के लिए, समाज मेरे लिए, यह केवल एक स्लोगन नहीं, बल्कि सामाजिक जीवन का दर्शन है। जब मैं समाज के लिए खड़ा होता हूँ, तब आवश्यकता पड़ने पर समाज मेरे लिए खड़ा होता है। जब मैं किसी परिवार के सुख में सहभागी होता हूँ, तो समाज मेरे सुख में सहभागी बनता है। जब मैं किसी पीड़ित के दुःख में उसके साथ खड़ा होता हूँ, तो समाज मेरे दुःख में मेरे साथ खड़ा होता है। यही

सामाजिक पूँजी है। इसलिए हमें समाज को केवल सुविधा प्राप्त करने का माध्यम नहीं, बल्कि साझी जिम्मेदारी और साझी संवेदना का परिवार मानना होगा।

शिक्षा हो, लेकिन संस्कारों के साथ: आज शिक्षा का विस्तार हुआ है, लेकिन केवल डिग्री प्राप्त करना पर्याप्त नहीं है।हमारा स्पष्ट संदेश होना चाहिए- **"संस्कार विहीन शिक्षा विष समान, धर्म-संस्कृति का रहे ध्यान।"** शिक्षा मनुष्य को ज्ञान दे, संस्कार उसे दिशा दें और संस्कृति उसे अपनी जड़ों से जोड़े। यदि कोई व्यक्ति बहुत पढ़ा-लिखा है लेकिन माता-पिता का सम्मान नहीं करता, समाज के प्रति दायित्व नहीं समझता, अपनी संस्कृति से विमुख है और अपने ज्ञान का उपयोग केवल व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए करता है, तो उसकी शिक्षा अधूरी है। हमें ऐसी शिक्षा चाहिए जिसमें, ज्ञान हो, विज्ञान हो, कौशल हो, चरित्र हो, संस्कार हो और सामाजिक उत्तरदायित्व हो।

नौकरी के पीछे नहीं, आत्मनिर्भरता की ओर: हमारे युवाओं को शिक्षा के साथ स्वरोजगार और उद्यमिता की दिशा में भी आगे बढ़ना होगा। हर युवा सरकारी अथवा निजी नौकरी की प्रतीक्षा करे—यह स्थायी समाधान नहीं है। हमें ऐसे युवा चाहिए जो स्वयं रोजगार प्राप्त करें और आगे चलकर दूसरों को रोजगार देने वाले बनें। इसके लिए—तकनीकी शिक्षा, व्यावसायिक प्रशिक्षण, आधुनिक कृषि, उद्योग, व्यापार, सेवा क्षेत्र, डिजिटल व्यवसाय, स्टार्टअप, पारंपरिक कौशल का आधुनिक रूपांतरण जैसे क्षेत्रों में युवाओं को प्रोत्साहित करना चाहिए। शिक्षा + कौशल + संस्कार + उद्यमिता = स्वावलंबी समाज। आर्थिक स्वावलंबन से ही सामाजिक स्वाभिमान मजबूत होता है। स्वाभिमान और स्वावलंबन: किसी समाज की वास्तविक शक्ति उसकी संख्या से अधिक उसकी आर्थिक आत्मनिर्भरता, शिक्षा और संगठनात्मक एकता में होती है। हमें अपने युवाओं को यह विश्वास देना होगा कि—मैं किसी अवसर की प्रतीक्षा मात्र नहीं करूँगा; मैं अवसर पैदा करूँगा। मैं केवल नौकरी माँगने वाला नहीं, रोजगार देने वाला बनूँगा। मैं अपने परिवार को सक्षम बनाऊँगा और समाज को भी सक्षम बनाने में योगदान दूँगा। यही स्वाभिमान है।

सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध सामूहिक संकल्प: समाज की प्रगति केवल नए भवन बनाने या बड़े कार्यक्रम करने से नहीं होगी। हमें समाज के भीतर व्याप्त उन प्रवृत्तियों पर भी चिंतन करना होगा जो व्यक्ति और परिवार दोनों को कमजोर करती हैं। विशेष रूप से मद्यपान और नशे जैसी बुराइयाँ परिवार की आर्थिक स्थिति, स्वास्थ्य, मानसिक शांति और सामाजिक प्रतिष्ठा को प्रभावित करती हैं। हमें केवल यह नहीं कहना चाहिए कि नशा छोड़ो; हमें यह भी प्रयास करना चाहिए कि जो व्यक्ति मार्ग से भटक गया है, उसे तिरस्कार नहीं, सही दिशा मिले। **"उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत्।"** अर्थात मनुष्य स्वयं को ऊपर उठाए, स्वयं को नीचे न गिराए। समाज का दायित्व केवल अच्छे लोगों को सम्मान देना नहीं, बल्कि भटके हुए व्यक्ति को भी सही राह दिखाना है।

सामूहिक विवाह – सामाजिक परिवर्तन का माध्यम: विवाह केवल दो व्यक्तियों का नहीं, दो परिवारों का और व्यापक अर्थ में दो सामाजिक इकाइयों का मिलन है। आज आवश्यकता है कि विवाह को अनावश्यक दिखावे, प्रतिस्पर्धा और आर्थिक बोझ से मुक्त किया जाए और सामूहिक विवाह को बढ़ावा दिया जाए। इस अभियान का संदेश जन-जन तक पहुँचना चाहिए। विशेषकर उन परिवारों तक पहुँचना आवश्यक है जिनके विवाह योग्य पुत्र-पुत्रियाँ विवाह की प्रतीक्षा में हैं।

समाज में अनेक बेटियाँ 25, 30 और उससे अधिक आयु तक विवाह की प्रतीक्षा करती रह जाती हैं। इसके पीछे अनेक पारिवारिक, आर्थिक अथवा सामाजिक कारण हो सकते हैं। हमें आलोचना नहीं, सहयोग और समाधान का रास्ता अपनाना चाहिए। विवाह के विषय में परिवारों के बीच संवाद, उचित परिचय, समय पर निर्णय और सामाजिक सहयोग का वातावरण बनाना आवश्यक है। इस अभियान में प्रत्येक समाजबंधु को— तन से, मन से और धन से सहयोग करना चाहिए।

नारी शक्ति की सहभागिता: समाज निर्माण में नारी की भूमिका को केवल परिवार तक सीमित करके नहीं देखा जा सकता। नारी परिवार की संस्कार-शाला है, लेकिन वह संगठन की सक्रिय शक्ति भी है। महिलाओं को संगठनात्मक गतिविधियों, शिक्षा, कौशल विकास, सामाजिक जागरण, विवाह सुधार, नशामुक्ति और परिवार सुदृढ़ीकरण के अभियानों में आगे लाना होगा। जिस समाज की नारी जागरूक, शिक्षित और आत्मनिर्भर होती है, उसकी आने वाली पीढ़ियाँ अधिक मजबूत होती हैं।

संयुक्त परिवार – हमारी सामाजिक शक्ति: भारतीय समाज की सबसे बड़ी विशेषताओं में से एक रही है—संयुक्त परिवार व्यवस्था। आज इसके विखंडन पर गंभीर चिंतन आवश्यक है। संयुक्त परिवार केवल एक छत के नीचे रहने का नाम नहीं है। यह साझी जिम्मेदारी, पारस्परिक सहयोग, संस्कार, सुरक्षा और अनुभवों के हस्तांतरण की व्यवस्था है। परिवार की आय और संसाधनों का बेहतर उपयोग होता है। संकट के समय एक व्यक्ति अकेला नहीं पड़ता।

बच्चों को दादा-दादी का सान्निध्य मिलता है, युवाओं को वरिष्ठों का मार्गदर्शन मिलता है और बुजुर्गों को परिवार का भावनात्मक सहारा मिलता है। संयुक्त परिवार में सामाजिक संबंध मजबूत रहते हैं। सुख-दुःख में परिवार एक साथ खड़ा होता है। बच्चों को पुस्तकों से ही नहीं, जीवन के अनुभवों से संस्कार मिलते हैं।

परिवार समाज में अधिक प्रभावी भूमिका निभाते हैं। परिवार संगठित होंगे तो समाज संगठित होगा और समाज संगठित होगा तो उसकी सामाजिक एवं राजनीतिक भागीदारी भी मजबूत होगी। हमें संयुक्त परिवार की मूल भावना को बचाते हुए आधुनिक परिस्थितियों के अनुरूप सम्मान, स्वतंत्रता, संवाद और जिम्मेदारी का संतुलन बनाना होगा।

क्रमशः अगले अंक मे ..

🙏 महासभा की विनम्र अपील 🙏

समाज की वास्तविक संख्या के लिए—जनगणना में मुख्य जाति के रूप में केवल "जांगिड" लिखें।

प्रिय समाज बंधुओं,

वर्तमान मे देश मे चल रही जनगणना हमारे समाज के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण अवसर है। जनगणना में दर्ज होने वाली संख्या केवल एक आंकड़ा नहीं होती, बल्कि वह समाज की वास्तविक जनसंख्या, सामाजिक स्थिति और भविष्य की योजनाओं के लिए महत्वपूर्ण आधार बनती है।

हमारी जनसंख्या सम्मानजनक संख्या में होते हुए भी अलग-अलग स्थानों पर अलग-अलग नामों से पहचान लिखे जाने के कारण हमारी वास्तविक संख्या एक साथ दिखाई नहीं पड़ती। देश के विभिन्न प्रांतों और क्षेत्रों में हमारे समाज के लोगों को अलग-अलग स्थानीय नामों से पुकारा जाता रहा है। इसके परिणामस्वरूप हमारी सामूहिक जनसंख्या का सही आंकड़ा सामने नहीं आ पाता।

अत: अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा की ओर से सभी समाजबंधुओं से विनम्र अपील है कि आप देश के किसी भी प्रांत, जिले या क्षेत्र में रहते हों, जनगणना फॉर्म में अपनी मुख्य जाति के रूप में केवल **"जांगिड"** लिखें। हमारी पहचान अनेक स्थानीय नामों से हो सकती है, लेकिन हमारी सामाजिक एकता और सामूहिक पहचान को मजबूत करने के लिए **"जांगिड"** नाम को मुख्य जाति के रूप में दर्ज करना आवश्यक है।

आपका यह छोटा-सा प्रयास आने वाली पीढ़ियों के लिए बहुत बड़ा योगदान सिद्ध हो सकता है। जनगणना में **"जांगिड"** नाम के अंतर्गत हमारी वास्तविक संख्या स्पष्ट रूप से सामने आएगी और समाज की सामाजिक, शैक्षणिक एवं विकास संबंधी आवश्यकताओं को समझने और उनके लिए योजनाबद्ध प्रयास करने में भी सहायता मिलेगी।

आइए, हम सभी मिलकर इस महायज्ञ में अपनी आहुति दें। अपने परिवार, रिश्तेदारों और समाजबंधुओं को भी इसके लिए जागरूक करें और सुनिश्चित करें कि जनगणना में हमारी मुख्य जातीय पहचान **"जांगिड"** के रूप में दर्ज हो।

आपका एक प्रयास—समाज की आने वाली पीढ़ियों के लिए अमूल्य योगदान।

सादर,

रामपाल शर्मा - प्रधान

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा

डायरी का सच.....



हर सुबह बहू से चश्मा साफ करवाता था ससुर, मौत के दो साल बाद डायरी खुली तो सामने आया ऐसा सच कि बहू फूट-फूटकर रो पड़ी।



एक घर में नई-नवेली बहू बड़े पद पर एक निजी बैंक में नौकरी करती थी। नौकरी अच्छी थी, लेकिन जिम्मेदारियां भी कम नहीं थीं। सुबह जल्दी उठना, घर का काम निपटाना, तैयार होना और समय पर ऑफिस पहुंचना उसकी रोज की दिनचर्या थी। घर में उसके पति और बुजुर्ग ससुर के अलावा कोई नहीं था। उसकी सास का करीब एक साल पहले ही निधन हो चुका था। ससुर उम्रदराज थे और उनका ज्यादातर समय घर पर ही बीतता था।

शुरुआत में बहू अपने ससुर का पूरा ध्यान रखती थी। उनके खाने-पीने से लेकर दवाइयों और दूसरी जरूरतों का ख्याल रखती थी। लेकिन कुछ दिनों बाद उसने ससुर की एक आदत नोटिस की।

हर सुबह जब वह ऑफिस जाने के लिए तैयार होकर घर से निकलने लगती, ठीक उसी समय ससुर उसे आवाज देते- **"बहू, जरा मेरा चश्मा साफ करके देती जा।"** बहू रुकती, चश्मा लेती और साफ करके ससुर को दे देती। पहले उसे इसमें कोई परेशानी नहीं हुई। लेकिन रोज यही होने लगा।

कभी उसे ऑफिस के लिए देर हो रही होती, कभी जरूरी मीटिंग होती, कभी रास्ते में ट्रैफिक का डर होता। फिर भी ससुर की आवाज आती- **"बहू, मेरा चश्मा साफ कर देना।"** बहू मन ही मन झुंझला जाती।

वह सोचती- **"सुबह से काम में लगी हूँ। चश्मा भी क्या सुबह ही साफ करवाना जरूरी है?"** लेकिन ससुर बुजुर्ग थे, इसलिए वह कुछ कह नहीं पाती। एक दिन आखिरकार उसने यह बात अपने पति को बता दी।

उसने कहा- "पता नहीं पिताजी को क्या हो गया है। मैं रोज ऑफिस के लिए निकलती हूँ और उसी समय उन्हें अपना चश्मा साफ करवाना याद आता है। "पति ने कुछ देर सोचा और फिर मुस्कुराकर कहा- "ऐसा करो, सुबह उठते ही उनका चश्मा साफ करके उनके कमरे में रख दिया करो। फिर शायद रोज तुम्हें आवाज नहीं देंगे।"बहू ने भी यही सोचा कि इससे समस्या खत्म हो जाएगी।

अगली सुबह उसने उठते ही ससुर का चश्मा अच्छी तरह साफ किया और उनके कमरे में रख दिया। फिर वह अपने काम में लग गई। उसे लगा आज तो समय पर ऑफिस निकल जाएगी। लेकिन जैसे ही वह दरवाजे से निकलने लगी, पीछे से वही आवाज आई- **"बहू... जरा मेरा चश्मा साफ करके देती जा।"**

बहू एक पल के लिए रुक गई। उसे गुस्सा भी आया। वह मन ही मन सोचने लगी- **"मैं अभी तो साफ करके रखकर आई हूँ!"** लेकिन उसने कुछ नहीं कहा। वह वापस गई, चश्मा उठाया और ससुर को साफ करके दे दिया।अब यह रोज का सिलसिला बन गया। बहू ने कई बार कोशिश की कि किसी तरह यह आदत खत्म हो जाए। कभी वह चश्मा रात में साफ करके रखती। कभी सुबह जल्दी साफ करती। कभी पति से कहती कि आप पिताजी को समझाइए। लेकिन ससुर हर सुबह उसे जरूर बुलाते। धीरे-धीरे बहू ने उस बात को गंभीरता से लेना बंद कर दिया। अब ससुर आवाज देते तो वह चुपचाप चश्मा साफ कर देती। फिर कुछ समय बाद उसने जवाब देना भी कम कर दिया। ससुर कुछ कहते तो बहू अपने काम में लगी रहती।

समय बीतता गया। महीने गुजरते गए। फिर एक दिन वह खबर आई, जिसका घर में किसी ने कल्पना नहीं की थी। बुजुर्ग ससुर का निधन हो गया। घर में सन्नाटा छा गया। बहू को भी दुख हुआ, लेकिन जिंदगी अपनी रफ्तार से चलती रही।

समय बीतता गया। करीब दो साल बाद एक छुट्टी के दिन बहू घर की सफाई कर रही थी। पुरानी चीजें हटाते समय उसे ससुर की एक डायरी मिली। उसने डायरी उठाई और यूं ही उसके पन्ने पलटने लगी। कई पन्नों पर रोजमर्रा की छोटी-छोटी बातें लिखी थीं।

फिर अचानक उसकी नजर एक तारीख पर जाकर रुक गई। उस पन्ने पर लिखा था- **"मेरी प्यारी बहू..."बहू आगे पढ़ने लगी। ससुर ने लिखा था कि आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में बच्चे अक्सर घर से निकलते समय बड़ों का आशीर्वाद लेना भूल जाते हैं।**

फिर उन्होंने लिखा- "जब मेरी बहू रोज ऑफिस जाने से पहले मेरा चश्मा साफ करने के लिए मेरे सामने झुकती है, तब मैं मन ही मन अपना हाथ उसके सिर पर रखकर उसे आशीर्वाद देता हूँ।" बहू की आंखें वहीं ठहर गईं उसके हाथ कांपने लगे।



डायरी में आगे लिखा था- "तुम्हारी सास ने मरने से पहले मुझसे कहा था कि हमारी बहू को कभी यह महसूस मत होने देना कि वह इस घर में पराई है। उसे बेटी की तरह रखना। उसकी छोटी-छोटी गलतियों को माफ कर देना और हमेशा उसका साथ देना।"बहू की आंखों से आंसू निकलने लगे। जिस काम को वह महीनों से एक परेशानी समझती रही थी, उसके पीछे तो ससुर का इतना गहरा स्नेह छिपा था। हर सुबह जब वह चश्मा साफ करने के लिए उनके सामने झुकती थी, ससुर उसके सिर पर हाथ रखकर मन ही मन उसे आशीर्वाद देते थे।

डायरी की आखिरी पंक्तियों ने तो बहू को पूरी तरह तोड़ दिया।

"मैं रहूं या न रहूं, मेरा आशीर्वाद हमेशा तुम्हारे साथ रहेगा। सदा खुश रहना, बेटी।" बहू डायरी को सीने से लगाकर फूट-फूटकर रोने लगी। उस दिन उसे पहली बार एहसास हुआ कि जिसे वह रोज की एक छोटी-सी परेशानी समझती थी, वह दरअसल उसके ससुर के प्यार और आशीर्वाद का तरीका था। जिस बुजुर्ग को वह कभी-कभी अपनी व्यस्तता के कारण अनदेखा कर देती थी, वह हर दिन उसके लिए दुआ करता था।

कहानी यहीं खत्म नहीं हुई। उस दिन के बाद बहू ने ससुर का चश्मा संभालकर रख लिया। अब वह रोज ऑफिस जाने से पहले उनका चश्मा अच्छी तरह साफ करती और उसी जगह रख देती, जहां ससुर बैठा करते थे। वह जानती थी कि वहां अब कोई उसे आवाज नहीं देगा। लेकिन उसके मन में एक उम्मीद जरूर रहती- शायद उस अदृश्य हाथ का आशीर्वाद आज भी उसके सिर पर है।

सीख:- *रिश्तों की कीमत अक्सर हमें तब समझ आती है, जब वह रिश्ता हमारे पास नहीं रहता। किसी बुजुर्ग की छोटी-सी बात को बोझ समझने से पहले यह जरूर सोचिए कि उसके पीछे कहीं आपका भला चाहने वाली कोई भावना तो नहीं छिपी है। क्योंकि कुछ आशीर्वाद शब्दों से नहीं मिलते, वे जिंदगी भर हमारे साथ रहने वाली यादों के रूप में मिलते हैं।*

श्रीगोपाल चोयल - मुख्य सलाहकार, महासभा

---

21 सितम्बर - महासभा प्रधान श्री रामपालजी का नासिक दौरा

हमारे राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रामपाल जी शर्मा ने नासिक जांगिड समाज बंधुओं के साथ श्री त्र्यंबकेश्वर ज्योतिर्लिंग के दर्शन किए और रुद्राभिषेक पूजा कर समाज के कल्याण की प्रार्थना की। इस दौरान प्रधानजी ने महाराष्ट्र प्रदेश भवन के लिये हाल ही मे खरीदे गये भूखंड का भी निरीक्षण किया। उन्होंने कहा यह भूमि 100% वास्तु के अनुसार है। उत्तर-पूर्व में प्राकृतिक झरना और सामने श्री अंजनेरी पर्वत - श्री हनुमान जी जन्मस्थली के दर्शन। यह स्थान तो स्वयं श्री विश्वकर्मा जी ने चुना है। उन्होंने कहा कि प्रदेश भवन का काम अतिशीघ्र शुरू करो, और भवन में हमारे आराध्य देव श्री विश्वकर्मा जी का भी दिव्य मंदिर स्थापित हो। अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा दिल्ली और मैं स्वयं हर तरह से आपके साथ हूँ। यह भवन पूरे हिंदुस्तान के जांगिड-सुथार समाज का आस्था केंद्र होगा।



ताराचंद बी. जांगिड कार्यकारी अध्यक्ष प्रदेश- सभा महाराष्ट्र



इस जीवन में धन और वाणी का संतुलन ही जीवन की वास्तविक कुंजी है।

कवि दूलीचंद जांगिड, सतारा महाराष्ट्र।

इस मानव जीवन की सफलता और संतोष का मुख्य पहलू यह है कि मनुष्य अपने जीवन में सकारात्मक भाव आत्मसात करते हुए, वाणी का संतुलन बनाए रखते हुए, धन का समुचित उपयोग और पारदर्शिता को बनाए रखते हुए आगे बढ़ना है। हमारे जीवन में सन्तुलन बनाए रखना पहली शर्त है। जिस प्रकार से एक दो पहिया वाहन और चार पहिया वाहन अपनी रफ्तार और सन्तुलन को बनाए रखते हुए तीव्र गति से आगे बढ़ता है उसी प्रकार से **"घर-परिवार"** की गाड़ी को संन्तुलित बनाए रखने के लिए पति-पत्नी रुपी दोनों पहियों में, सन्तुलन बना रहेगा तभी जीवन रुपी गाड़ी तीव्र गति से आगे बढ़ती रहेगी। जिस दिन यह आपसी समन्वय और सन्तुलन बिगड़ गया तो, जीवन रुपी गाड़ी की स्पीड में अवरोध उत्पन्न हो जाएगा।

इसी प्रकार से जीवन में स्त्री और पुरुष रुपी दो पहिए माने जाते हैं, ठीक इसी तरह से मनुष्य जीवन यात्रा को क्रमबद्ध और संन्तुलित ढ़ग से चलाने के लिए **"धन और शब्द"** दोनों पर नियंत्रण रखना होगा, क्योंकि कई लोगों की मान्यता है कि यह दोनों ही, धन और वाणी मनुष्य की जीवन रुपी यात्रा के दो पहिये ही माने जाते है। यह अकाट्य रुप से सत्य है कि जिस दिन एक व्यक्ति धन और वाणी इन दोनों में संतुलन बनाए रखते हुए, नियंत्रण पा लेता है, उसी दिन उसका जीवन सुख, शांति, सन्तोष और सम्मान से भर जाता है।

1. व्यर्थ का खर्चा व्यवस्था का शत्रु - मेरा यह मानना है कि आज के समय में एक मनुष्य की सबसे बड़ी समस्या है कि उसका अनावश्यक खर्च पर नियंत्रण नहीं है और छोटी-छोटी अनावश्यक चीजों पर व्यर्थ में पैसा खर्चा करने से जहां घर की तिजोरी खाली होती है, वहीं मन में बेचैनी बढ़ने के साथ ही, मानसिक शांति और संतोष का भी ह्रास होता है। व्यर्थ का खर्चा, हमारी आर्थिक व्यवस्था को बिगाड़ देने के साथ ही अनावश्यक रूप से तनाव और विषाद का कारण बन जाता है और जिससे व्यक्ति को अपना भविष्य अंधकारमय नजर आने लगता है। इसलिए शास्त्रों में कहा गया है कि पहले तोलो, फिर बोलो और पहले सोचो, फिर खर्चो। संतुलित खर्च करने वाला व्यक्ति ही, इस जीवन में सच्ची आर्थिक समृद्धि प्राप्त करने मे सक्षम होता है और साथ ही उसके पास धन भी रहता है और नींद भी।

2. व्यर्थ की चर्चा शांति का शत्रु - जैसे फिजूल पैसा खर्च करने से गरीबी आती है उसी प्रकार से, व्यर्थ की और अनावश्यक बातें करने से मन की शांति और चैन समाप्त हो जाता है। ऐसे समय में एक व्यक्ति, परनिंदा और अनावश्यक बहस और व्यर्थ की शिकायतों में उलझ कर अपनी ऊर्जा और बहू मूल्य समय दोनों ही गँवा देते हैं। लेकिन सार्थक वाणी उसी को कहा गया है, जो न केवल ज्ञान दे, अपितु प्रेरणा देने के साथ ही आपसी रिश्तों को जोड़े। ऐसा आत्मसंयमी पुरुष जो, अपनी वाणी पर संयम रखता है, वह रिश्तों में विश्वास और भरोसा पैदा करने मे सक्षम होता है। निश्चित रूप से ऐसे व्यक्ति के शब्दों में वजन होता है और लोग उसकी बात ध्यान से सुनते भी हैं और उसकी बातों को मानते भी हैं।

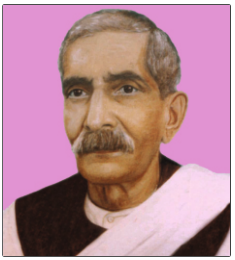
3. नियंत्रण ही सफलता का मूल मंत्र है - इसका एक और महत्वपूर्ण पहलू यह है कि जो व्यक्ति अपने जीवन में धन और अपने शब्दों दोनों पर ही नियंत्रण रखना सीख जाता है, वही जीवन में सच्ची सफलता पाता है। इस बारे में अग्रेजी में भी एक कहावत बड़ी ही प्रचलित है कि पहले अपने कार्य की योजना बनाओ और इसके बाद उस योजना को मूर्त रूप देने के लिए, सत्य निष्ठा और ईमानदारी से काम करना चाहिए। **Plan the work then work the plan.** बस यही इस जीवन में प्रगति का वास्तविक राज है। एक ओर धन का सही उपयोग , मनुष्य को समृद्ध बनाता है, वहीं पर संन्तुलित शब्दों का सही उपयोग मनुष्य को सम्मानित बनाने के साथ ही उसे महान भी बनाता है। इसलिए आर्थिक समृद्धि के साथ - साथ मानसिक समृद्धि भी जरूरी है। धन और वाणी की समृद्धि तभी आती हैं , जब हम सोच-समझकर और संयम पूर्वक तरीके से खर्च करें और सोच-समझकर बोलें, ताकि किसी की भावनाओं को ठेस न पहुंचे और सुखी और समृद्ध जीवन की परिकल्पना साकार और सार्थक हो सके।

मेरा कहने का अर्थ यह है कि जीवन में वास्तविक रूप से आगे बढ़ना चाहते हो और मानसिक शांति चाहते हो तो, दो बातें अवश्य ही गांठ बांध लेनी चाहिए, **इसमें पहली - हर रुपया सोच समझकर खर्च कीजिए** और **दूसरा - हर शब्द को सोचकर बोलिए** ताकि किसी की भावनाओं को ठेस ना पहुंचे और यहीं वास्तविक संतुलन जीवन में सुख, शांति, सफलता और सम्मान यह तीनों ही दिलाएगा, इसमें कोई भी अतिशयोक्ति नही है।

*****

जांगिड समाज के कोहिनूर, बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी, गुरुदेव पंडित जयकृष्ण मणिठिया

रमेश शर्मा, आनन्द पर्वत, दिल्ली



जो भी महान् विभूति अपने निजी स्वार्थ को छोड़कर, सत्य निष्ठा और ईमानदारी तथा समर्पण की भावना से अभिप्रेरित होकर समाज उत्थान के लिए कार्य करता है। ऐसे समाज रत्न और देदीप्यमान मणियों का इतिहास स्वर्ण अक्षरों में लिखा जाता है और इस गौरव को हासिल करने वाले, समाज की अनमोल धरोहर, **गुरुदेव जयकृष्ण मणिठिया** थे, जिन्होंने जीवन भर अथक परिश्रम और पुरुषार्थ के बल पर समाज हित में कार्य करते हुए, जांगिड समाज के नाम इतिहास में अमर कर दिया। **गुरुदेव जयकृष्ण मणिठिया, ऐसे ही एक बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी, अंगिरा कुलभूषण, समाज में जागृति पैदा करने के सूत्रधार और महान साहित्य मर्मज्ञ और शास्त्रों के प्रकाण्ड पंडित, अथाह ज्ञान के सागर और विनम्रता और शालीनता की प्रतिमूर्ति थे।**

पं.जयकृष्ण मणिठिया का जन्म, पिता छज्जु सिंह और माता श्रीमती यमुना देवी के घर **सन् 1887 में भाद्रपद कृष्ण पक्ष की अष्टमी यानी (कृष्ण जन्माष्टमी) को हुआ था।** भगवान श्री कृष्ण की अपार और असीम कृपा के कारण ही, **जन्माष्टमी को उनका जन्म हुआ था और यही कारण ही इनका नाम जयकृष्ण रखा गया था** यानी भगवान श्री कृष्ण की जय हो। ऐसा माना जाता है कि गुरुदेव की माँ पार्वती और भगवान श्री कृष्ण की परम भक्त थी, जिसके कारण ही उनको जन्माष्टमी के दिन ही पुत्र प्राप्ति का आशीर्वाद मिला था।

गुरुदेव जयकृष्ण का, विवाह केवल 19 वर्ष की आयु में नीमराना, राजस्थान निवासी गंगाराम की सुपुत्री यमुना से हुआ था और इनकी शिक्षा, दिल्ली में हुई और वह उर्दू ,फारसी, हिन्दी, गुजराती तथा अंग्रेजी भाषाओं के मर्मज्ञ जानकार थे। वह बचपन से ही बहुत तीक्ष्ण बुद्धि वाले और प्रतिभावान थे। मैट्रिक उत्तीर्ण करने के उपरांत उन्होंने पहले भारतीय रेल विभाग में और कुछ समय बाद डाक विभाग में नौकरी की और उनमें समाज सेवा की भावना हिलौरें ले रही थी। इसलिए उन्होंने डाक विभाग से भी त्याग पत्र देकर, फोटोग्राफी का काम सीखा और कुछ समय तक लखनऊ में फोटोग्राफी करने के बाद वह दिल्ली में आ गए थे और चावडी बाजार दिल्ली में फोटोग्राफर का काम शुरू किया। गुरुदेव के भाग्य में समाज सेवा लिखी हुई थी और उन्होंने फोटोग्राफी का काम छोड़कर और हिंदी और संस्कृत भाषा सीखने के साथ ही साहित्य पढ़ना और पुस्तकें लिखना और शोधपूर्ण सामग्री प्रकाशित करना शुरू किया। उस समय भगवान विश्वकर्मा पुराण गुजराती भाषा में उपलब्ध था और उसे समझने के लिए गुजराती भाषा का ज्ञान प्राप्त किया और प्रसिद्ध पुस्तक विश्वकर्मा और उनकी संतान का गुजराती से हिन्दी भाषा में अनुवाद किया।

इतना ही नहीं उन्होंने विश्व ब्रह्मा कुलोत्साह नामक ग्रंथ के कुछ खण्डों में से दो ,खंडो का मराठी भाषा से हिन्दी भाषा में भी अनुवाद किया और इसके साथ ही महासभा के कार्य का विस्तार बंगाल और पंजाब में हो जाने के कारण ही उन्होंने बंगाली व गुरुमुखी पंजाबी भाषा को भी समझने योग्य ज्ञान अर्जित किया।

भगवान श्री कृष्ण की कृपा का ही यह प्रसाद था कि, उन्होंने अनेक भाषाओं में पारंगतता हासिल की और अनेक भाषाओं का ज्ञाता होना उनकी विलक्षण और तार्किक प्रतिभा का एक अनूठा संगम था। **इतना ही नहीं गुरुदेव ने कानूनी भाषा के साथ साथ ज्योतिष विद्या का भी अध्ययन किया। असीम प्रतिभा के धनी होने के कारण ही उन्होंने भगवान विश्वकर्मा के बारे में, समाज के लोगों को विस्तृत जानकारी उपलब्ध करवाने के उद्देश्य से भगवान विश्वकर्मा के बारे में, साहित्य का सृजन करते हुए, व्यवस्था पत्रों के आधार पर प्रमाण संग्रह नामक पुस्तक को, दो खण्डों में प्रकाशित किया और इसके साथ ही ढोल की पोल, शिल्पाचार्य विश्वकर्मा, भगवान विश्वकर्मा देव की कथा, विश्वकर्मा कुल दीपक, विश्वकर्मा धर्म पत्रिका आदि भगवान विश्वकर्मा के बारे में साहित्य सृजन करके, भगवान विश्वकर्मा की पूजा अर्चना और महत्व के बारे में लोगों को अवगत करवाया और यह उनकी महान उपलब्धियों में शामिल हैं।**

जांगिड समाज के लोगों को अपने गोत्र और शासन के बारे में भी अनुसंधान करके और विस्तृत अध्ययन करके **18 गोत्रकार ऋषि एंव 1444 शासन खोज कर उन्होंने जांगिड - गोत्रावली का प्रकाशन भी किया।** ज्योतिष पाठमाला के दो भाग

लिखकर, ज्योतिष ज्ञान का भी परिचय दिया। उन्होंने सन् 1923 में समस्तीपुर बिहार में हुए, अखिल भारतीय विश्वकर्मा महासम्मेलन की अध्यक्षता की और सन 1940 में उनके मार्गदर्शन में अखिल भारतीय विश्वकर्मा ब्राह्मण बोर्ड की स्थापना की गई। **जांगिड ब्राह्मण महासभा के 1909 में पटीकरा महेन्द्रगढ में हुए प्रथम अधिवेशन में जयकृष्ण को पहली मंत्री बनाया गया और उसके बाद वह अनेक अधिवेशनों के प्रधान भी बने। उन्होने ही 4 अप्रैल 1919 को , सरकार से, महासभा का रजिस्ट्रेशन करवाया और पिछले 107 वर्षों से अधिक समय से हमारी महासभा गुरूदेव पं.जयकृष्ण मणिठिया के आदर्शों पर चलते हुए समाज के उत्थान के लिए अग्रसर है।**

गुरुदेव के कार्यकाल में महासभा के कुल 29 अधिवेशन सफलतापूर्वक सम्पन्न हुए और **महासभा के हिण्डोन राजस्थान में हुए 20वें अधिवेशन में समाज ने जयकृष्ण मणिठिया को सम्मानित किया और उनको गुरूदेव की उपाधि देकर से अलंकृत किया गया। सन् 1921 में पं. जयकृष्ण मणिठिया के नेतृत्व में एक 11 सदस्यीय प्रतिनिधि मण्डल ने लाहौर में, जनगणना कमिश्नर से वाद- विवाद और उचित तर्क-वितर्क करके जनगणना में जांगिड ब्राह्मण लिखे जाने का आदेश जारी करवाया और उसके बाद सन् 1931 और 1941 में भी यही क्रम दोहराया गया।** यह गुरुदेव की दूरदर्शिता की ही देन है **कि आज समाज के लोग जांगिड शब्द उपनाम लिखकर, देश में ही नहीं अपितु, विदेशों में भी प्रत्येक क्षेत्र में, अपनी एक विशेष पहचान बना रहे है।** उनके प्रयासों से ही, **श्रीमती सुन्दर देवी ने हैदर कुली दिल्ली में स्थित अपने दो मकान सन् 1929 में महासभा को दान करने के साथ ही रजिस्ट्री भी महासभा के नाम करवा दी थी, जो आज भी महासभा का प्रधान कार्यालय है।**

हमारे रोहतक में रोहतक भी, माल ऑफिसर की अदालत में पैरवी करके , गुरुदेव जयकृष्ण मणिठिया ने, **आदेश जारी करवाया कि जमीन की खातेदारी में जांगिड ब्राह्मण शब्द लिखा जाये।** वह 20 फरवरी 1947 को 29 वें महासभा के अधिवेशन में भाग लेने चूरू पहुंचे थे और **फाल्गुन मास की अमावस्या के दिन 21 फरवरी 1947 को गुरुदेव महाप्रयाण को प्राप्त हो गये।**

महासभा के प्रधान रामपाल शर्मा ने, 20वीं सदी के इस महान समाज सुधारक और बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी और जांगिड समाज के अस्तित्व को विशेष पहचान दिलाने वाले, **इस महान विभूति को जन्माष्टमी के अवसर 4 सितंबर को 140 वीं जन्म जयंती पर बधाई देते हुए कहा कि, गुरुदेव ने अपना सारा जीवन समाज के प्रति समर्पित कर दिया** और मैं, उस महान विभूति को नमन करते हुए और उनके आदर्शों पर चलते हुए, समाज की गरिमा और मर्यादा को बनाए रखने का सदैव ही हर सम्भव प्रयास करूँगा। ******



जिला सभा अहमदाबाद की तरफ से अंगिरा जी जन्म महोत्सव मनाया गया।



राजस्थान प्रदेश सभा द्वारा, प्रदेश भवन में महर्षि अंगिरा का प्राकट्योत्सव दिवस बड़े ही हर्षोल्लास पूर्वक तरीके से मनाया गया।



15 सितंबर, 2026 को शाखा सभा रेवाड़ी ने प्राचीन श्री विश्वकर्मा मंदिर, रेलवे रोड पर महर्षि अंगिरस जयंती बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाई गई



17 सितंबर 2026 को रेवाड़ी जांगिड समाज द्वारा प्राचीन श्री विश्वकर्मा मंदिर (रेलवे रोड) में भगवान श्री विश्वकर्मा जयंती अत्यंत उत्साह के साथ मनाई गई

हमारा समाज.....

विप्र बंधुओ,



अथर्ववेद के अनुसार हम लोग ही मूल ब्राह्मण एवं निपुणता में जन्मजात विज्ञान विशारद थे जो नित्य कर्म पूजा पाठ-प्रभू वन्दना के उपरान्त अनुसंधान किया करते तथा महान उपलब्धियाँ हांसिल किया करते थे हमारे समाज ने संसार को महान विभूतियाँ प्रदान की है, परिचय मे हम सप्त ऋषि अंगिरा जिनका कालांतर नाम जांगिड ऋषि पड़ा उनकी श्रृंखला में उनकी पुत्री अंगिरसी और धर्म पुत्र प्रभास वसु (भुवन) पुत्र, सुर्य के ससुर तथा शनि के नाना स्वयंभू पितामह विश्वकर्मा के विशिष्ट एवं द्वितीय पुत्र मय एवं ऋषि पराशर की पुत्री सौम्या के वंशज है जिसके वंश में प्रथम विमान निर्माता महर्षि भारद्वाज, संत शिरोमणि आदि शंकराचार्य, पँ. श्रीराम शर्मा (गायत्री परिवार), पँ. तुलसीराम शर्मा, स्वामी कल्याणदेव, विश्वविख्यात जादूगर ओ पी शर्मा महामहिम ज्ञानी जैल सिंह इत्यादि जैसे युग पुरुष हुए।

आज हमारा समाज **"खास तौर पर उत्तर-पूर्वी भारत का"** काल के गाल मे कुछ इस तरह समाता जा रहा है कि अस्तित्त्व बचा पाना भी संदेहात्मक दिख रहा है, हमसे कुछ लोग पूजा पाठ छीन कर कर्मकांडी ब्रहमण तो कुछ कर्म छीन व्यापारी बन गये, आज एकमात्र बचे कुचे पेशे को कोई दूसरा बिजनेस करके रातो रात सेठ बन जाता है **पर हम लोग स्वयं को पेशेवर बनाने के बजाय खुद को मदारी बना बैठे क्योंकि हमारी ऐठन, अकड व मरोड नही जाती एकता, अखण्डता की बात नही करते। वाह उस्ताद वाह की भूख मिटती ही नही हमारी इसका फायदा अनन्य लोग उठाकर अपना उल्लू सीधा कर जाते है और हम ज्यों के त्यों अर्थात काम-धन उपार्जन के लिये करना चाहिए सिर्फ मन की खुशी के लिए नही।** बिना लक्ष्मी सुख-सम्पत्ति आ ही नही सकती, **नतीजतन बेघर बच्चे, चेहरा मलीन, डीन्गे मारने के शौकीन, मुंह मे गुट्खा, आँखें धसी, पिचके गाल, उलझी जुल्फे, बहकी चाल हमारी पहचान बनती जा रही है। लोग अपशब्द भी कह जाते हैं।** फिर भी हम न व्यक्तित्व को निखार रहे न ही शिक्षा, सभ्यता, संस्कार पर हमारा कोई ध्यान, शास्त्र कहते है कि:-

रूप यौवन संपन: विशाल कुल सम्भव: विद्यहीना न शोभन्ते निर्गंधा इव किन्सुका:

अर्थात उच्च कुल मे जन्मा व्यक्ति रूप, यौवन के होते हुए भी छूल (ढाक) के फूल के समान गुन रहित है न चढ़ाने, न खाने के काम के, सिर्फ बेकार की वस्तु।

कुछ वर्ष पुर्व लखनऊ के डॉ. इन्दरमणि शर्मा जी को स्वजाती दुर्दशा का पूर्वानुमान हो गया था क्योकि हम सभी पांच (मनु, मय, त्वष्टा, शिल्पी, दैवज्ञ) जातियो को जोड़कर चलने मे पिछड गये परन्तु आज उनमे से कई हमें अपना बताते भी नही कुछ को हम नहीं बताना चाहते इसलिए सिर्फ अपनी जाति को देश मे एक व्यापक नाम देने के खातिर अपने चार साथियो सहित (गोरधन शर्मा मथुरा उ. प्र., डालचंद शर्मा जंहगिराबाद उ. प्र. एवं दो अन्य) के साथ मिलकर आ. भा. जांगिड ब्राह्मण महासभा की स्थापना की और कोर्ट से लड़कर ब्राह्मण की श्रेणी का सम्मान, पिछडी जाति होने का लाभ राष्ट्रीय सूची में दिलवाया जिसे कई प्रदेशों ने प्राथमिकता से अपनाया और गर्व से स्वयं को **"जांगडा ब्राह्मण"** बताते है परंतु उनका गृहप्रदेश इनसे अनभिज्ञ रहा।

क्षेत्रीयता मे हमारी जाति बढई, खाती, तरेखान, मालवीय, आचार्य, कर्माकर, उद्धरण, मिस्त्री, सुथार, सूत्रधार, मैथिलि, विश्वब्रह्मण इत्यादि नाम से जानी जाती है। परंतु समझना चाहिए कि बढ़ईगीरी एक कर्म का नाम है जाति का नही जिसे कोई भी कर सकता है पर बिरादर नहीं बन सकता अक्सर देखते है कि कई भाईयों को हमारे समाज के प्रति कोई जानकारी नही होती जैसे: हमारे मुख्य ऋषि गोत्र 18 हैं अन्य इनके उपगोत्र कहलाते है यह जागृत समाज मे प्रथम विस्थापित बुजुर्ग या निर्गत गांव के नाम को उपगोत्र की तरह नाम के पीछे जोडा जाता है जिसे प्राचीन उपगोत्र (शासन-कुल-वंश या खानदान) कहते है अर्थात जो लोग मरने-जीने मे सरीक होते है, जिनकी आपस मे शादी नहीं होती।

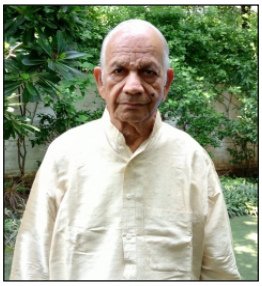
वर्तमान मे हमारा समाज कुछ राज्यों मे शिक्षा एवं संपन्नता के नए आयाम छू रहा है कुछ बड़े व्यापारी कुछ उच्च स्तरीय कर्मचारी मील का पत्थर बन कर हमारे समाज का नाम रौशन कर रहे है किन्तु अभी नगन्य हैं हमे अपने बच्चों को इन लोगो की उपलब्धियों के प्रति प्रेरित करना होगा जिससे हमारा देश-प्रदेश निकट भविष्य मे अग्रगण्य श्रेणी मे शीर्ष स्थान ले सके,

इसी उम्मीद के साथ आपका.....

आर एन शर्मा, नांगलोई, दिल्ली

भगवान श्री कृष्ण द्वारा दिया गया निष्काम कर्मयोग का संदेश हजारों वर्षों बाद, आज भी उतना ही सार्थक और समीचीन है।

पी. एल. शास्त्री, गुरुग्राम



सबसे पहले मैं, द्वापर युग में, भगवान विष्णु के अवतार के रूप में, अवतरित होने वाले, भगवान श्री कृष्ण के अवतरण दिवस, 4 सितंबर को मनाई गई जन्माष्टमी के पुनीत अवसर पर, आप सभी को बधाई और शुभकामनाएं देता हूँ।

भगवान श्री कृष्ण ने द्वापर युग में, अवतार लेकर, अपनी लीलाओं के द्वारा अत्याचारियों, राक्षसों, अन्याय करने वाले तथा दुराचारियों का अन्त करके और गोपियों के माध्यम से जहां निष्काम और निस्वार्थ प्रेम का अमर संदेश दिया, वहीं अपने परम मित्र सुदामा के कष्टों को, बिना कुछ मांगे ही, निवारण करके, सुदामा का महल और सभी नगरवासियों के महल बनाकर उदारता का परिचय दिया और साथ ही कुरुक्षेत्र के मैदान में, निष्काम कर्मयोग का संदेश देकर, मानवता के कल्याण का रास्ता प्रशस्त किया।

भगवान श्री कृष्ण ने, श्री मद्भागवत गीता के माध्यम से मानवता को अलौकिक और दिव्य अमर संदेश देकर यह सिद्ध कर दिया कि, इस संसार में प्राणी केवल अपने कर्तव्य का पालन करने के लिए ही आते है और अनेक प्राणी अपना दायित्व निभा कर अपनी अमिट छाप छोड़ जाते हैं। भगवान श्री कृष्ण ने गीता का जो उपदेश हजारों साल पहले अर्जुन को दिया था,वह आज भी लगभग 5200 वर्ष बीतने के बाद भी, उसी प्रकार से सार्थक और समीचीन है। भगवान श्री कृष्ण ने, दिग्भ्रमित और मोहग्रस्त अर्जुन को निष्काम कर्म योग के माध्यम से अपने दायित्व के भलीभांति निर्वहन का उपदेश दिया और कहा कि---

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन। मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते संग्डोअस्त्वकर्मिणी ।।

भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन से कहा कि, मनुष्य का अधिकार केवल मात्र कर्म करने पर ही है, इसलिए फल की चिंता कभी भी नहीं करनी चाहिए। जो भी जैसा कर्म करेगा उसको उसका फल निश्चित रूप से उसको अवश्य ही मिलेगा। इसलिए एक मनुष्य को केवल मात्र, अपने दायित्व का निर्वहन करते हुए ही, निष्काम भाव से ही अपना कर्म करते रहना चाहिए।

यहां पर भगवान श्री कृष्ण अर्जुन को, एक गुरु की तरह ही सीख और ज्ञान दे रहे हैं। कर्म का फल भी उसी प्रकार से अवश्य ही मिलेगा, जैसे भूमि में बीज डालने से, उसका परिणाम तुरंत नहीं मिलता है, लेकिन समय पर अवश्य ही मिलेगा। **इसलिए कोई भी कर्म करने के बाद, हर समय इस बात की चिंता करने की जरूरत नहीं है कि इसका परिणाम क्या होगा?,** अपितु आप निष्काम भाव से कार्य करते हैं तो, आपको फल की चिंता नहीं रहती है, फिर चिंता उस देने वाले की होती है, क्योंकि आपने तो अपना दायित्व निभा दिया, अब फल देने की बारी, उस परमात्मा की है, जिसने आपको निष्काम भाव से कार्य करने की प्रेरणा दी है। इसी प्रकार भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन को, निडर होकर कार्य करने की प्रेरणा देते हुए कहा कि, अगर डर से भयभीत हो कर अपने अन्तःकरण की आवाज को सुने बिना कोई भी निर्णय लिया जाएगा, वह निर्णय कभी भी सही साबित नहीं होगा। **क्लैब्यं मा स्म गम, पार्थ नैय्युत्तवय्युपपद्ये। क्षुदं हृदयदौर्बल्य त्यवकत्वोत्तिष्ठम परन्तप।।**

भगवान श्री कृष्ण , अर्जुन को कहते हैं कि, हे! अर्जुन - इस तरह की कमजोरियों और हृदय की दुर्बलताओं को कभी भी जीवन में अपने ऊपर हावी मत होने देना। इसलिए आपका यह सर्वोच्च दायित्व है कि आप उठों और किसी भी प्रकार की दुर्लभता और कमजोरी को अपने भीतर हावी मत होने दो। इसका सार्वजनिक तौर पर यह सिद्ध होता है कि जो भी कमजोरी और दुर्लभता आपके भीतर परिव्याप्त है उससे बाहर निकलना होगा। भगवान श्री कृष्ण अर्जुन को, भली भांति समझाया कि मानसिक कमजोरी से कैसे बाहर निकला जा सकता है। भगवान श्री कृष्ण ने, अर्जून के डर और उसकी भावनाओं को समझ कर ही, उस कमजोरी और डर को दूर किया ताकि डर और कमजोरी अर्जुन की पहचान न बन जाएं। इसी प्रकार से भगवान श्री कृष्ण ने सरल और आसान शब्दों में, गीता में ज्ञान और विवेक के महत्त्व को भी, समझाने का स्तुत्य प्रयास किया है और बताया कि इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र और श्रेष्ठ कुछ भी नहीं है।

जिस समय एक साधक अपने अनुभव और ज्ञान के माध्यम से उस ज्ञान को हासिल कर लेता है तो उसके बाद वह, दिग्भ्रमित नहीं होता है। ज्ञान अभ्यास और सत्संग के माध्यम से हासिल होता है और कहा भी गया है कि, **बिन सत्संग विवेक न होई।** जिस दिन इस संसार की वास्तविकता से आपका परिचय हो गया तो, उसके बाद यह जीवन और नश्वर संसार एक प्रकार से मित्था लगने लगेगा और इस बात का अहसास हो जाएगा कि माता-पिता और भाई बहन और पति पत्नी का यह रिश्ता पूर्व जन्म के संस्कारों के कारण ही मिला है।

इसीलिए भगवान श्री कृष्ण कहते हैं कि जीवन में मुक्ति हासिल करने के लिए, निस्वार्थ और निर्लेप तथा सात्विक भाव से कर्म करने से ही इस जीवन में मुक्ति हासिल करने का रास्ता प्रशस्त होता है और एक प्रकार से मुक्ति मिल सकती है। भगवान श्री कृष्ण कहते हैं कि कर्तव्य निष्ठा की राह पर चलते हुए और समत्व बुद्धि के साथ कार्य करते हुए ही एक व्यक्ति सभी बंधनों से मुक्त हो जाता है। **बुद्धि युक्तों जहातीह उभे सुकृतदुष्कृते। तस्माद्योगाय युज्यस्व योग: कर्मसु कौशलम।।**

भगवान श्री कृष्ण कहते हैं कि, समत्व बुद्धि से युक्त मनुष्य, इसी जीवन में अच्छे और बुरे दोनों कर्मों के फल के बंधन से मुक्त हो जाता है। इसलिए योग में स्थित होकर कर्म करो, क्योंकि कर्मों में कुशलता का नाम ही योग है। जब आप बिना किसी मानसिक तनाव, लगन और कर्तव्य निष्ठा के साथ निस्वार्थ भाव से अपना काम करते हैं, तो वही कर्म आपके लिए बंधन नहीं, बल्कि मुक्ति का मार्ग बन जाता है।

इसके साथ ही भगवान श्री कृष्ण कहते हैं कि जीवन में , ऐसे ही कुछ मूल मंत्र हैं, जिनको आत्मसात करने से ही यह जीवन सार्थक बना जाता है। इन मूल मंत्र रुपी गुणों में, मुश्किल समय में धैर्य बनाए रखना, अपने कर्मो से शिक्षा ग्रहण करना, कर्तव्यनिष्ठा और ईमानदारी से पालन करना, निडर होकर अपने दायित्व का निर्वहन, ज्ञान और विवेक का समुचित महत्व समझना, हर परिस्थिति में संतुलन बनाए रखना, सवाल पूछने की स्वतंत्रता, मन और इन्द्रियों पर नियंत्रण, जीवन में रिश्तों का महत्व, यह जीवन हार जीत से बड़ा है, रिश्तों में आपसी समन्वय और निस्वार्थ प्रेम भावना के साथ ही परिणाम की चिंता किए बिना, अपने दायित्व का भलीभांति निर्वहन करना। भगवान श्री कृष्ण द्वारा दिए गए गीता में निहित इस अमर और दिव्य संदेश का एक ही उद्देश्य था कि, किस प्रकार से दिग्भ्रमित मानव जीवन का कल्याण किया जाए। उन्होंने कर्म, ज्ञान आत्मसंयम और सात्विक, राजसी और तामसी गुणों और कर्मों के बारे में भली भांति समझाया।

भगवान श्री कृष्ण कहते हैं कि मैं खुद भी कर्म इसलिए करता हूँ कि ताकि उसका अनुपालन करते हुए ही, यह सांसारिक जीवन अपने कल्याण का रास्ता प्रशस्त कर सकें। यह मानव जीवन अनमोल है और भगवान की दी हुई एक अनमोल धरोहर है। इसलिए जहां तक संभव हो सके, अपने आत्म कल्याण का रास्ता निष्पक्ष और निस्वार्थ भाव से कार्य करते हुए और संतो और महात्माओं द्वारा दिखलाए गए मार्ग पर चलते हुए, अपनी बुद्धि और विवेक के माध्यम से, जीवन में अच्छे और बुरे दोनों के कर्मों के बंधन से मुक्त हो जाता है। इसलिए अपने जीवन में आत्मविश्वास और पूरी लगन एवं निष्ठा के साथ अपना काम करते हुए, जो लोग आगे बढ़ते हैं, वही लोग जीवन में सफल होते हैं और यह जीवन ऐसे लोगों के लिए बंधन नहीं, बल्कि मुक्ति का मार्ग बन जाता है।

इसलिए अन्त में, मैं यही कहना चाहता हूँ कि जो व्यक्ति निष्काम और निस्वार्थ भाव , बिना कोई इच्छा के, सत्कर्म करते हुए और परमात्मा पर अटूट भरोसा रखते हुए आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ते रहे,आपका जीवन सार्थक हो जाएगा।

कृष्ण जन्माष्टमी की पुन: हृदय से बधाई। **********



जांगिड ब्राह्मण समाज द्वारा किशनगढ़ में भगवान विश्वकर्मा पूजा दिवस के अवसर पर 17 सितंबर को रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया।

घर के मन्दिर में पूजा अर्चना करने से भी, वही फल प्राप्त होता है, जो मन्दिर में जाकर पूजा करने से होता है।

मधुशर्मा – महासभा महिला प्रकोष्ठ की राष्ट्रीय संरक्षक,



आज के इस आपा-धापी भरे आधुनिक जीवन में कई बार हर रोज मंदिर जा पाना संभव नहीं हो पाता है और ऐसे में लोगों के मन में एक सवाल उठना सहज और स्वाभाविक ही है कि क्या घर में बने हुए मन्दिर में, पूजा पाठ करने से भी भगवान की वहीं अनूभूति प्राप्त कर सकता है और वही असीम कृपा मिल सकती है? धार्मिक मान्यताओं के अनुसार भगवान की भक्ति के लिए, केवल मंदिर जाना जरूरी नहीं है, बल्कि सच्ची आस्था, श्रद्धा और विश्वास तथा शुद्ध और पवित्र मन से घर पर भी, पूजा अर्चना करते हुए, भगवान की अनुकम्पा हासिल की जा सकती है। अगर आप किसी दिन मंदिर नहीं जा सकते हो तो घर में बने हुए अपने पूजा स्थान पर, भगवान की पूजा-अर्चना करके वैसी ही मानसिक शांति और आनंद की अनुभूति के साथ भगवान की अनुकम्पा का पात्र भी बन सकते हैं और इस प्रकार से भगवान को भी प्रसन्न किया जा सकता है।

घर पर पूजा पाठ की सबसे सरल विधि यह है कि पहले सुबह जल्दी उठकर स्नान करने के बाद, भगवान की पूजा-अर्चना और ध्यान कर सकते हैं और श्रीमद्भागवत गीता, हनुमान चालीसा, शिवस्तोत्र, शिवस्तुति और गणेश स्तुति या जिस भी देवी देवता में आपकी श्रद्धा और आस्था है, उसकी पूजा करके, मन चाहा फल प्राप्त कर सकते हैं। भगवान श्री कृष्ण ने गीता में कहा भी है कि जो भक्त जिस देवी-देवता की पूजा अर्चना करता है, मैं उसकी श्रद्धा और अगाध आस्था को उस देवता के प्रति और अधिक संवेदनशील बना देता हूँ लेकिन ऐसा भक्त मोक्ष प्राप्त नहीं कर सकता है। कई बार मंदिर जाने का समय नहीं मिल पाता है, उस समय घर में ही पूजा पाठ करके अपनी आध्यात्मिक प्यास बुझाई जा सकती है।

धार्मिक मान्यता है कि जो भी भक्त अपने दिन की शुरूआत, भगवान का सुमिरन करने से शुरू करता है, उसका मन शांत रहता है और वह व्यक्ति सकारात्मक भाव से अपने काम की शुरुआत कर पाता है। घर के मंदिर में आस्था का दीपक जरूर जलाएं और मंदिर में नियमित रूप से दीपक जलाना अति शुभ माना जाता है। मन्दिर में आप अपनी श्रद्धानुसार तेल या घी का दीपक जला सकते हैं। दीपक जलाते समय कुछ पल के लिए भगवान का जरुरी रुप से ध्यान करें। लेकिन अगर पूजा बहुत लंबी हो तो भी कुछ मिनट भी श्रद्धा से भगवान को याद करना भक्ति का ही एक हिस्सा माना जाता है। मन के अन्तःकरण से भगवान को अनुनय विनय भाव से प्रार्थना करो कि हे! नाथ आज मंदिर जाना संभव नहीं हो पा रहा है, इसलिए मेरी इस पूजा को स्वीकार करो।

अपने घर के पूजा स्थल में भगवान को भोग लगाने के लिए सात्विक भोजन तैयार करके उसका भोग लगाया जा सकता है। भोजन बनाने के बाद सबसे पहले भगवान को भोग अर्पित करो। भगवान को भोग अर्पित करने की परंपरा कई घरों में सामान्य रूप से ही पाई जाती है। भगवान को भोग लगाने के बाद उस प्रसाद को अपने परिवार के सदस्यों के साथ ग्रहण करें। मंत्रों का जाप करें और दुर्गा सप्तशती या हनुमान चालीसा सहित जो भी मन में हो उसे श्रद्धा और भक्ति के साथ पाठ करें। अगर मंदिर घर से दूर है तो घर पर ही धार्मिक ग्रंथो के पाठ के लिए भी कुछ समय निकाला जा सकता है। आप राम नाम, महामृत्युंजय मंत्र या किसी भी अन्य मंत्र का, अपनी श्रद्धानुसार जप कर सकते हैं। इसके साथ ही अपनी श्रद्धानुसार जरूरतमंदों की मदद भी करें, क्योंकि धार्मिक परंपरा में पूजा के साथ-साथ सेवा धाम को भी बहुत अधिक महत्व दिया गया है।

अगर आप मंदिर जाकर पूजा नहीं कर सकते हो तो किसी जरूरतमंद व्यक्ति को भोजन करा सकते हैं। आप अपनी क्षमता के अनुसार जरूरी सामान दान भी कर सकते हैं। किसी भूखे व्यक्ति को भोजन या पशु पक्षियों को चारा या दाना भी खिला सकते हैं। यह भी सेवा का एक बेहतर तरीका माना जा सकता है। इसलिए अपने मन की शांति के लिए यह जरूरी है कि मंदिर जाने का समय किसी कारणवश नहीं मिले तो घर पर बैठकर भगवान का भजन और ध्यान करें और सुमिरन करें और नाम जप करें। नाम जप में वह ताकत है जिसके द्वारा मन चाहा फल हासिल किया जा सकता है। इसलिए मेरी सभी प्रभु भक्तों से यही प्रार्थना है कि जहां तक संभव हो सके, हर रोज नियमपूर्वक अपने नजदीकी मंदिर में जाकर पूजा अर्चना करने का प्रयास करें और यदि किसी कारणवश यह संभव नहीं हो पाता है तो अपने घर के मंदिर में पूजा अर्चना करके भी अपने मन रुपी मन्दिर को प्रभु चरणों में समर्पित किया जा सकता है। घर में पूजा अर्चना करने का लाभ यह होता है कि उससे घर में सकारात्मक ऊर्जा का वास होगा और भगवान की अनुकंपा सदैव ही आप पर और आपके परिवार पर वहां पर बनी रहेगी।

भगवान अपने भक्तों का भाव देखते हैं। अगर घर में भी भक्ति भाव से श्रद्धापूर्वक पूजा पाठ किया जाता है तो वहीं पुण्य हासिल होगा जिसकी अपेक्षा आप मन्दिर में दर्शन और पूजा अर्चना करने के बाद फल के रूप में करते हैं। इसलिए वेदों और शास्त्रों तथा पुराणों में कहा गया है कि भगवान बिना आस्था और विश्वास के साथ की गई पूजा से प्रसन्न नहीं होते हैं, अपितु आपकी श्रद्धा पूर्वक की गई पूजा से प्रसन्न होते हैं। फिर वह पूजा श्रद्धापूर्वक चाहे घर में की गई हो या मन्दिर में इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है। पूजा में भगवान के प्रति समर्पण, श्रद्धा और विश्वास होना चाहिए तभी वह भक्ति अमृत बन जाती है। इसलिए घर और मन्दिर दोनों ही एक भक्त के दृष्टिकोण पर निर्भर करते हैं और इसीलिए कहा गया है कि भगवान श्रद्धा और भाव से ही प्रसन्न होंगे, भगवान भाव के भूखे हैं, धन के भूखे नही। भक्त का प्रेम सच्चा हो तो भगवान दूर नहीं रहते। भक्ति मे जो दिल से झुके, भगवान उसके हृदय मे बसते।********

देश में 17 सितंबर को मनाए गए, भगवान विश्वकर्मा पूजा दिवस का धार्मिक, वैज्ञानिक और राष्ट्रीय महत्त्व सर्वविदित है।

महेश जांगिड, जयपुर - महासभा मीडिया प्रभारी जयपुर।



भारत की सनातन परंपरा में अनेक पर्व और उत्सव केवल धार्मिक आस्था और विश्वास तक ही सीमित नहीं हैं, बल्कि उनके पीछे जीवन, प्रकृति, विज्ञान, श्रम, संस्कृति और सामाजिक व्यवस्था से जुड़े अनेक गहरे संदेश भी निहित हैं, जिनको गहराई से समझने की जरूरत है। प्रत्येक वर्ष 17 सितंबर को मनाया जाने वाला श्री विश्वकर्मा पूजा दिवस भी ऐसा ही एक आस्था और श्रद्धा तथा विश्वास से जुड़ा हुआ एक महत्वपूर्ण पर्व है और आज यह दिवस, एक प्रकार से भगवान श्री विश्वकर्मा की आराधना के साथ-साथ शिल्पकला, वास्तु, निर्माण, तकनीक, उद्योग और श्रम के सम्मान का प्रतीक बन चुका है।

इस विश्वकर्मा पूजा दिवस के अवसर पर, सम्पूर्ण भारत में बड़े-बड़े औद्योगिक संस्थानों से लेकर सरकारी प्रतिष्ठानों, कारखानों, वर्कशॉप, दुकानों और यहां तक कि छोटी-छोटी औद्योगिक इकाइयों में काम करने वाले श्रमिकों द्वारा इस दिन भगवान श्री विश्वकर्मा की पूजा-अर्चना इन सभी आयोजनों में किसी भी जाति, धर्म और समाज या सम्प्रदाय की सीमाओं को लांघ कर आस्था और विश्वास के साथ की जाती है और इस दिन श्रमिक लोग अपने औजारों, मशीनों और कार्यस्थलों की पूजा करते हैं तथा अपने व्यवसाय, उद्योग और राष्ट्र की प्रगति एवं समृद्धि की मनस्कामना करते हैं और इस पर्व की यही व्यापकता और सार्वभौमिकता देश के लोगों को एक साथ जोड़ती है।

17 सितंबर को ही क्यों मनाया जाता है विश्वकर्मा पूजा दिवस? 17 सितंबर को मनाए जाने वाले भगवान श्री विश्वकर्मा पूजा दिवस को गहराई से समझने के लिए भारतीय सौर परंपरा को समझना अति आवश्यक है। भारतीय संस्कृति में सूर्य के एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश करने को संक्रांति कहा जाता है और पांचाग के अनुसार अलग-अलग संक्रांतियों का अपना - अपना, अलग - अलग धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व भी है। जिस प्रकार सूर्य के मकर राशि में प्रवेश के अवसर पर मकर संक्रांति का पर्व 14 जनवरी को मनाया जाता है, उसी प्रकार मेष राशि में सूर्य के प्रवेश पर मेष संक्रांति, जिसे विभिन्न क्षेत्रों में बैसाखी 14 अप्रैल को पर्वों के रूप में मनाया जाता है, और सूर्य के कन्या राशि में प्रवेश के अवसर पर कन्या संक्रांति होती है। इसी कन्या संक्रांति के अवसर पर 17 सितंबर को , भगवान श्री विश्वकर्मा पूजा दिवस मनाने की परंपरा प्रचलित हुई और इस दृष्टि से यह बात विशेष रूप से समझने योग्य है कि 17 सितंबर को भगवान विश्वकर्मा का जन्म दिवस नहीं है और इस तिथि का संबंध मुख्यतः कन्या संक्रांति से जुड़ी परंपरा से ही माना गया है। **इसलिए हमें इस पर्व को, केवल जन्मदिवस की अवधारणा से जोड़ने की अपेक्षा, इसके व्यापक धार्मिक, सांस्कृतिक और औद्योगिक महत्व को समझने की महत्ती आवश्यकता है।**

भगवान श्री विश्वकर्मा : शिल्प और निर्माण के अधिष्ठाता- भारतीय परंपरा में, भगवान श्री विश्वकर्मा को महान शिल्पकार, वास्तुकार और निर्माण कला के अधिष्ठाता के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है तथा इसके साथ ही उनको सृष्टि की रचना और विभिन्न महलों, प्रसादों और विमानों सहित दिव्य निर्माणों से भी जोड़ा गया है और यही कारण है कि भारतीय धार्मिक साहित्य में, भगवान विश्वकर्मा के स्वरूप और शिल्पकला की महिमा का बार- बार उल्लेख किया गया है और एक प्रकार से यह धर्म ग्रंथ हमारी अनमोल धरोहर हैं। पद्म पुराण में शिल्पकला के संदर्भ में स्पष्ट रूप से कहा गया है— **"दिवि भुव्यन्तरिक्षे वा पाताले वापि सर्वशः। यत्किञ्चिच्छिल्पिना शिल्पं तत्प्रवर्तकते नमः॥"** उपरोक्त का भाव यह है कि आकाश, पृथ्वी, अंतरिक्ष अथवा पाताल—जहाँ कहीं भी , शिल्प एवं निर्माण की कला दिखाई देती है, उसके मूल प्रेरक और प्रवर्तक भगवान श्री विश्वकर्मा को हृदय से नमन: है। एक प्रकार से यह विचार अपने आप में अत्यंत व्यापक और सारगर्भित है। इसका अर्थ केवल पत्थर, लकड़ी, लोहे या किसी भवन के निर्माण की तकनीक तक ही सीमित नहीं है। शिल्प का अर्थ है—रचना, निर्माण, कौशल, तकनीक और सृजन की वह क्षमता ,जिसके माध्यम से मनुष्य अपने विचारों को वास्तविक रूप देता है और इसके साथ ही वह श्रद्धा और भक्ति के साथ आगे बढ़ने का कार्य करता है।

श्री विश्वकर्मा पूजा और विज्ञान का संबंध जैसा कि आपको विदित है कि आज के इस आधुनिक विज्ञान युग में , तकनीक मानव जीवन का अभिन्न हिस्सा बन चुके हैं। मशीनों से लेकर कंप्यूटर तक, कारखानों से लेकर अंतरिक्ष विज्ञान तक और भवन निर्माण से लेकर आधुनिक इंजीनियरिंग तक हर क्षेत्र में कौशल, तकनीकी ज्ञान और सृजनात्मक क्षमता की आवश्यकता होती है। जांगिड और सुथार समाज के लोगों ने भगवान श्री विश्वकर्मा की इसी सृजनात्मक शक्ति और तकनीकी चेतना के प्रतीक का लाभ उठा कर निर्माण कला और शिल्प कला के क्षेत्र में एक विशेष पहचान बनाई है। इसलिए जहां तक मैं समझता हूँ भगवान विश्वकर्मा पूजा को आधुनिक युग में, केवल धार्मिक

कर्मकांड के रूप में देखना इसके वास्तविक महत्व को सीमित करना होगा अपितु इसका सर्वाधिक महत्त्व तभी परिलक्षित होगा, जिस समय भगवान विश्वकर्मा की सृजन कला को आत्मसात करते हुए,नए नए कीर्तिमान स्थापित करेंगे।

मेरा मानना है कि जिस प्रकार विद्या और संगीत के लिए माँ सरस्वती देवी की पूजा-अर्चना की जाती है, सभी प्रकार के विघ्नों के निवारण के लिए प्रथम पूज्य भगवान गणेश की आराधना की जाती है और धन-वैभव की प्राप्ति के लिए माँ लक्ष्मी का स्मरण किया जाता है, उसी प्रकार शिल्प, निर्माण, वास्तु, तकनीकी कौशल और औद्योगिक उन्नति के लिए भगवान श्री विश्वकर्मा की पूजा की जाती है। हर शुभ निर्माण में विश्वकर्मा का स्मरण भारतीय परंपरा में विवाह, यज्ञ, गृह-प्रवेश तथा विभिन्न प्रकार के निर्माण कार्यों में भगवान श्री विश्वकर्मा की पूजा का उल्लेख मिलता है। श्रुति में कहा गया है— **"विवाहादिषु यज्ञ गृहारामविधायके। सर्वकर्मसु संपुज्यो विश्वकर्मा इति श्रुति॥"**

अर्थात विवाह, यज्ञ, गृह-निर्माण, गृह-प्रवेश और अन्य महत्वपूर्ण कार्यों में भी भगवान श्री विश्वकर्मा का पूजन किया जाना चाहिए और मैं जहां तक समझता हूँ , इस परम्परा के पीछे एक गहरा संदेश छिपा हुआ है—**जहाँ निर्माण है, वहाँ शिल्प है; जहाँ शिल्प है, वहाँ कौशल है; और जहाँ कौशल है, वहाँ विश्वकर्मा की भावना है।**

विश्वकर्मा पुराण और प्राचीन परंपरा भारतीय संस्कृति और धार्मिक परंपराओं में , विश्वकर्मा पुराण का भी उल्लेख मिलता है। इसमें सृष्टि, निर्माण और भगवान श्री विश्वकर्मा से संबंधित विभिन्न धार्मिक एवं दार्शनिक विचारों तथा कथाओं का विस्तृत रूप से वर्णन किया गया है। जिस प्रकार भगवान विष्णु से जुड़ी अनेक अवतार कथाएं और लोक परंपराएं, आज भारतीय समाज में प्रचलित हैं, उसी प्रकार से ,भगवान श्री विश्वकर्मा के बारे में भी अनेक लोककथाएं प्रचलित हैं और पीढ़ी-दर-पीढ़ीआज तक चली आ रही हैं।

इतना ही नहीं ऋग्वैदिक परंपरा में भी, भगवान विश्वकर्मा को, व्यापक सृष्टि और निर्माण शक्ति से जोड़ा गया है। इससे यह भली भांति स्पष्ट होता है कि, भगवान श्री विश्वकर्मा की अवधारणा, केवल किसी एक समुदाय या समाज तक सीमित नहीं है, बल्कि भारतीय चिंतन में सृजन और निर्माण की सार्वभौमिक शक्ति के रूप में उनका एक महत्वपूर्ण स्थान माना गया है।

औद्योगिक भारत के लिए विश्वकर्मा पूजा का संदेश आज भारत देश तेजी से, औद्योगिक और तकनीकी विकास की दिशा में आगे बढ़ रहा है। मेक इन इंडिया, आत्मनिर्भर भारत, आधुनिक विनिर्माण, डिजिटल तकनीक, अंतरिक्ष अनुसंधान, इंजीनियरिंग, आधारभूत संरचना और नए उद्योग देश की विकास यात्रा को नई गति और दिशा दे रहे हैं। प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा भी देश में 15 अगस्त 2023 को प्रधान मंत्री विश्वकर्मा सम्मान योजना कल्याण योजना शुरू की गई है और जिसका लाखों लोगों ने लाभ उठाया है। ऐसे समय में विश्वकर्मा पूजा का महत्व और भी बढ़ जाता है और इस योजना का लाभ लाखों लोगों ने अब तक उठाया है। यह ऐतिहासिक पर्व वास्तव में,हमें याद दिलाता है कि किसी भी राष्ट्र का विकास केवल नीतियों और योजनाओं के बनाने से नहीं होता है , अपितु उसके पीछे लाखों-करोड़ों श्रमिकों, कारीगरों, तकनीशियनों, इंजीनियरों, मशीन ऑपरेटरों, उद्यमियों और कुशल हाथों की साधना के साथ साथ उनकी मेहनत और पसीने का भी योगदान होता है। विश्वकर्मा पूजा वास्तव में, इन सभी कर्मयोगियों के सम्मान का भी पर्व है, जिस औजार को कोई श्रमिक अपने हाथ में लेकर दिनभर मेहनत करता है, जिस मशीन के माध्यम से उत्पादन होता है और जिस तकनीक के सहारे कोई उद्योग आगे बढ़ता है, उसकी पूजा करके हम श्रम और कौशल की गरिमा को स्वीकार करते हैं।

श्रम का सम्मान ही राष्ट्र का सम्मान है जीवन में, भगवान विश्वकर्मा पूजा हमें एक महत्वपूर्ण सामाजिक संदेश भी देती है कि—कोई भी श्रम छोटा नहीं होता और कोई भी कौशल व्यर्थ नहीं होता है। यह एक देखने वाले व्यक्ति के दृष्टिकोण पर निर्भर करता है। एक कुशल कारीगर, बढ़ई, लोहार, मिस्त्री, मशीन ऑपरेटर, तकनीशियन, इंजीनियर और वैज्ञानिक—सभी अपने-अपने क्षेत्र में, राष्ट्र निर्माण में अपना अमूल्य योगदान देते हैं। यदि हम अपने युवाओं को कौशल, तकनीकी शिक्षा और व्यावसायिक प्रशिक्षण से जोड़ें तथा श्रम को सम्मान दें, तो भारत की विकास यात्रा और अधिक सरल और सहज होने के साथ ही और भी अधिक लाभकारी सिद्ध हो सकती है। इसलिए आज आवश्यकता है इस बात की है कि विश्वकर्मा पूजा को केवल एक दिन की पूजा तक सीमित न रखकर इसे कौशल विकास, तकनीकी शिक्षा, नवाचार और आत्मनिर्भरता के संकल्प दिवस के रूप में भी देखा जाए।

सारांश इसलिए संक्षेप में यही कहा जा सकता है कि 17 सितंबर को ,भगवान श्री विश्वकर्मा पूजा दिवस मनाना केवल धार्मिक आस्था का पर्व नहीं है, अपितु यह शिल्पकला, विज्ञान, तकनीक, उद्योग, श्रम, कौशल और राष्ट्र निर्माण की भावना का उत्सव भी है। भगवान श्री विश्वकर्मा की आराधना हमें, यह संदेश देती है कि सृजन ही विकास का मूल आधार है और कौशल ही प्रगति ही वास्तविक शक्ति है। आज आवश्यकता है कि, हम अपने बच्चों और युवाओं को आधुनिक शिक्षा के साथ - साथ तकनीकी एवं व्यावसायिक कौशल से भी जोड़ें तथा कारीगरों और श्रमिकों का सम्मान करें तथा विज्ञान और तकनीक के माध्यम से देश को आत्मनिर्भर बनाने में अपना हर सम्भव योगदान दें। **आइए, हम सभी मिलकर इस विश्वकर्मा पूजा दिवस पर हम भगवान श्री विश्वकर्मा के समक्ष नमन करते हुए संकल्प लें कि अपने ज्ञान, कौशल, परिश्रम, विज्ञान और तकनीक का उपयोग व्यक्तिगत उन्नति के साथ-साथ समाज और राष्ट्र के विकास के लिए भी करेंगे और यही श्री विश्वकर्मा पूजा की वास्तविक भावना का द्योतक है।**

****

श्रीरामचरितमानस के माध्यम से, गोस्वामी सन्त तुलसी दास ने मानवता को अमरता का संदेश दिया, जो आज भी समीचीन है।

अनुसुईया शर्मा शास्त्री, गुरुग्राम।

यह भारत भूमि सन्त - महात्माओं और ऋषि - मुनियों की पावन धरा है, जहां पर वेदों शास्त्रों और पुराणों की गूंज और भगवान श्री कृष्ण द्वारा दिए गए गीता के दिव्य और अमर सन्देश की गूंज आज भी सुनाई दे रही है। इसके अतिरिक्त , शिव पुराण और स्कन्द पुराण तथा भागवत पुराण के माध्यम से तथा इसके साथ ही,भगवान श्री राम ने भी, अपनी लीलाओं के माध्यम से मानवता को आध्यात्मिकता रुपी सरयू नदी में स्नान करने का अवसर पर प्रदान किया इसी धरा पर 529 साल पहले पैदा हुए, सन्त शिरोमणि गोस्वामी तुलसीदास ने **श्री रामचरितमानस** के माध्यम से राम रस रुपी अमृत गंगा में डुबकी लगाकर आध्यात्मिक रुपी मोती निकाल कर उसमें सराबोर होने का अवसर प्रदान किया है।

अपने समय के महान् सन्त, भगवान श्री राम के अनन्य भक्त और रामचरित मानस सहित 12 महान ग्रंथों के लेखक, मानवता में राम भक्ति का बीज प्रस्फुटित करने वाले, सरल स्वभाव और सौम्य प्रवृत्ति के संपोषक परम भक्त गोस्वामी सन्त तुलसी दास की 529 वीं जयंती 19 अगस्त को सारे देश में,बड़ी श्रद्धा और उल्लास पूर्वक तरीके से मनाई गई। मैं सन्त तुलसीदास जी को नमन करती हूँ , जिनके द्वारा जलाए गए , ज्ञान के दीपक की आभा से आलोकित होकर , करोड़ों लोगों ने अपने जीवन का उद्धार किया है। सन्त , **तुलसीदास जयंती** के अवसर पर बधाई। **पारम्परिक हिन्दू कैलैण्डर में श्रावण के महीने में, कृष्ण पक्ष की सप्तमी को मनाई जाती है। उस देदीप्यमान सितारे द्वारा बिखेरी गई, आध्यात्मिक चमक आज सैकड़ों सालों के बाद भी, रामचरितमानस के माध्यम से बोए गए मोतियों की चमक आज भी उद्भासित हो रही है और भगवान के उदात्त मानवीय मूल्यों को आत्मसात करते हुए ही**, आज भी,भगवान को प्राप्त करने के, सरल और आसान तरीकों के बारे में मानवता कोअवगत करवाया जा रहा है।

आधुनिक युग में,रामचरितमानस जीने की राह और एक अनूठे रुपों का आज भी संजीव और जीवन्त प्रमाण है। रामचरितमानस जीवन की एक सशक्त और अमर गाथा है और इसमें भगवान श्री राम के आदर्श चरित्र और उदात्त मानवीय मूल्यों और संवेदनाओं का ,संजीव चित्रण अंकित किया गया है। रामचरितमानस , बाल्मीकि रामायण की तरह ही, एक अद्वितीय और अनुकरणीय मिसाल है। वह आज 450 साल बाद भी, इतिहास के पन्नों में उसी प्रकार से अमर है । **आज से 450 सौ साल पहले, सन्त तुलसीदास ने 80 वर्ष की आयु में , रामचरितमानस लिखना शुरू किया और उसके लिखने में 2 वर्ष 7 महीने और 26 दिन लगे थे।** सन्त तुलसीदास ने यह सिद्ध कर दिया की उम्र कोई मायने नहीं रखती है। रामचरितमानस इसका सबसे बड़ा एक ज्वलंत उदाहरण और प्रमाण है। उन्होंने अपनी लेखनी के द्वारा, हजारों साल का एक अमूल्य उपहार दे दिया, जिसको पढ़कर भगवान श्री राम के प्रति अटूट आस्था और श्रद्धा तथा विश्वास और समर्पण भाव का उदय होता है।

आज हम गोस्वामी तुलसीदास से सबक ले सकते हैं कि परमात्मा के प्रति अटूट भरोसा रखते हुए उसे भक्ति और उपासना के माध्यम से सहज ही हासिल किया जा सकता है। **आप अपनी योग्यता को निरंतर निखारते रहें और इस बात पर कभी भी कोई ध्यान न दे कि अब मेरी लिखने पढ़ने की उम्र हो गई है। उम्र की किस अवधि में कौन सा काम किया जाए और कौन सा नहीं, यह एक व्यक्ति की दृढ़ इच्छाशक्ति और विश्वास पर निर्भर करता है।** जहां तक मेरा मानना है, श्री रामचरितमानस जैसा उत्कृष्ट ग्रंथ और साहित्य बहुत ही कम हैं , जो मनुष्य की रग- रग में बस गए हो और परिवारों की एक प्रकार से आचार संहिता बन गए हो और ऐसे ही साहित्य का नाम है **श्री रामचरितमानस** इसके रचयिता तुलसीदास जी की जयंती 19 अगस्त को मनाई गई। सन्त तुलसीदास वास्तव में, एक मनोवैज्ञानिक ऋषि भी थे, जिन्होंने आज से 450 वर्ष पहले **श्रीरामचरितमानस** करके आध्यात्मिकता का बीजारोपण किया था। तुलसीदास जी को, श्रीरामचरितमानस को लिखने में दो वर्ष सात महीने और 26 दिन लग गए थे। इसकी रचना करने के समय सन्त तुलसीदास की आयु लगभग 80 वर्ष की ही थी।

वास्तव में सन्त **गोस्वामी तुलसीदास के द्वारा लिखित श्रीरामचरितमानस को देखकर कौन, सकता है कि, लेखन के कार्य में,** उम्र भी कभी कोई बाधा बन सकती है , बल्कि मैं तो यहां तक समझती हूँ कि, होता तो, वहीं है, **जो राम रची राख्या।** मैं इसके विपरित समझती हूँ , कि जैसे-जैसे एक व्यक्ति की उम्र रहती बढ़ती है, **तो उसके मन मस्तिष्क में नई नई कल्पनाओं और नए - नए शब्दों के सर्जन होता रहता है और उसके लेखन में भी निरंतर ही निखार आता रहता है । जिससे यह पता चलता है कि , मन की परिकल्पनाओं में, शब्दों के सर्जन के कितने बहुमुखी रूप वाले अर्थ हो सकते हैं और श्री रामचरितमानस इसका एक जीवंत और संजीव प्रमाण बन गया है।**

गोस्वामी तुलसीदास ने 80 वर्ष की उम्र में, रामचरितमानस की रचना करके आने वाली पीढ़ियों के लिए एक बहुमूल्य विरासत सौंपने का काम किया है। **वैसे तो सन्त तुलसीदास दास ने श्री रामचरितमानस सहित 12 ग्रन्थों की रचना की थी, जिनमें कवितावली, जानकीमंगल, विनय पत्रिका, गीतावली, हनुमान चालीसा और भैरवी रामायण आदि प्रमुख हैं। लेकिन सबसे ज्यादा ख्याति श्रीरामचरितमानस को ही मिली है।** इन सभी ग्रन्थों के माध्यम से मानवीय मूल्यों और संवेदनाओं के माध्यम से जीवन में परम सन्तोष रखते हुए ही , भगवान को प्राप्त करने का मार्ग प्रशस्त किया जा सकता है।, **आज के इस भाग दौड़ के इस आधुनिक युग में, हम सन्त तुलसीदास जी से सबक ले और परमात्मा पर भरोसा रखें तो, आपकी योग्यता में निरन्तर निखार आता रहेगा और यह इस बात का भी द्योतक है कि , उम्र की किस अवधि में कौन से काम किए जाएं और कौन से नहीं, यह कोई भी मायने नहीं रखता है। आप में केवल सीखने और कुछ करने का जज्बा और जुनून होना चाहिए।**

सन्त तुलसीदास ने, दान के महत्त्व का भी बड़े ही सहजता से उल्लेख किया है। एक बार एक गरीब महिला सन्त तुलसीदास के पास आई और उन्होंने अपनी लड़की के विवाह के लिए उनसे सहायता मांगी और सन्त तुलसीदास ने उस महिला के आग्रह पर कवि रहीम, जोकि अकबर के दत्तक पुत्र के साथ साथ ही अवध इलाके का गर्वनर भी था और उसने तुलसीदास के कहने पर उस गरीब महिला की सहायता की। **वह महिला सन्त तुलसीदास का आभार व्यक्त करने आई , तब तुलसीदास ने उस महिला से पूछा कि दान देते समय उसका व्यवहार कैसा था। अब महिला ने कहा कि उसके नैन झूके हुए थे।** तब तुलसीदास ने रहीम को एक पत्र लिखा कि -

ऐसी नेकि दान की, कित सीखे हो सैन। ज्यो -ज्यो कर ऊपर करें ,नीचे झूके नैन।।

इसके जवाब में कवि रहीम ने तुलसी दास को एक पत्र लिखकर कहा कि -

देनहार कोई और है, भेजत है दिन रैन। लोग भ्रम न करें, इसलिए मेरे नीचे नैन।।

भगवान श्री राम के प्रति सन्त तुलसीदास की अगाध निष्ठा और समर्पण की भावना थी,वह हरेक वस्तु में भगवान श्री राम की ही छवि देखते थे। **इस जीवन में भी सफलता हासिल करने का मूल मंत्र एक ही है कि, आप जो भी काम करें निष्ठा पूर्वक और समर्पण भाव से ही करें और भगवान का शुक्रिया अदा करें कि उसने आपको वह काम करने का सौभाग्य प्रदान किया है।**

सन्त तुलसीदास जयंती की पुनः बधाई। विपुल धन्यवाद। *****

---

6 सितंबर को खातीवास में, आयोजित जांगिड सम्मेलन में, समाज की प्रतिभाओं एवं बुजुर्गों का सम्मान किया गया।



प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा देश में विश्वकर्मा समाज के लोगों के लिए 13000 करोड़ रुपए की विश्वकर्मा कौशल विकास योजना लागू की गई है, जिससे विश्वकर्मा समाज के अनेक महानुभावों द्वारा इस योजना का लाभ उठा कर उनको आर्थिक संबल मिला है और इसके अतिरिक्त ने अपने 6 वर्ष के राज्य सभा सांसद के कार्यकाल के दौरान 6 वर्षों के दौरान विश्वकर्मा समाज के सभी वर्गों के लोगों को 60 करोड़ रुपए की अपने सांसद निधि कोष से वितरित की थी।

यह उद्गार, **मुख्य अतिथि, राज्य सभा के पूर्व सांसद रामचन्द्र जांगड़ा** ने जिला सभा महेंद्रगढ़ के तत्वावधान में, ग्राम खातीवास में 6 सितंबर को आयोजित वार्षिक जांगिड जिला सम्मेलन और प्रतिभा सम्मान समारोह में, 10वीं और 12वीं कक्षा के प्रतिभाशाली छात्र - छात्राओं और उपस्थित महानुभावों को सम्बोधित करते हुए व्यक्त किए। इस अवसर पर विभिन्न खंडों के 145 विधार्थियों और युवाओं को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर प्रत्येक विद्यार्थी को 2100 रुपए, एक प्रशस्ति पत्र और स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया गया। इसके अतिरिक्त गांव तोहड़ा की छात्रा लावण्या जांगिड को करनाल में आयोजित की गई राज्य स्तरीय ट्रायथलान एथलिट में, रजत पदक विजेता को 5100 रुपए देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ करने से पहले, मुख्य अतिथि और विशिष्ट अतिथियों द्वारा भगवान विश्वकर्मा की आरती और पूजन किया गया। सभी अतिथियों को आयोजन समिति की तरफ से स्मृति चिह्न के रूप में भगवान श्री राम की प्रतिमा देकर और फूल माला पहनाकर सम्मानित किया गया।

पूर्व सांसद रामचन्द्र जांगड़ा ने, समाज को एकजुट होकर आगे बढ़ने का आह्वान करते हुए कहा कि समाज जागरूक होकर

आगे बढ़ेगा तो उसे प्रगति करने से कोई भी नहीं रोक सकता है। उन्होंने समाज की युवा शक्ति को भी शिक्षा, संगठन और सामाजिक जिम्मेदारी के साथ आगे बढ़ने का आह्वान भी किया। उन्होंने कहा कि, हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री और अब केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल खट्टर ने , विश्वकर्मा समाज के उदीयमान भविष्य , युवाओं को आधुनिक युग में तकनीकी शिक्षा और नवाचार की शिक्षा देने के उद्देश्य से गांव दुधोला, जिला फरीदाबाद में, लगभग 4000 एकड़ भूमि में भगवान विश्वकर्मा तकनीकी विश्वविद्यालय की स्थापना की है और इसकी स्थापना करके प्रदेश के युवाओं को एक उपहार दिया गया है। आज इस विश्वविद्यालय के माध्यम से, विश्वकर्मा समाज के हजारों बच्चे तकनीकी शिक्षा ग्रहण करके अपना जीवन सार्थक कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त उन्होंने अपने कार्यकाल के दौरान ओबीसी के हितों की रक्षा करने के लिए कई बार संसद में भी आवाज उठाई और विशेषकर आरा मशीनों के लिए लाइंस में छूट दिलवाई गई।



हरियाणा श्रम कल्याण बोर्ड के चेयरमैन रोहताश जांगड़ा ने, कहा कि हरियाणा सरकार बिना खर्ची और पर्ची के प्रदेश के युवाओं को रोजगार प्रदान कर रही है और यही कारण है कि आज जांगिड समाज के हजारों युवाओं को योग्यता के आधार पर नौकरी मिल रही है। उन्होंने कहा कि इस समाज के युवा जन्मजात विलक्षण प्रतिभा के धनी होते हैं, लेकिन उनको पहले अवसर नहीं मिल पा रहा था और वर्तमान सरकार ने पारदर्शी तरीके से, युवाओं को बेहतर अवसर उपलब्ध करवाने का कार्य करते हुए रोजगार देना शुरू किया है। इसका लाभ समाज के अनेक युवाओं ने उठाया है। उन्होंने कहा कि श्रम कल्याण बोर्ड की ऑनलाइन प्रक्रिया जल्दी ही शुरू की जा रही है, जिसका सभी श्रमिकों को उचित लाभ मिलने लगेगा। **हरियाणा प्रदेश सभा के महामंत्री टेकचंद जांगिड ने** 95 प्रतिशत से अधिक अंक हासिल करने वाले सभी 6 विद्यार्थियों को अपनी तरफ से एक - एक हजार रुपए अतिरिक्त देने की घोषणा की और कहा कि , यह भविष्य के होनहार उन छात्र - छात्राओं का सम्मान है, जिन्होंने अपने कठिन परिश्रम से यह उपलब्धि हासिल की है और यही बच्चे कल को डॉ., इंजीनियर और प्रशासनिक अधिकारी बनकर समाज की सेवा करेंगे। मैं इन सभी बच्चों के उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामना करता हूँ।

अपने उद्बोधन में **महेन्द्रगढ़ जिला अध्यक्ष अशोक पैकन ने** सभी अतिथियों और आगंतुकों का स्वागत करते हुए, प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को हार्दिक बधाई देते हुए कहा कि , विद्यार्थियों को अपने लक्ष्य सदैव ही ऊंचे रखने चाहिए और अपने आप को कभी भी किसी से कम न आंके और असफलता का सामना होने पर दोगुनी मेहनत और परिश्रम से एक बार फिर से शुरूआत करें। उन्होंने सुझाव दिया कि हमारे महापुरुषों की जीवनियों का अध्ययन करके उनके जीवन से प्रेरणा ग्रहण करें।

खातीवास के धर्मचंद जांगिड ने , जांगिड समाज के लोगों का आह्वान किया कि वह सभी अपने नाम के साथ जांगड़ा न लगाकर, अपने नाम के पीछे जांगिड शब्द लगाएं , क्योंकि जांगड़ा शब्द, केवल हरियाणा के कुछ ही क्षेत्रों में ही लगाया जाता है। सत्यप्रकाश जांगिड ने भगवान विश्वकर्मा के अवतरण और उनके द्वारा किए गए कार्यों का उल्लेख करते हुए इसके बारे में समाज को विस्तार से बताया। उन्होंने कहा कि खातीवास गांव में आयोजित इस प्रतिभा सम्मान समारोह ने युवाओं में एक नई ऊर्जा पैदा की है। डॉ. अनिल कुमार जांगिड ने वैदिक व्यवस्था का विस्तार से वर्णन किया।

खातीवास गांव के सरपंच मुकेश जांगिड ने, अंत में सभी का धन्यवाद व्यक्त करते हुए कहा कि खातीवास की धरा पर आयोजित किया गया यह प्रतिभा सम्मान समारोह केवल मात्र एक कार्यक्रम नहीं था अपितु प्रतिभाओं को सम्मान, वरिष्ठों का सम्मान और युवाओं के उत्साहवर्धन के साथ साथ समाज की एकता का जीवंत संदेश लेकर आया है। इस कार्यक्रम कुशल मंच संचालन मास्टर अरविन्द जांगिड ने किया।

इस कार्यक्रम की शोभा को द्विगुणित करने वालों में, हरियाणा प्रदेश अध्यक्ष हनुमान प्रसाद जांगिड, पूर्व प्रदेश खुशी राम जांगिड और डॉ. शेरसिंह जांगिड, हरियाणा प्रदेश महिला अध्यक्ष सुमन जांगिड, हरियाणा प्रदेश सभा के महामंत्री टेकचंद जांगिड, महेन्द्रगढ महिला प्रकोष्ठ की जिला अध्यक्ष डॉ पूर्ण प्रभा, फरीदाबाद जिला अध्यक्ष चरणपाल जांगिड, महामंत्री राजेंद्र जांगिड, ब्रह्मर्षि अंगिरा सीनीयर स्कूल फरीदाबाद, के चेयरमैन बलबीर जांगिड, गोकल सरपंच, ब्लॉक प्रधान दुलीचंद मदन लाल सांवल राम, धर्मेंद्र, मनोज कुमार, प्रमोद कुमार, राजेश जांगिड, लक्ष्मीनारायण आर्य, वरिष्ठ उपाध्यक्ष पीताम्बर जांगिड, कृष्णावतार जांगिड, मामचंद सरपंच, चंद्रशेखर, सीताराम जांगिड, राजेश कुमार राजू, कप्तान सूरजभान, कप्तान सुरेंद्रपाल, राजू खातीवास, रामगोपाल उद्योगपति, प्रमोद, अशोक खातीवास, श्रीचंद पूर्व सरपंच सहित अनेक गणमान्य लोग शामिल थे।

अशोक पैकन जांगिड -जिला अध्यक्ष महेन्द्रगढ़

"सिस्टर ऑफ सोल्जर्स" की गौरवपूर्ण उपाधि से अलंकृत पार्वती जांगिड, ने, लद्दाख की दुर्गम अग्रिम चौकियों पर पहुंच कर जवानों की कलाई पर राष्ट्र रक्षा सूत्र राखी बांधी।



जीवन में देश की सीमाओं के सजग प्रहरी बनकर सीमाओं की रक्षा करने वाले चीफ आफ डिफेंस स्टाफ (सी डी एस) और ब्लैक कमाण्डों के, नौजवानों की कलाई पर रक्षा सूत्र बांधकर भाई बहन के रिश्ते को नया आयाम देने वाली, **पार्वती जांगिड** आज किसी परिचय का मोहताज नहीं है। सिस्टर आफ सोल्जर्स के नाम से विख्यात, पार्वती जांगिड के संकल्प और जोश को बर्फिली चौटियां और माइनस तापमान और आक्सीजन की कमी वाले क्षेत्र लेह की धरा भी नहीं रोक सकी और उन्होंने भाई- बहन के बीच प्रेम की कड़ी, राखी रक्षा सूत्र को नौजवानों की कलाई बांधकर अपने भाई बहन के रिश्ते को, एक नया आयाम दिया है।

उन्होंने भारत रक्षा पर्व यात्रा-2026 के अन्तर्गत लेह की बर्फीली चोटियों, माइनस तापमान और कम ऑक्सीजन के बीच, जवानों से जुड़ रहे भाई - बहन के रिश्ते को एक नया नाम दिया है। वह अब तक पिछले 17 सालों में सैनिकों के साथ रक्षा बंधन और दीपावली का त्योहार मनाती आ रही है और अब तक 5 लाख 55 हजार से अधिक सैनिकों एवं सीमा प्रहरियों को रक्षा सूत्र बांधकर भाई बहन के प्रेम की कड़ी को एक नया आयाम दिया है।

रक्षाबंधन के पावन अवसर पर **"सिस्टर ऑफ सोल्जर्स"** मानद कर्नल और भारत युवा संसद की चेयरपर्सन , **पार्वती जांगिड सुथार** द्वारा शुरू की गई **"भारत रक्षा पर्व यात्रा-2026"** अब दिल्ली से निकलकर लद्दाख के अत्यंत दुर्गम सामरिक क्षेत्रों तक पहुँच चुकी है। देश की सीमाओं पर तैनात सैनिकों के साथ रक्षाबंधन मनाने की 17 वर्ष पुरानी परंपरा को आगे बढ़ाते हुए ही, पार्वती, द्वारा इस बार भी, हजारों किलोमीटर का सफर तय करके अतिदुर्गम क्षेत्रों पर जवानों के बीच पहुंची है। पार्वती जांगिड का चीफ आफ डिफेंस स्टाफ (सीडीएस) के महानिदेशक भारत सरकार के प्रमुख रक्षा अध्यक्ष, जनरल एन एस राजा सुब्रमणि से लेकर, इण्डो तिब्बत पुलिस बटालियन और सीमा सड़क संगठन के अधिकारियों द्वारा मान - सम्मान किया गया। **पार्वती जांगिड की हर वीर मेरा भाई, हर सीमा मेरी जिम्मेदारी और भारत मेरी सर्वोच्च आस्था इस उद्देश्य को लेकर दिल्ली से इस यात्रा की शुरुआत हुई,** जहाँ रक्षाबंधन पर इन्टीग्रेटेड रक्षा स्टाफ मुख्यालय में, चीफ आफ डिफेंस स्टाफ और भारत सरकार के प्रमुख रक्षा अध्यक्ष, जनरल एन. एस. राजा सुब्रमणि को रक्षासूत्र बांध कर भारत रक्षा पर्व यात्रा-2026 का शुभारम्भ किया गया। इससे पहले उनके द्वारा रक्षाबंधन की पूर्व संध्या पर राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड के महानिदेशक बी. श्रीनिवासन, और मुख्यालय में, वरिष्ठ अधिकारियों और जांबाज़ ब्लैक कैट कमाण्डों को भी राखी बाँधी गई और पुरानी यादों को ताजा करते हुए उन्होंने कहा कि 9 साल पहले बद्रीनाथ से आगे माणा गाँव की अग्रिम पोस्ट पर तत्कालीन युवा कमान्डेंट रोहित की कलाई पर राखी बांधी थी और आज 9 साल बाद फिर , उसी भाई को राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड के उप कमांडेंटके रूप में सामने आए हैं, लेकिन माणा गाँव की बर्फीली चौकी से एन एस जी मुख्यालय तक-समय बदला, वर्दी बदली, जिम्मेदारियाँ बदलीं, लेकिन भाई-बहन का रिश्ता नहीं बदला और इसके साथ ही उसकी आंखों में ख़ुशी के आंसू आ गए और वह भावुक हो गई।

उन्होंने कहा कि दिल्ली से लद्दाख की अति-दुर्गम ऊँचाइयों तक **"सुरक्षित सीमा - समर्थ भारत"** भारत रक्षा पर्व यात्रा-2026 के तहत भारतीय सेना की फायर एंड फ्यूरी की 14 वीं कोर , सीमा सड़क संगठन के प्रोजेक्ट हिमांक तथा इण्डो तिब्बत बोर्डर पुलिस, उत्तर-पश्चिम सीमांत के अंतर्गत लेह-लद्दाख के विभिन्न सैन्य प्रतिष्ठानों, बटालियनों और अग्रिम क्षेत्रों में पहुँचकर जवानों से संवाद किया और रक्षासूत्र अर्पित किए। लद्दाख तथा उच्च हिमालयी अग्रिम क्षेत्रों में यह यात्रा उन जवानों तक पहुँच रही है, जो ऐसे वातावरण में देश की सुरक्षा कर रहे हैं जहाँ तापमान शून्य से कई डिग्री नीचे है, ऑक्सीजन सामान्य से बेहद कम है और मौसम हर पल चुनौतीपूर्ण रहता है।

इन परिस्थितियों में भी जवान अपनी ड्यूटी मुस्तैदी से करती है, क्योंकि - राष्ट्र रक्षा सर्वोपरि है। ऐसे स्थानों पर जाकर जवानों की कलाई पर राखी बाँधना केवल एक सामाजिक पहल नहीं, बल्कि उस सैनिक के सामने खड़े होकर यह कहना है कि **"राष्ट्र आपसे सुरक्षित है और आप अकेले नहीं हैं-पूरा राष्ट्र आपके साथ खड़ा है।"** यह शब्द उनको कर्तव्य परायणता का एक नया बोध करवाता

है। यही कारण है कि पार्वती जांगिड ने दुर्गम सीमाओं पर जवानों के बीच पहुँचकर उनका मनोबल बढ़ाया है और उनकी सबसे बड़ी पहचान कोई पुरस्कार नहीं-बल्कि उनकी वह आत्मीयता है, जो वह हर सैनिक एवं सीमा प्रहरी के हृदय में छोड़कर जाती हैं। सैनिकों के प्रति उनकी इसी अद्वितीय आत्मीयता, समर्पण और निरंतर सेवा-भाव को भारतीय सशस्त्र बलों ने सम्मान देते हुए पार्वती जांगिड को **"सिस्टर ऑफ़ सोल्जर्स"** की गौरवपूर्ण उपाधि से अलंकृत किया और यह विशिष्ट सम्मान प्राप्त करने वाली वह भारत की पहली और एकमात्र सिविलियन हैं।

लद्दाख की इस यात्रा के दौरान उनके राष्ट्रसेवा एवं सैनिक कल्याण कार्यों के लिए उन्हें विभिन्न सैन्य इकाइयों द्वारा प्रशस्ति-पत्र और प्रशंसा पत्र प्रदान किए गए हैं। जहां, इण्डो तिब्बत बोर्डर पुलिस ने, उत्तर-पश्चिम फ्रंटियर ने फ्रंटियर कमेंडेशन से सम्मानित किया तो विभिन्न बटालियनों ने **"कमाडेंट कमेंडेशन"** देकर पार्वती के कार्यों को सेल्यूट किया। वहीं सेना की तरफ से भारतीय सेना प्रशस्ति-पत्र देकर सम्मानित किया गया। पार्वती जांगिड की इस यात्रा का उद्देश्य केवल रक्षासूत्र बाँधने तक सीमित नहीं है, बल्कि सैनिकों की व्यक्तिगत समस्याओं को सुनना तथा संबंधित विभागों से उन समस्याओं के समाधान का प्रयास करना, जवानों मनोबल बढ़ाना, परिवारों से जुड़ाव बनाना और जवानों को यह अहसास कराना कि देश उन्हें याद करता है और उनके त्याग को सम्मान देता है, इस अभियान का मूल उद्देश्य है। यह केवल एक रक्षासूत्र नहीं है अपितु-यह राष्ट्र और उसके रक्षक के बीच विश्वास की डोर है।

आज इस भारत रक्षा पर्व यात्रा-2026 का संदेश बिल्कुल स्पष्ट है- **" सीमा पर जवान अकेला नहीं है, बल्कि उसकी कलाई पर बंधे रक्षासूत्र के साथ करोड़ों देशवासियों का विश्वास बंधा हुआ है** पार्वती जांगिड सुथार गर्व से कहती है की - **हर वीर मेरा भाई। हर सीमा मेरी जिम्मेदारी और भारत-मेरी सर्वोच्च आस्था है।** पार्वती जांगिड का यह अभियान केवल एक यात्रा नहीं, बल्कि सैनिकों के प्रति एक बहन के अटूट समर्पण की जीवंत मिसाल है। हर वर्ष वह 50-60 दिन सेना और सुरक्षा बलों के बीच रहकर हजारों किलोमीटर की सीमांत यात्रा करती हैं, उन दूरस्थ और दुर्गम चौकियों तक पहुँचती हैं जहाँ सामान्य जीवन की सुविधाएँ भी मुश्किल से पहुँच पाती हैं। उनके इसी जज़्बे को देश के सशस्त्र बल सैल्यूट करते हैं और जवान पूरे वर्ष उस पल की प्रतीक्षा करते रहते हैं, जब उनकी **"सिस्टर ऑफ़ सोल्जर्स"** फिर उन सुदूर सीमाओं पर आएँगी, उनकी सूनी कलाइयों पर राखी बाँधेंगी और अपने स्नेह, सम्मान एवं विश्वास के रंगों से उन्हें भर देंगी। यह रिश्ता किसी औपचारिकता का नहीं, बल्कि उस विश्वास का प्रतीक है जिसमें सीमा पर खड़ा हर जवान अपनी बहन पार्वती को अपने बीच पाकर आत्मीयता महसूस करता है-**"देश ने हमें भुलाया नहीं है, हमारी बहन हमारे साथ है।"**

डॉ. मोहन सुथार

मानव सुथार ने रचा इतिहास

भारत और श्रीलंका के बीच 15-19 अगस्त तक गेल श्री लंका में आयोजित किए पहले टेस्ट क्रिकेट मैच में, दोनों पारियों में, मानव सुथार ने टेस्ट मैच के पांचवें दिन, कुल 10 विकेट लेकर एक नया इतिहास रच दिया है।



उन्होंने पहली पारी में कुल चार विकेट और 24 रन बनाए और दूसरी पारी में 6 विकेट लेकर एक प्रकार से मैच का ही पासा ही पलट दिया था और भारतीय क्रिकेट टीम की इस टेस्ट मैच में विजय सुनिश्चित कर दी थी और इस मैच की विशेषता यह रही कि मानव सुथार ने अपनी पहली ही बाल पर पहली विकेट लेकर, अफगानिस्तान के खिलाफ अपने डेब्यू मैच में पहली बाल में पहली विकेट लेने का अपना इतिहास कायम रखा है।

महासभा के प्रधान रामपाल शर्मा ने मरुभूमि के इस उदीयमान क्रिकेट खिलाड़ी मानव सुथार को बधाई देते हुए कहा कि, उसने अफगानिस्तान के खिलाफ पहले डेब्यू टेस्ट मैच में 7 विकेट लिए और अपने इस दूसरे और श्री लंका में खेले गए पहले टेस्ट मैच में दोनों पारियों में कुल 10 विकेट लेकर,अपना ही पहला रिकार्ड तोड कर एक नया इतिहास रचते हुए यह साबित कर दिया कि उसका भविष्य बड़ा ही उज्ज्वल है।

मैं उसके उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामना करता हूँ। ****

हरियाणा के राज्यपाल ने शीशपाल जांगिड को राज्य शिक्षक पुरस्कार से सम्मानित किया।



हरियाणा के राज्यपाल प्रोफेसर असीम दास घोष , मुख्य मंत्री नायब सिंह सैनी और शिक्षा मंत्री महिपाल डांढा ने राष्ट्रीय शिक्षक दिवस और राष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्णन के जन्म दिवस के अवसर पर, 5 सितंबर को पंचकूला में आयोजित एक समारोह में, **शीशपाल जांगिड** को, उनकी शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट सेवाओं के लिए राज्य शिक्षक पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया।

एक प्रेरणादायी शिक्षक एवं उदार व्यक्तित्व के धनी समाजसेवी शीशपाल जांगिड का जन्म पिता रतनसिंह जांगिड और माता श्रीमती मेवा देवी के घर 13 जनवरी 1972 को गांव जाटल, जिला पानीपत में हुआ। एक साधारण ग्रामीण परिवेश में, जन्म लेने के बावजूद भी, उन्होंने अपनी प्रतिभा दक्षता और दृढ़ संकल्प एवं निरंतर परिश्रम के बल पर शिक्षा और सामाजिक सेवा के क्षेत्र में, कार्य करते हुए अपनी एक विशिष्ट पहचान बनाई उन्होंने एलएलबी की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। इसके पश्चात उन्होंने एलएलएम की उपाधि भी प्राप्त की है । उनको जिला कुरुक्षेत्र में छात्र कानूनी साक्षरता अभियान का जिला समन्वयक नियुक्त किया गया है। इस दायित्व के माध्यम से उन्होंने विद्यार्थियों को कानून, संविधान, अधिकारों एवं कर्तव्यों के प्रति जागरूक करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसके साथ ही शिक्षा विभाग द्वारा उन्हें रोड सेफ्टी एवं सुरक्षित वाहन और सुरक्षित स्कूल नीति से संबंधित गतिविधियों का जिला समन्वयक नियुक्त किया गया है। उनकी शिक्षण दक्षता, नवाचारपूर्ण प्रयासों, प्रशासनिक क्षमता तथा विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के प्रति समर्पण को देखते हुए उनका नामांकन राज्य शिक्षक पुरस्कार के लिए प्रेषित किया गया।

महासभा प्रधान रामपाल शर्मा ने, शीशपाल जांगिड को राज्य शिक्षक पुरस्कार मिलने पर बधाई देते हुए कहा है कि उनका जीवन परिश्रम और लगन का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। मैं उनकी दीर्घायु और उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामना करता हूँ।****

मानेहरु की गुंजन जांगिड ने राष्ट्रीय युवा एथलेटिक्स चैंपियनशिप में रजत पदक जीता ।

गुंजन जांगिड ने लुधियाना पंजाब में 1 से 3 सितंबर तक आयोजित की गई 21वीं राष्ट्रीय यूथ एथलेटिक्स खेल कूद प्रतियोगिता में ऊंची कूद स्पर्धा में 1.65 मीटर की छलांग लगाकर देश में दूसरा स्थान हासिल किया।



इस प्रतियोगिता में देश भर से लगभग 1200 एथलिटों ने भाग लिया था। गुंजन जांगिड ने , इस प्रतियोगिता में रजत पदक हासिल करके अपनी बहुआयामी प्रतिभा और दक्षता का परिचय दिया है और इससे न, केवल जांगिड समाज का, अपितु प्रदेश का नाम गौरवान्वित किया है।

गुंजन जांगिड का रजत पदक जीतने के बाद , अपने पैतृक गांव मानहेरू में पहुंचने पर नागरिक अभिनंदन एवं सम्मान समारोह आयोजित किया गया जिसमे महासभा के उपप्रधान श्रीराम जांगिड सहित सैकड़ो बुजुर्गों, मातृशक्ति और युवा शक्ति ने शामिल होकर गुंजन जांगिड को बधाई दी और गांव के सरपंच सतीश सिंह ने गुंजन जांगिड को 5100 रुपए की राशि भेंटकर के सम्मानित किया।

गुंजन जांगिड के दादा धर्मवीर जांगिड ने बताया कि, गुंजन का जन्म 2 सितंबर 2010 में गांव मानेहरु जिला भिवानी में, पिता संजय जांगिड और उनकी माता योगिता जांगिड के घर हुआ । उनके पिता संजय जांगिड लकड़ी का कार्य करते हैं। गुंजन जांगिड आज कल भिवानी के एक प्राइवेट स्कूल में 11 वीं कक्षा की छात्रा है।

महासभा के प्रधान रामपाल शर्मा ने गुंजन जांगिड को रजत पदक जीतने पर बधाई देते हुए कहा मैं उसके हौसलों की उड़ान को बधाई देता हूँ , मुझे विश्वास है कि वह भविष्य में न केवल देश में अपितु अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी समाज और देश का नाम गौरवान्वित करेगी। मैं उसके उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामना करता हूँ।

श्रीराम जांगिड, भिवानी- महासभा उपप्रधान

मातादीन जांगिड को शास्त्री नगर , शाखासभा दिल्ली का निर्विरोध अध्यक्ष बनाया गया



महासभा के प्रधान रामपाल शर्मा के निर्देशानुसार, महासभा की बैंगलूरू में आयोजित त्रैमासिक बैठक में, एक सर्वसम्मत सुझाव दिया गया था कि शाखा सभा का चुनाव न करवाकर, शाखा सभा अध्यक्ष का चुनाव निर्विरोध रुप से सम्पन्न करवाया जाए और इस परिपाटी की पालना करते हुए ही दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष धर्मपाल शर्मा, जिला मध्य दिल्ली, अध्यक्ष हरद्वारी लाल शर्मा और चुनाव प्रभारी सुरेन्द्र शर्मा के, संयुक्त प्रयासों से जिला मध्य दिल्ली के अन्तर्गत आने वाली शास्त्री नगर शाखा सभा अध्यक्ष का चुनाव 6 सितंबर को निर्विरोध रुप से सम्पन्न करवाया गया। मातादीन जांगिड को शास्त्री नगर शाखा सभा का निर्विरोध अध्यक्ष निर्वाचित किया गया है।

चुनाव प्रभारी सुरेन्द्र शर्मा को, पारदर्शी तरीके से और संविधान सम्मत चुनाव करवाने का दायित्व सौंपा गया था और उन्होंने अपने विवेक और दूरदर्शिता का परिचय देते हुए, इस चुनाव को निर्विरोध रुप से सम्पन्न करवाने का भरसक प्रयास किया और इसमें उनको सफलता भी मिली।

दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष धर्मपाल शर्मा ने, इस आपसी सहयोग की मिसाल और सौहार्द पूर्ण वातावरण में चुनाव सम्पन्न करवाने में, शास्त्री नगर के प्रतिष्ठित समाजबन्धुओं का आभार व्यक्त किया।

दिल्ली प्रदेश सभा के महामंत्री, ब्रह्मानन्द शर्मा ने कहा कि , मुझे विश्वास है कि जो दायित्व, शाखा सभा अध्यक्ष मातादीन जांगिड को सौंपा गया है, वह उस दायित्व का सत्यनिष्ठापूर्वक तरीके से पालन करते हुए और शास्त्री नगर के समाज बंधुओं की भावना को ध्यान में रखते हुए निर्लेप और निष्पक्ष भाव से कार्य करते हुए एक नया आयाम स्थापित करेंगे।

इस चुनाव कार्यक्रम की शोभा बढ़ाने वालों में, दिल्ली प्रदेश सभा, अध्यक्ष धर्मपाल शर्मा,कार्यकारी अध्यक्ष जगदीश खंडेलवाल,महामंत्री ब्रह्मा नंद शर्मा, उपाध्यक्ष सतबीर शर्मा और शास्त्री नगर के अनेक गणमान्य समाज और मातृ शक्ति की शामिल थी। इन सभी की गरिमामय उपस्थिति ने, इस चुनावी कार्यक्रम की गरिमा को द्विगुणित किया और भव्यता प्रदान की।

बी एन शर्मा, महामंत्री, दिल्ली प्रदेश सभा,

सीकर मे विश्वकर्मा कल्याण समिति द्वारा विश्वकर्मा पूजा दिवस पर रक्तदान बाबत प्रचार प्रसार हेतु शपथ के साथ ही प्रतिभाशाली छात्र - छात्राओं का सम्मान किया गया।



विश्वकर्मा मंदिर दूजोद (सीकर) मे विश्वकर्मा भगवान की महा आरती के साथ विश्वकर्मा पूजा दिवस मनाया गया।



जे बी टी अध्यापक, बलजीत जांगिड को 5 सितंबर को राज्यपाल द्वारा राज्य शिक्षक पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया।

हरियाणा में भी 5 सितंबर को राज्य शिक्षक दिवस मनाया गया और इस अवसर पर प्रदेश में शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय और उत्कृष्ट कार्य करने वाले अध्यापकों को पंचकूला में आयोजित एक समारोह में हरियाणा के राज्यपाल प्रोफेसर असीम दास घोष, हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी और शिक्षा मंत्री महिपाल ढांडा द्वारा पर पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। इन पुरस्कार प्राप्त करने वालों में जे बी टी अध्यापक बलजीत जांगिड भी शामिल हैं। इसी क्रम में बलजीत जांगिड को 5 सितंबर को शिक्षक दिवस के अवसर पर राज्य शिक्षक पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया।



बलजीत जांगिड ने कहा कि शिक्षा में एक असीम शक्ति है। मेरा जन्म घसो कला, जिला जींद में 6 दिसम्बर 1971 में जयनारायण जांगिड के घर हुआ। उन्होंने सन् 1998 में जेबीटी शिक्षक का कोर्स पूरा किया और एक जे बी टी शिक्षक के रूप में उनकी पहली नियुक्ति 22 दिसंबर 2004 में प्रभोली जिला यमुनानगर में हुई। उसके बाद उसकी नियुक्ति अपने गांव के स्कूल में ही हो गई। बलजीत जांगिड को राज्य शिक्षक पुरस्कार मिलना उसकी कड़ी मेहनत कठोर परिश्रम व लग्न का ही परिणाम है।

महासभा प्रधान रामपाल शर्मा ने, राज्य शिक्षक पुरस्कार मिलने पर बलजीत जांगिड को बधाई देते हुए कहा कि, यह उनकी शिक्षा के प्रति समर्पण और समर्पित भाव के साथ ही सकारात्मक दृष्टिकोण का ही परिणाम है। मैं उनके उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामना करता हूँ।

*****

कोटा की श्रीमती उषा बरड़वा ने, दक्षिणी कोरिया में विश्व मास्टर्स चैम्पियनशिप प्रतियोगिता 2026 में, भारत का प्रतिनिधित्व किया।

उषा बरड़वा ने 24 अगस्त से 1 सितंबर तक, दक्षिण कोरिया में आयोजित विश्व मास्टर्स 2026 में, एथेलिटिक्स चैम्पियनशिप में भारत का प्रतिनिधित्व किया और इस रेस में प्रतिष्ठित स्थान हासिल करके न केवल देश का, अपितु राजस्थान प्रदेश और समाज का नाम गौरवान्वित किया है।



श्रीमती उषा बरड़वा ने कहा कि दक्षिण कोरिया के डेगू शहर में, आयोजित विश्व मास्टर्स एथलेटिक्स चैंपियनशिप 2026 में भारत का प्रतिनिधित्व करके उन्होंने देश और प्रदेश को गौरवान्वित किया है और 10 किलोमीटर दौड़ में 26 वां और 5 किलोमीटर दौड़ में 18 वां स्थान हासिल किया है। श्रीमती उषा ने इस प्रतियोगिता में 60 +वर्ष से अधिक आयु वर्ग में तीन प्रतिस्पर्धाओं में भाग लिया था और इन प्रतिस्पर्धाओं में 10 किलोमीटर, 5 किलोमीटर और 1500 मीटर दौड़ में हिस्सा भी शामिल था। इस प्रतियोगिता में राजस्थान प्रदेश के लिए भी यह विशेष गर्व की बात है कि राजस्थान से केवल दो ही एथलीटों का चयन भारत का प्रतिनिधित्व करने के लिए हुआ था , जिसमें कोटा से श्रीमती उषा बरड़वा ने 60+ आयु वर्ग में और अलवर से मनोज यादव ने 50+ आयु वर्ग में भाग लिया था। इस उपलब्धि पर उसके जीवन साथी आनन्द बरड़वा ने कहा कि, उषा ने अपने जीवन में अनेक पुरस्कार हासिल किए हैं और विश्व स्तर पर भी भारत की और अपनी प्रतिभा के आधार पर विशेष पहचान बनाई है।

महासभा की महिला प्रकोष्ठ की अध्यक्ष श्रीमती सविता शर्मा ने भी, महिला प्रकोष्ठ की उपाध्यक्ष उषा बरड़वा को उसकी उपलब्धि पर बधाई देते हुए आशा व्यक्त की है कि, वह भविष्य में इसी प्रकार से अपनी बहुआयामी प्रतिभा का परिचय देते हुए समाज का नाम गौरवान्वित करती रहेगी।

महासभा प्रधान रामपाल शर्मा ने, उषा बरड़वा को, उस द्वारा हासिल की गई विशेष उपलब्धियों के लिए बधाई देते हुए कहा कि, मैं आशा करता हूँ कि भविष्य में भी वह इसी प्रकार से अपने जज्बे को बनाए रखते हुए अपनी इस यात्रा को और अधिक सुखद बनाए और देश और समाज का नाम इसी प्रकार से गौरवान्वित करती रहेगी। *******

विक्रम बरड़वा, जोधपुर

राजेश कुमार 'सरल' को महाकाल की नगरी उज्जैन में, काव्य रत्न सम्मान देकर अनलंकृत किया गया।



हरियाणा प्रांत के भिवानी जिले की ग्रामीण पृष्ठभूमि से जुड़े **राजेश कुमार 'सरल' कवि, लेखक, साहित्य - प्रेमी एवं समाज - सेवी** के रूप में निरंतर अपनी साहित्यिक यात्रा को संजीदगी से आगे बढ़ा रहे हैं और इसी परम्परा के तहत राजेश कुमार सरल को अगस्त 2026 में उज्जैन में काव्य रत्न सम्मान देकर अनलंकृत किया गया। राजेश कुमार 'सरल' को साहित्यिक - संस्कार पारिवारिक - विरासत के रूप में प्राप्त हुए।

उनके दादा **डॉ. रघुवीर प्रसाद 'सरल'** अपने समय के प्रसिद्ध हास्य - कवि, समाज - सेवी तथा काष्ठ - कला के कुशल कारीगर और शिल्पी थे। अपने दादाजी की साहित्यिक - स्मृति अक्षुण्ण एवं सजीव और जीवन्त बनाए रखने तथा इसे आगे बढ़ाने के उद्देश्य से , राजेश कुमार ने उनके उपनाम सरल को अपने नाम का अभिन्न हिस्सा बनाया। इस प्रकार 'सरल' उनके लिए मात्र उपनाम नहीं, बल्कि पूर्वजों से प्राप्त साहित्यिक , धरोहर ,संस्कार, परंपरा , सृजन और धर्मिता को आगे बढ़ाने का एक दृढ़ संकल्प भी है।

सरल के लेख, कविताएँ एवं अन्य साहित्यिक - रचनाएँ , विभिन्न समाचार - पत्रों और पत्र - पत्रिकाओं में निरंतर प्रकाशित होती रहती हैं। अनेक साझा साहित्यिक - संकलनों में भी उनकी रचनाएँ भी निरन्तर प्रकाशित हो चुकी हैं। ग्रामीण - जीवन, मानवीय - संवेदना, सामाजिक - चेतना, संस्कृति और जीवन - मूल्यों के प्रति उनका रचनात्मक दृष्टिकोण विशेष रूप से उल्लेखनीय है। साहित्य के साथ साथ सामाजिक एवं संस्थागत गतिविधियों में भी, उनकी सक्रिय - भागीदारी है।

राजेश कुमार, प्रदेश सभा, हरियाणा के उपाध्यक्ष, नारायण साहित्य शाला, हरियाणा इकाई के संरक्षक तथा राष्ट्रीय हिन्दी साहित्यिक संस्था **'शब्दाक्षर'** के हरियाणा प्रदेश संरक्षक के रूप में साहित्य और समाज के मध्य सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं। उनको स्वतंत्रता - दिवस के उपलक्ष्य पर 15 अगस्त को, चैहड़ कलां, जिला भिवानी में राष्ट्रीय हिन्दी साहित्यिक संस्था **'शब्दाक्षर'** द्वारा **'काव्य शिरोमणि सम्मान'** प्रदान करके सम्मानित किया गया।

इतना ही नहीं वर्ष 2026 में सरल को अन्य उल्लेखनीय, सम्मान से विभूषित किया गया है, जिन सम्मानों में **'नारायण साहित्य सुरभि सम्मान',** अंतर्राष्ट्रीय साहित्यिक मित्र मंडल, जबलपुर द्वारा दिया गया सत्य सेतु रतन सम्मान,कान्हा सांस्कृतिक मंच, करनाल द्वारा कवि भूषण सम्मान तथा **'नारायण हृदय सम्मान'** और पूर्णिका श्री सम्मान प्रमुख हैं। यह सभी सम्मान उनकी निरंतर साहित्य साधना और रचनात्मक सक्रियता के प्रति साहित्यिक संस्थाओं द्वारा व्यक्त सम्मान के प्रतीक का द्योतक हैं। उज्जैन में उनको यह सम्मान, गोस्वामी तुलसीदास की साहित्य - साधना और उज्जैन की सांस्कृतिक - भूमि के संदर्भ में दिया गया

सरल की साहित्यिक - यात्रा अभी भी निरंतर गतिमान है। उनके व्यक्तित्व में, साहित्य, समाज और संस्कार - तीनों का सुंदर समन्वय दिखाई देता है । उनकी रचनाधर्मिता में निश्चित रूप से जीवन की सहजता है, अनुभवों की गहराई है और समाज के प्रति एक सजग दृष्टि भी है जो उनको निरन्तर लिखने के लिए अभिप्रेरित करती रहती है।

महासभा प्रधान रामपाल शर्मा ने राजेश कुमार को इस सम्मान के लिए बधाई देते हुए कहा है कि **राजेश कुमार 'सरल"** जैसे कवि हमारे समाज के कोहीनूर है। उन्होंने महासभा की ओर से हृदय की गहराइयों से बधाई और शुभकामना प्रेषित करते हुए राजेश कुमार के उज्जवल भविष्य की कामना की है।

****

डॉ. अनुपमा जांगिड, अखिल भारतीय आयुर्वेदा संस्थान दिल्ली में आयुर्वेद चिकित्सा अधिकारी के पद पर नियुक्त हुई।



डॉ. अनुपमा जांगिड ने अपनी योग्यता और क्षमता तथा प्रतिभा के बल पर अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान दिल्ली में आयुर्वेद चिकित्सा अधिकारी के पद पर नियुक्त होने के साथ ही अपनी उत्कृष्ट उपलब्धियों के बल पर परिवार तथा समाज का नाम गौरवान्वित किया है। **डॉ. अनुपमा जांगिड का मानना है कि,** आयुर्वेदिक चिकित्सा का उद्देश्य केवल रोग का उपचार करना ही नहीं, बल्कि रोग की रोकथाम करना तथा व्यक्ति के स्वास्थ्य को बनाए रखना भी इसी प्रक्रिया में शामिल है।

डॉ. अनुपमा का जन्म समालखा, जिला पानीपत में, सरकारी विद्यालय में हेडमास्टर के पद पर कार्यरत, राजकुमार तथा माता श्रीमती अनीता देवी के घर हुआ। डॉ.अनुपमा ने वर्ष 2015 में 12वीं कक्षा में 93 प्रतिशत अंक प्राप्त कर, उन्होंने चिकित्सा के क्षेत्र में जाने का निर्णय लिया। उन्होंने बीएएमएस की डिग्री वर्ष 2022 में, भगत फूल सिंह महिला विश्वविद्यालय खानपुर से पूरी की। वह इस परीक्षा में टॉपर रहीं। इसके पश्चात उन्होंने पंचकर्म विषय में स्नातकोत्तर की डिग्री वर्ष 2026 में के के विश्वविद्यालय बेलगाम कर्नाटक से हासिल की और इसे उन्होंने विशेष योग्यता के साथ उत्तीर्ण की। उल्लेखनीय है कि डॉ. अनुपमा जांगिड का विवाह, हरियाणा प्रदेश सभा के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष और महासभा की कोर कमेटी के सदस्य विद्यासागर जांगिड और शशीबाला शर्मा के पौत्र और हरियाणा में जी एस टी विभाग में आबकारी एवं कराधान अधिकारी, पंकज सागर और अंजू शर्मा के पुत्र अभिषेक सामड़ीवाल के साथ हुआ है। जो आजकल बैंगलूरू में मिलिट्री इंजीनियरिंग सर्विस में एक इंजीनियर के पद पर कार्यरत हैं।

महासभा प्रधान रामपाल शर्मा ने डॉ. अनुपमा को हार्दिक बधाई देते हुए कहा कि, अनुपमा ने अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान में चयनित होकर, समाज का नाम गौरवान्वित किया है। मुझे विश्वास है कि डॉ. अनुपमा मानव सेवा के मूल मंत्र को आत्मसात करते हुए मानवता की सेवा करेगी। भामाशाह श्री पी एल शास्त्री और उनकी धर्मपत्नी श्रीमती अनुसूईया शर्मा शास्त्री ने भी डॉ. अनुपमा को उसकी नियुक्ति पर बधाई देते हुए कहा कि वह समदृष्टि रखते हुए जरुरतमंद और गरीब मरीजों को तन्मयता पूर्वक और सत्य निष्ठा पूर्वक इलाज करे। हम आपके उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामना करते हैं। ****

महासभा दिल्ली के निर्देशानुसार जिलासभा ललितपुर के तत्वावधान मे जिले मे प्रथम बार ब्रह्म ऋषि अंगिरा जन्मोत्सव समारोह श्री श्री 1008 भगवान विराट विश्वकर्मा मंदिर व ब्रह्म ऋषि अंगिरा मंदिर नेहरू नगर ललितपुर मे बड़े ही धूमधाम से मनाया गया जिसमे जिले के काफी जांगिड ब्राह्मण समाज बंधु उपस्थित रहें।

गुरु श्री विश्वकर्मा मन्दिर एवं जांगड़ा धर्मशाला, गाँव जुण्डला , जिला करनाल, राज्य हरियाणा में 17 सितम्बर को प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी श्री विश्वकर्मा जयन्ती का आयोजन किया गया।









रतलाम ब्रह्म ऋषि अंगिरा जयंती पर भव्य शोभा यात्रा

श्री विश्वकर्मा पूजा दिवस पर देवास में महिलाओं द्वारा भव्य शोभा यात्रा

हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ

राजस्थान के विभिन्न नगर निगम, नगर परिषद एवं नगर पालिकाओं के चुनाव में जांगिड समाज की ओर से चुनाव मैदान में उतरे सभी सम्मानित प्रत्याशियों को अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा की ओर से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ। जिन प्रत्याशियों ने चुनाव में विजय प्राप्त कर जनप्रतिनिधि के रूप में सेवा का अवसर प्राप्त किया है, उन्हें हार्दिक बधाई एवं सफल कार्यकाल के लिए मंगलकामनाएँ। आपकी यह सफलता जांगिड समाज की जागरूकता, सामाजिक सहभागिता और लोकतांत्रिक व्यवस्था में बढ़ती भागीदारी का प्रतीक है। हमें विश्वास है कि आप अपने-अपने क्षेत्रों में स्वच्छता, सड़क, नाली-निकासी, पेयजल, प्रकाश व्यवस्था, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं अन्य मूलभूत नागरिक सुविधाओं के विकास के लिए पूरी निष्ठा, ईमानदारी और समर्पण के साथ कार्य करेंगे तथा सभी वर्गों के हितों को प्राथमिकता देंगे।

साथ ही, जो हमारे समाज के प्रत्याशी इस चुनाव में सफलता प्राप्त नहीं कर सके, उनके साहस, संघर्ष, मेहनत और जनसेवा की भावना को भी महासभा नमन करती है। चुनाव में विजय और पराजय लोकतांत्रिक प्रक्रिया के दो पहलू हैं। चुनाव परिणाम किसी व्यक्ति के सामाजिक योगदान, क्षमता अथवा जनसेवा की भावना को कम नहीं करते। आप सभी ने समाज और लोकतंत्र में अपनी सक्रिय भागीदारी निभाकर समाज का गौरव बढ़ाया है।हमें पूर्ण विश्वास है कि जो साथी इस बार सफल नहीं हो सके, वे अपने अनुभवों से सीख लेते हुए समाज एवं जनसेवा के कार्यों को निरंतर जारी रखेंगे और भविष्य में और अधिक मजबूती के साथ सफलता प्राप्त करेंगे। महासभा की ओर से आप सभी के उज्ज्वल भविष्य एवं आगामी अवसरों में सफलता की हार्दिक शुभकामनाएँ।

आइए, हम सभी मिलकर समाज की एकता, आपसी समन्वय और भाईचारे को मजबूत करें। हमारी भावना हो—**"समाजहित के साथ जनहित और राष्ट्रहित सर्वोपरि।"** राजस्थान के नगर निगम, नगर परिषद एवं नगर पालिकाओं के चुनाव में भाग लेने वाले समस्त जांगिड़ समाज के प्रत्याशियों को पुनः हार्दिक बधाई, शुभकामनाएँ एवं मंगलकामनाएँ।

— रामपाल शर्मा प्रधान

जांगिड सुथार समाज के नगर निगम, नगर परिषद व नगर पालिका के चुनावों में विजयी होने वाले पार्षदों की सूची

क्र. स	पार्षद का नाम	क्षेत्र	पार्टी	क्र. स	पार्षद का नाम	क्षेत्र	पार्टी
1.	कुलदीप जांगिड	जोधपुर	बीजेपी	18.	सुरेंद्र सुथार	बीदासर	बीजेपी
2.	दिपिका शर्मा	कोटा	बीजेपी	19.	उषा सुधार	बालेस	बीजेपी
3.	फतेहराज	जोधपुर	बीजेपी	20.	रामरतन सुथार	नापासर	बीजेपी
4.	बाल किशन नांगल	फलोदी	बीजेपी	21.	संतोष जांगिड	जोधपुर	बीजेपी
5.	भरत सुधार	डूंगरगढ	बीजेपी	22.	नंदिता जांगिड	जयपुर	कांग्रेस
6.	राकेश जांगिड	तारानगर	बीजेपी	23.	गजानंद सुधार	बीदासर	निर्दलीय
7.	लव कुमार	बाड़मेर	बीजेपी	24.	मुकेश जांगिड	जायल	कांग्रेस
8.	चित्रा सुथार	बीकानेर	बीजेपी	25.	महेंद्र जांगिड	श्रीगंगानगर	बीजेपी
9.	भोमराज सुधार	बाप	बीजेपी	26.	परमजीत कौर रामगढिया	श्रीगंगानगर	निर्दलीय
10.	परमा देवी सुथार	नोखा	बीजेपी	27.	लीला देवी सुथार	भीनमाल	निर्दलीय
11.	प्रमिला सुथार	गोलुवाला	बीजेपी	28.	बसंत सुथार	जालौर	कांग्रेस
12.	ललीता सुधार	आहोर	बीजेपी	29.	तुलसी राम शर्मा	ब्यावर	बीजेपी
13.	गोपी राम सुधार	पीलीबंगा	कांग्रेस	30.	शिवांगी	ब्यावर	कांग्रेस
14.	मुन्नी देवी सुथार	नोखा	बीजेपी	31.	मंजू लदौया	अजमेर	बीजेपी
15.	सोनम जांगिड	किशनगढ़	बीजेपी	32.	सीमा शर्मा	सवाईमाधोपुर	बीजेपी
16.	सरोज सुथार	देशनोक	कांग्रेस	33.	दीपक जांगिड	सवाईमाधोपुर	बीजेपी
17.	सीमा सुथार	नोखा	बीजेपी	34.	उमा जांगिड	बूंदी	बीजेपी

क्र. स	पार्षद का नाम	क्षेत्र	पार्टी
35.	विशाल शर्मा	मालपुरा	बीजेपी
36.	कमल जांगिड	चौमूं	काँग्रेस
37.	बसंत कुमार जांगिड	चौमू	बीजेपी
38.	आलोक जांगिड	चौमूं	बीजेपी
39.	अन्नू जांगिड	सरवाड, अजमेर	बीजेपी
40.	शिव प्रकाश जांगिड	टांटोती अजमेर	बीजेपी
41.	खींमराज जांगिड	बाडमेर	बीजेपी
42.	सुरेश जांगिड	फागी	काँग्रेस
43.	रामलाल जांगिड	विजयनगर	बीजेपी
44.	कुलदीप सुथार	राजलेदसर	बीजेपी
45.	माया सुथार	डूंगरपुर	बीजेपी
46.	हेम प्रकाश शर्मा	प्रतापगढ़	काँग्रेस
47.	विवेक जांगिड	प्रतापगढ़	काँग्रेस
48.	रामराज जांगिड	मेड़ता रोड	बीजेपी
49.	पूजा जांगिड	नावां	काँग्रेस
50.	संतोष जांगिड	नावां	काँग्रेस
51.	गजानन्द जांगिड	छोटीखाटू	बीजेपी
52.	मधु जांगिड	कुचामन	बीजेपी
53.	निर्मला जांगिड	लाडनूं	बीजेपी
54.	वन्दना जांगिड	लाडनूं	बीजेपी
55.	प्रभुदयाल जांगिड	पलसाना	बीजेपी
56.	संतोष देवी जांगिड	सीकर	बीजेपी
57.	मोहन लाल जांगिड	रींगस	बीजेपी
58.	रामगिरी देवी जांगिड	नीमकाथाना	निर्दलीय
59.	जितेंद्र जांगिड	धोद	बीजेपी
60.	सुमन देवी जांगिड	चुरू	बीजेपी
61.	सुश्री वंदिता शर्मा जांगिड	विद्याधर नगर	काग्रेस
62.	गायत्री शर्मा	बांसवाड़ा	बीजेपी
63.	राजेश्वरी शर्मा	बांसवाड़ा	काँग्रेस
64.	तारा चंद जांगिड	अलवर	बीजेपी
65.	बल प्रकाश सुथार	गोलुवाला	काँग्रेस
66.	नरेंद्र जांगिड	दूनी, टोंक	काँग्रेस
67.	बसंत सुथार	जालोर	बीजेपी
68.	निकिता जांगिड	जसोल	बीजेपी
69.	आशा सुथार-जुडिया	बालेसर	बीजेपी
70.	अंजनेश कुमार जांगिड	पिलानी	बीजेपी
71.	शोभा सुथार	सिवाना	बीजेपी
72.	मनीराम सुथार	तारानगर	काँग्रेस
73.	महेंद्र कुमार जांगड	अजितगढ़	काँग्रेस

महासभा दिल्ली के निर्देशानुसार, शाखा सभा जवाहर कॉलोनी एवं ब्रह्मर्षि अंगिरा सीनियर सेकेंडरी स्कूल के संयुक्त तत्वावधान में रविवार, 20 सितंबर 2026 को एयरफोर्स रोड स्थित नफीसा गार्डन में 30वां ब्रह्मर्षि अंगिरा जयंती समारोह श्रद्धा एवं हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। समारोह के मुख्य अतिथि विधायक सतीश फागना एवं अध्यक्षता प्रदेश महामंत्री, टेकचंद जांगिड ने की।









इंदौर में ब्रह्मर्षि अंगिरा जयंती एवं विश्वकर्मा पूजा दिवस समारोह आयोजित करने के छायाचित्र

हमारा स्वास्थ्य:-

सोरायसिस रोग — कारण, लक्षण, बचाव और उपचार

सोरायसिस को समझें, मरीज को नहीं ठुकराएँ — सही जानकारी और चिकित्सकीय देखभाल से जीवन बेहतर बनाया जा सकता है।

सोरायसिस त्वचा से संबंधित एक दीर्घकालिक सूजन संबंधी बीमारी है। इसमें शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली त्वचा की कोशिकाओं के निर्माण और उनके सामान्य चक्र को प्रभावित करती है। इसके कारण त्वचा पर लाल, मोटे या सूखे तथा पपड़ीदार चकत्ते दिखाई दे सकते हैं। कई बार इन चकत्तों में खुजली, जलन या असहजता भी हो सकती है। यह बीमारी व्यक्ति के जीवन की गुणवत्ता को प्रभावित कर सकती है, लेकिन सही चिकित्सकीय सलाह और नियमित देखभाल से इसके लक्षणों को काफी हद तक नियंत्रित किया जा सकता है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि सोरायसिस संक्रामक बीमारी नहीं है। यह किसी व्यक्ति को छूने, हाथ मिलाने, साथ बैठने, भोजन करने या एक ही घर में रहने से दूसरे व्यक्ति में नहीं फैलता। इसलिए सोरायसिस से पीड़ित व्यक्ति के प्रति किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं किया जाना चाहिए।

सोरायसिस क्या है?- हमारी त्वचा लगातार नई कोशिकाएँ बनाती है और पुरानी कोशिकाएँ धीरे-धीरे हटती रहती हैं। सोरायसिस में यह प्रक्रिया सामान्य से तेज हो सकती है। इसके परिणामस्वरूप त्वचा की सतह पर कोशिकाएँ जमा होने लगती हैं और मोटे, सूखे तथा पपड़ीदार चकत्ते बन सकते हैं। यह बीमारी शरीर के अलग-अलग हिस्सों में दिखाई दे सकती है। सामान्यतः कोहनी, घुटने, सिर की त्वचा और शरीर के अन्य हिस्से प्रभावित हो सकते हैं। कुछ लोगों में नाखूनों में भी बदलाव दिखाई दे सकते हैं। बीमारी की तीव्रता प्रत्येक व्यक्ति में अलग-अलग होती है और इसके लक्षण कभी कम तो कभी अधिक हो सकते हैं।

सोरायसिस के प्रमुख लक्षण- सोरायसिस के लक्षण व्यक्ति-व्यक्ति में अलग हो सकते हैं। सामान्य लक्षणों में त्वचा पर लाल या सूखे चकत्ते, पपड़ी बनना, खुजली और त्वचा में असहजता शामिल हैं। कुछ लोगों में सिर की त्वचा पर मोटी पपड़ी या परत दिखाई दे सकती है। नाखूनों में गड्ढे, मोटापन, रंग में बदलाव या नाखून का कमजोर होना भी कुछ मामलों में देखा जा सकता है। यदि त्वचा पर लंबे समय से ऐसे चकत्ते बने हुए हैं या लक्षण बार-बार लौट रहे हैं, तो त्वचा रोग विशेषज्ञ से सलाह लेना उचित है। केवल देखकर स्वयं बीमारी का नाम तय करना सही नहीं है, क्योंकि कई अन्य त्वचा रोगों के लक्षण भी मिलते-जुलते हो सकते हैं।

सोरायसिस होने के कारण- सोरायसिस का एक ही कारण नहीं है। इसके पीछे शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली, आनुवंशिक कारण और पर्यावरणीय परिस्थितियों की भूमिका हो सकती है। जिन परिवारों में सोरायसिस का इतिहास रहा है, उनमें इसके होने की संभावना सामान्य आबादी की तुलना में अधिक हो सकती है। कुछ परिस्थितियाँ पहले से मौजूद सोरायसिस के लक्षणों को बढ़ा सकती हैं। इनमें मानसिक तनाव, त्वचा पर चोट या खरोंच, कुछ संक्रमण तथा कुछ दवाएँ शामिल हो सकती हैं। हालांकि हर व्यक्ति में एक ही कारण लक्षणों को नहीं बढ़ाता। इसलिए मरीज को अपने लक्षणों और संभावित ट्रिगर के बारे में डॉक्टर को पूरी जानकारी देनी चाहिए।

क्या सोरायसिस संक्रामक है?- यह सोरायसिस से जुड़ी सबसे बड़ी गलतफहमियों में से एक है। सोरायसिस संक्रामक नहीं है। मरीज के शरीर पर दिखाई देने वाले चकत्तों को देखकर कई लोग उससे दूरी बनाने लगते हैं। इससे मरीज को शारीरिक परेशानी के साथ मानसिक तनाव भी हो सकता है। परिवार, मित्रों और समाज का दायित्व है कि वे बीमारी के बारे में सही जानकारी रखें और मरीज के साथ सामान्य व्यवहार करें। सोरायसिस वाले व्यक्ति के साथ बैठना, हाथ मिलाना या सामान्य सामाजिक संपर्क रखना सुरक्षित है।

सोरायसिस और मानसिक स्वास्थ्य- त्वचा शरीर का दिखाई देने वाला हिस्सा है। इसलिए त्वचा पर दिखाई देने वाले परिवर्तन व्यक्ति के आत्मविश्वास और सामाजिक जीवन को प्रभावित कर सकते हैं। कुछ मरीजों को यह चिंता हो सकती है कि लोग उनके बारे में क्या सोचेंगे। ऐसी स्थिति में परिवार और समाज का सहयोग बहुत महत्वपूर्ण है। मरीज को यह समझना चाहिए कि सोरायसिस उसकी व्यक्तिगत कमी या किसी गलती का परिणाम नहीं है। बीमारी को छिपाने के बजाय उचित चिकित्सकीय सलाह लेना बेहतर है। परिवार के सदस्यों को मरीज का मजाक उड़ाने, उसे अलग करने या बीमारी को लेकर डर पैदा करने के बजाय उसका मनोबल बढ़ाना चाहिए।

सोरायसिस का उपचार- सोरायसिस का उपचार बीमारी की गंभीरता, प्रभावित शरीर के हिस्सों और मरीज की व्यक्तिगत स्थिति के अनुसार किया जाता है। इसके लिए त्वचा रोग विशेषज्ञ कई प्रकार के उपचार सुझा सकते हैं। हल्के मामलों में त्वचा पर लगाने वाली दवाएँ और मॉइस्चराइजर उपयोगी हो सकते हैं। कुछ परिस्थितियों में डॉक्टर प्रकाश चिकित्सा की सलाह दे सकते हैं। अधिक गंभीर

मामलों में डॉक्टर ऐसी दवाएँ भी दे सकते हैं जो शरीर की प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया को नियंत्रित करने का काम करती हैं। यह याद रखना आवश्यक है कि हर मरीज का उपचार एक जैसा नहीं होता। किसी दूसरे व्यक्ति को दी गई दवा अपने आप इस्तेमाल करना उचित नहीं है।

बिना सलाह के दवा क्यों नहीं लेनी चाहिए? त्वचा पर दिखाई देने वाले चकत्तों के लिए बाजार में अनेक प्रकार की क्रीम उपलब्ध हैं। कुछ क्रीम में शक्तिशाली दवाएँ या स्टेरॉयड हो सकते हैं। बिना चिकित्सकीय सलाह के ऐसी क्रीम का लंबे समय तक उपयोग नुकसानदायक हो सकता है। इसी प्रकार इंटरनेट, सोशल मीडिया या किसी परिचित की सलाह के आधार पर दवा शुरू या बंद नहीं करनी चाहिए। यदि कोई दवा डॉक्टर ने निर्धारित की है तो उसके उपयोग, मात्रा और अवधि के बारे में डॉक्टर के निर्देशों का पालन करना चाहिए।

त्वचा की देखभाल- सोरायसिस से पीड़ित व्यक्ति के लिए त्वचा की नियमित देखभाल महत्वपूर्ण है। त्वचा को अत्यधिक सूखने से बचाने के लिए डॉक्टर द्वारा उपयुक्त मॉइस्चराइजर की सलाह दी जा सकती है। त्वचा को जोर से रगड़ना, खरोंचना या चकत्तों को बार-बार छीलना उचित नहीं है। बहुत गर्म पानी से लंबे समय तक स्नान करने से कुछ लोगों में त्वचा का सूखापन बढ़ सकता है। व्यक्ति को अपनी त्वचा की स्थिति के अनुसार चिकित्सक से उचित देखभाल की सलाह लेनी चाहिए।

जीवनशैली की भूमिका- स्वस्थ जीवनशैली सामान्य स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण है और सोरायसिस से पीड़ित व्यक्ति के लिए भी उपयोगी हो सकती है। पर्याप्त नींद, नियमित शारीरिक गतिविधि, संतुलित भोजन और तनाव को नियंत्रित करने के स्वस्थ उपाय अपनाना लाभकारी हो सकता है। किसी विशेष भोजन को सोरायसिस का निश्चित इलाज मानना उचित नहीं है। यदि किसी भोजन से बार-बार समस्या महसूस होती है तो डॉक्टर या योग्य आहार विशेषज्ञ से सलाह ली जा सकती है।

सोरायसिस और अन्य स्वास्थ्य समस्याएँ- सोरायसिस केवल त्वचा तक सीमित समस्या नहीं हो सकता। कुछ लोगों में इसके साथ अन्य स्वास्थ्य समस्याएँ भी जुड़ी हो सकती हैं। विशेष रूप से कुछ मरीजों में सोरियाटिक आर्थराइटिस नामक स्थिति विकसित हो सकती है, जिसमें जोड़ों में दर्द, सूजन या अकड़न हो सकती है। यदि सोरायसिस से पीड़ित व्यक्ति को लंबे समय तक जोड़ों में दर्द या सूजन रहती है, तो उसे डॉक्टर को इसकी जानकारी देनी चाहिए। समय पर चिकित्सकीय मूल्यांकन महत्वपूर्ण हो सकता है।

कब डॉक्टर से संपर्क करें?- यदि त्वचा पर लगातार लाल, सूखे या पपड़ीदार चकत्ते बने रहते हैं, बीमारी तेजी से बढ़ रही है, बहुत अधिक खुजली या असुविधा हो रही है, नाखूनों में असामान्य बदलाव दिखाई दे रहे हैं या जोड़ों में दर्द और सूजन है, तो चिकित्सकीय सलाह लेना चाहिए। यदि पहले से सोरायसिस का उपचार चल रहा है और लक्षणों में अचानक महत्वपूर्ण बदलाव आता है, तो डॉक्टर से संपर्क करना उचित है।

समाज की जिम्मेदारी- सोरायसिस के प्रति जागरूकता बढ़ाना केवल डॉक्टरों की जिम्मेदारी नहीं है। परिवार, विद्यालय, सामाजिक संगठन और मीडिया भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। हमें लोगों को यह संदेश देना चाहिए कि त्वचा पर दिखाई देने वाला रोग किसी व्यक्ति के चरित्र, स्वभाव या व्यक्तिगत स्वच्छता का प्रमाण नहीं है। किसी मरीज को देखकर उसके बारे में गलत धारणा बनाना उचित नहीं है। जागरूकता से गलतफहमियाँ कम होंगी और मरीज समय पर उपचार लेने के लिए प्रेरित होंगे। **सोरायसिस एक दीर्घकालिक त्वचा संबंधी बीमारी है,** लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि मरीज सामान्य जीवन नहीं जी सकता। सही निदान, नियमित चिकित्सकीय देखभाल, निर्धारित उपचार और स्वस्थ जीवनशैली से बीमारी को नियंत्रित करने में मदद मिल सकती है। सबसे आवश्यक है कि हम सोरायसिस को लेकर फैली गलत धारणाओं को दूर करें। यह संक्रामक बीमारी नहीं है और मरीज से दूरी बनाने की आवश्यकता नहीं है।

आइए हम संकल्प लें कि सोरायसिस से पीड़ित व्यक्ति को बीमारी के कारण नहीं, बल्कि एक सामान्य इंसान के रूप में सम्मान और सहयोग देंगे। सही जानकारी, समय पर चिकित्सकीय सलाह और संवेदनशील सामाजिक व्यवहार ही इस बीमारी से जुड़े डर और भेदभाव को कम करने का सबसे प्रभावी रास्ता है। **"सोरायसिस को समझें, भ्रम को दूर करें और मरीज का मनोबल बढ़ाएँ।"**

यह लेख सामान्य स्वास्थ्य-जागरूकता के उद्देश्य से है। व्यक्तिगत निदान या उपचार के लिए योग्य त्वचा रोग विशेषज्ञ से परामर्श आवश्यक है।

*****

महासभा दिल्ली के एक लाख रूपये के प्लेटिनम सदस्य



श्री कैलाश चन्द्र बरनेला, (इन्दौर)



श्री सुरेन्द्र कुमार वत्स, दिल्ली



श्री अशोक कुमार बरनेला, इन्दौर



श्री राम कुमार शर्मा,भरथल,दिल्ली



श्री पी.एल.शाखी, गुड़गांव



श्री देबूराम जांगिड, दिल्ली



श्री रामनिवास शर्मा, दिल्ली



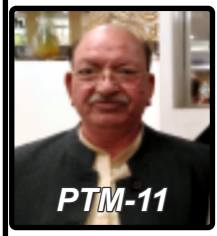
श्री राजेन्द्र शर्मा, इन्दौर



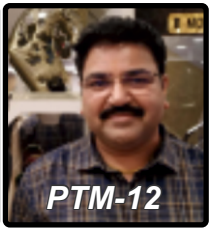
श्री निर्मल कुमार जांगिड, इन्दौर



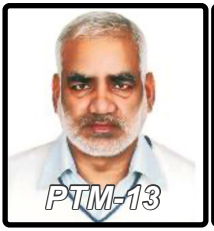
श्री लीलू राम शर्मा, दिल्ली



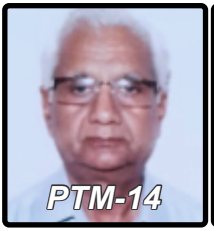
श्री रमेशचन्द शर्मा 'सरपंच', दिल्ली



श्री सुरेन्द्र कुमार शर्मा, दिल्ली



श्री जगदीश प्रसाद शर्मा, दिल्ली



श्री पूरनचन्द शर्मा, दिल्ली



श्री पाली राम शर्मा, आनंद पर्वत दिल्ली



श्री प्रकाश शर्मा, नारायणा, दिल्ली



श्री श्रीगोपाल चोयल, अजमेर



श्री कृष्ण कुमार शर्मा, मुम्बई



श्री माला राम शर्मा, वाली नगर,दिल्ली



श्री विद्यासागर जांगिड, गुड़गांव



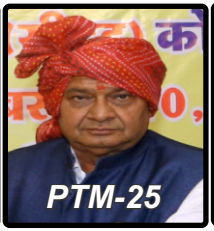
श्री सुशील कुमार शर्मा, कोलकता



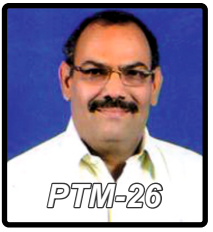
श्री रघुवीर सिंह आर्य, शामली



श्री वेदप्रकाश शर्मा, अहमदाबाद

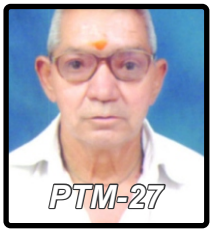


श्री प्रभुदयाल शर्मा, देवास

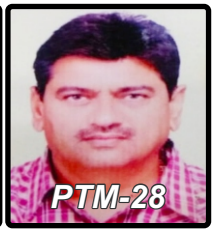


श्री प्रहलादराय शर्मा, इन्दौर

महासभा दिल्ली के एक लाख रूपये के प्लेटिनम सदस्य



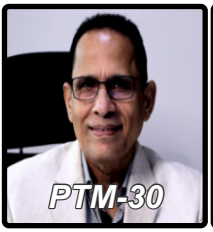
श्री मोहन लाल जांगिड, जोधपुर



श्री पूनाराम जांगिड, जोधपुर



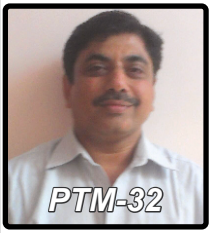
श्री ललित जड़वाल, अजमेर



श्री मीता राम जांगिड, मुम्बई



श्री यश अजय शर्मा, मुम्बई



श्री रविन्द्र शर्मा, बीकानेर



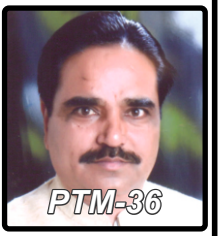
श्री जवाहरलाल जांगिड, उज्जैन



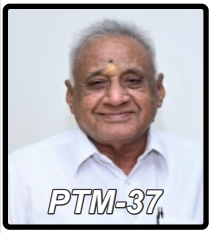
श्री नरेश जांगिड, गुड़गांव



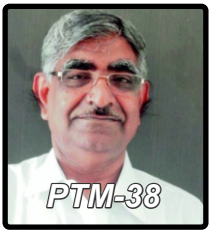
श्री भुवन जांगिड, गुड़गांव



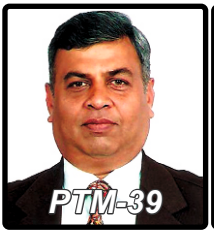
श्री कृष्ण कुमार जांगिड, गुड़गांव



श्री किशन लाल शर्मा, नागपुर



श्री गिरधारी लाल जांगिड,बेंगलुरु



श्री किशोर जी मोखा, नागपुर



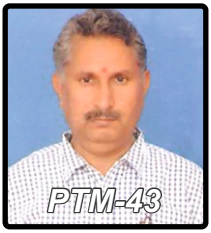
श्री बाबू लाल शर्मा, अहमदाबाद



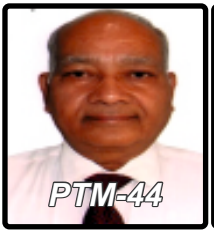
श्री नारायण दत्त, साड़ीवाले, दिल्ली



श्री ओमप्रकाश जांगिड, दिल्ली



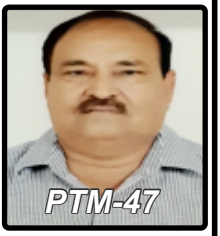
श्री धनपत शर्मा, फरीदाबाद



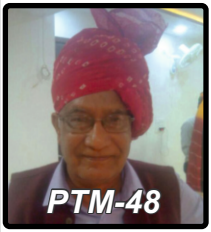
श्री सुरेन्द्र शर्मा, अहमदाबाद

फोटो उपलब्ध नहीं है

PTM-46
श्री दीपक भारद्वाज, दिल्ली



श्री सोमदत्त शर्मा, दिल्ली



श्री बी.सी. शर्मा, जयपुर



श्री सुरेश शर्मा, नीमच



श्री नितिन शर्मा, इन्दौर

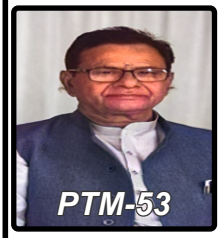


श्री प्रमोद कुमार जांगिड, सूरत



श्री हुकुमचन्द जांगिड, इन्दौर

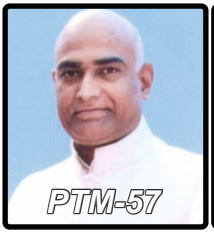
महासभा दिल्ली के एक लाख रूपये के प्लेटिनम सदस्य



श्री सत्यनारायण जांगिड, इन्दौर



श्री अशोक कुमार मोखा, नागपुर



श्री देवमणि जांगिड, दिल्ली



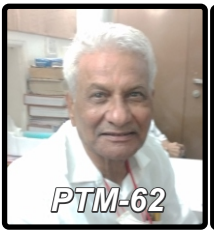
श्री फूलकुमार शर्मा, द्वारका-दिल्ली



श्री अमराराम जांगिड, जोधपुर



श्री रविशंकर शर्मा, जयपुर



श्री कांति प्रसाद जांगिड, करौली



श्री यादराम जांगिड, दिल्ली



श्री अशोक दत्तु राम, अहमदाबाद



श्री दयानन्द शर्मा, दिल्ली



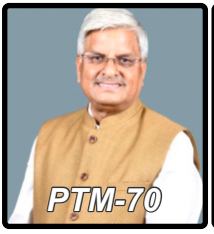
श्री यशवंत नेपालिया, अजमेर



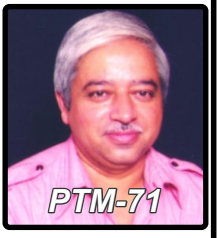
श्री राधेश्याम शर्मा, वापी



श्री जितेंद्र धामू, बीकानेर,राज.



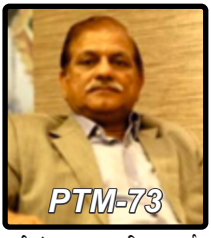
श्री रामपाल शर्मा, बैंगलुरू



श्री दिनेश नेपालिया, अजमेर



श्री गोपाल शर्मा, कोरबा



श्री भंवर लाल कुलरिया, मुम्बई

वर्तमान प्रधान के कार्यकाल में बने हुए इक्यावन हजार रुपये के स्वर्ण सदस्य



श्री प्रेमाराम जांगिड
अहमदाबाद



श्रीमती संतोष शर्मा
धमतरी,छत्तीसगढ



श्री मनोहर लाल शर्मा (दूरदर्शन वाले)
जयपुर, राजस्थान

वर्तमान प्रधान के कार्यकाल में बने हुए पच्चीस हजार रुपये के रजत सदस्य



श्री रामदयाल जांगिड, दुर्ग



श्रीमती लीलावती शर्मा, नीमच



श्री निकुंज शर्मा, लखनऊ

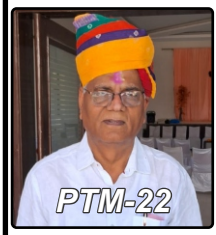


श्रीमती निति रनसीवाल, लखनऊ

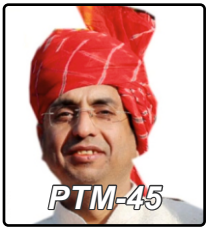


श्री राजेन्द्र कुमार जांगिड,धुले,महाराष्ट्र

वर्तमान प्रधान के कार्यकाल में बने हुए एक लाख रुपये के प्लेटिनम सदस्य



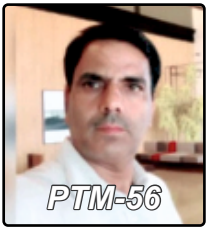
श्री सांवरमल जांगिड, सीकर



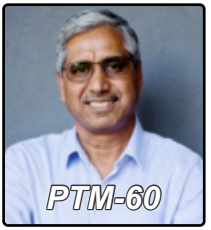
श्री सत्यनारायण शर्मा, दिल्ली



श्री गजानन जांगिड, जालना



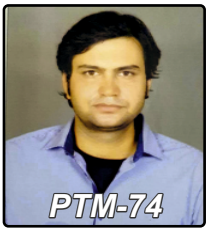
श्री घनश्याम जांगिड, बैंगलुरू



श्री रमेश शर्मा, बैंगलुरू



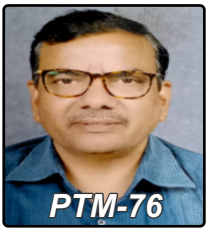
श्री बाबू लाल, बैंगलुरू



श्री अमित कुमार शर्मा, जयपुर



श्री नरेश चन्द्र शर्मा, बैंगलुरू



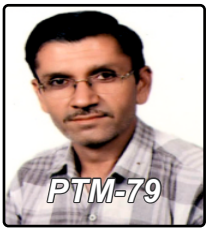
श्री भीमराज शर्मा, जयपुर



श्री रवि जांगिड, बैंगलुरू



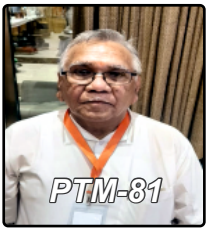
श्री भंवरलाल सुथार, गोवा



श्री रामनिवास शर्मा, भिलाई



श्री शुभम शर्मा, कोरबा



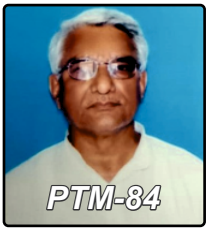
श्री नानूराम जांगिड, धुलिया



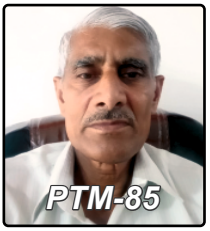
श्री प्रहलाद शर्मा, जयपुर



श्री रीछपाल शर्मा, बिलासपुर, छ.ग.



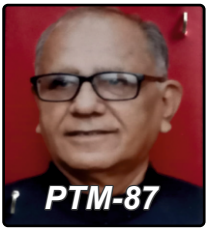
श्री धर्मचन्द शर्मा, बस्तर



श्री राधेश्याम जांगिड, रेनवाल



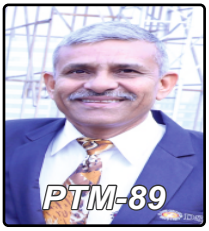
श्री कन्हैया लाल खाती, अजमेर



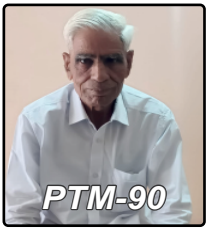
श्री कन्हैया लाल सिलक, अजमेर



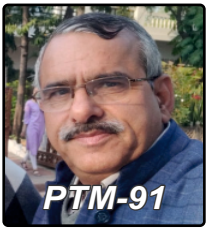
श्री अनिल शर्मा, इन्दौर



श्री धन सिंह जांगिड, फरीदाबाद



श्री लालचन्द जांगिड, नारनौल



श्री रोहिताश जांगिड, औरंगाबाद



श्री सांवरमल जांगिड, बांसवाडा

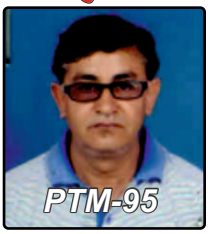
वर्तमान प्रधान के कार्यकाल में बने हुए एक लाख रुपये के प्लेटिनम सदस्य



श्री महावीर प्रसाद जांगिड,अहमदाबाद



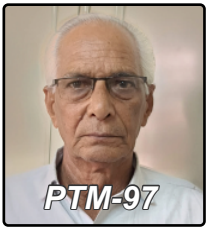
श्री शंकरलाल जांगिड, जयपुर



श्री संजय शर्मा, चित्तौड़गढ़



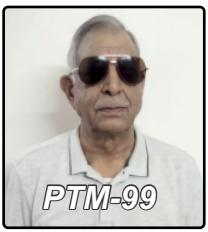
श्री जगतराम भद्रेचा, बैंगलुरु



श्री पुरुषोत्तम लाल जांगिड, जयपुर



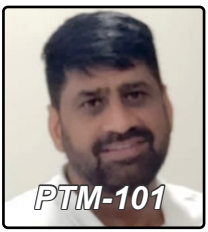
श्री अनिल शर्मा, चंडीगढ़



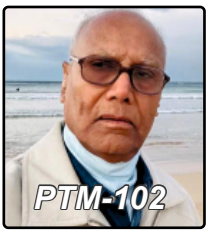
श्री लक्ष्मीनारायण जांगिड, गुरूग्राम



श्री नेमीचन्द जांगिड, सूरत



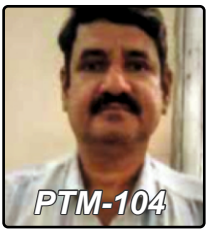
श्री चिरंजीलाल जांगिड, इन्दौर



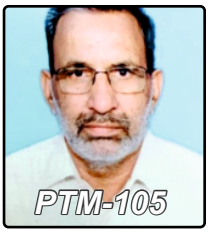
श्री राजेन्द्र कुमार शर्मा, सूरत



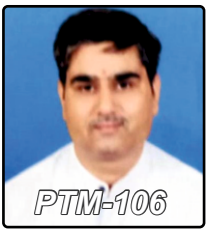
श्री सत्यपाल वत्स, बहादुरगढ़



श्री सोमदत्त शर्मा, लखनऊ



श्री ओम प्रकाश जांगिड, दिल्ली



श्री अनिल शर्मा, तेलंगाना



श्री मुकेश जांगिड, तेलंगाना



श्री भंवरलाल जांगिड, सूरत



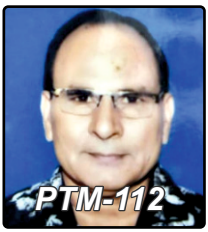
श्री जगदीश खण्डेलवाल, दिल्ली



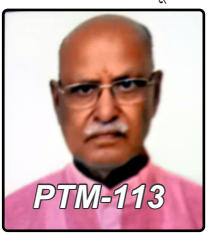
श्री भंवरलाल शर्मा, पाली,राज0



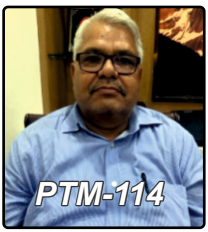
श्री प्रहलाद चन्द शर्मा, बेंगलुरू



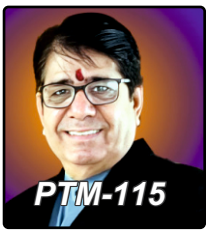
श्री नानूराम जांगिड, हिंगोली



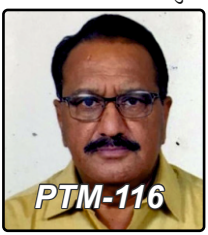
श्री रामानन्द शर्मा, सागरपुर, दिल्ली



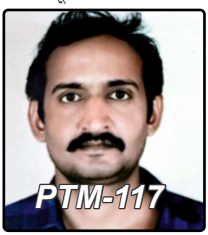
श्री जगदीश प्रसाद शर्मा, दिल्ली



श्री कैलाश जांगिड, सूरत



श्री मदन लाल शर्मा, वडोदरा

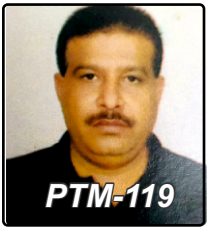


श्री गजानन्द जांगिड, सूरत

वर्तमान प्रधान के कार्यकाल में बने हुए एक लाख रुपये के प्लेटिनम सदस्य



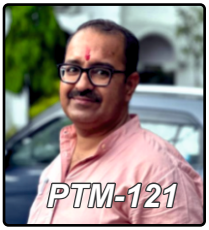
श्री हरिराम शर्मा, सागरपुर, दिल्ली



श्री सतवीर शर्मा, गुरूग्राम



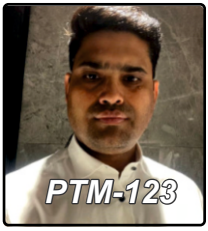
श्री किशोरी लाल शर्मा, सागरपुर, दिल्ली



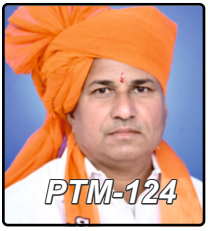
श्री सुनील सिद्धड़, चिड़ावा, झुंझुनू



श्री सुरेश कुमार जांगिड, नजफगढ़



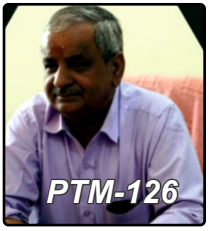
श्री मोहन पंवार, सागरपुर दिल्ली



श्री रामावतार जांगिड, सरदारशहर, चूरू



श्री राजील कुमार जांगिड, सूरत



श्री सादीराम जांगिड, हनुमानगढ़,रा0



श्री मामराज मिस्त्री, सूरत



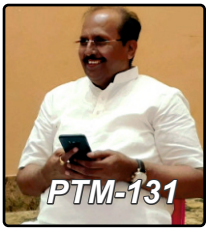
श्री सागरमल जांगिड, वडोदरा



श्री सुनील कुमार जांगिड, महाराष्ट्र



श्री महेश कुमार शर्मा, दिल्ली



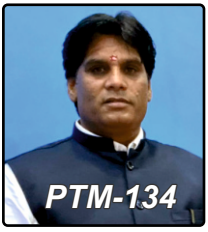
श्री किशन लाल जांगिड, जयपुर



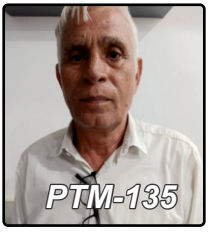
श्री एकलिंग प्रसाद सुथार, सूरत



श्री राजेश जांगिड, हैदराबाद



श्री सियाराम जांगिड, हैदराबाद



श्री रामवतार शर्मा, तिरूवल्लुर,तमिलनाडू



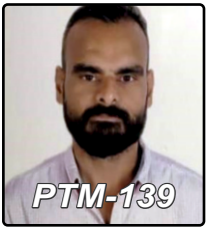
श्री सतीश कुमार जांगिड,(किशनगढ़ वास) वलसाड



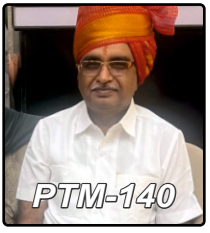
श्री शंकरलाल माकड़, हैदराबाद



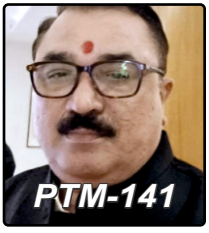
श्री महेश चन्द शर्मा, साध नगर, दिल्ली



श्री राकेश जांगिड, सूरत



श्री देवकरण जांगिड, हैदराबाद

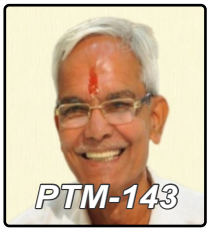


श्री सुभाष शर्मा, भरूच

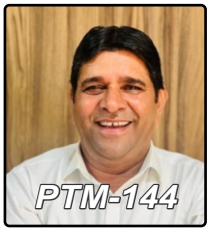


श्री महेश शर्मा, बैंगलुरू

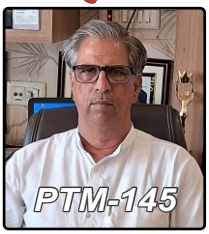
वर्तमान प्रधान के कार्यकाल में बने हुए एक लाख रुपये के प्लेटिनम सदस्य



श्री चंद्र प्रकाश शर्मा, गांधीधाम,कच्छ



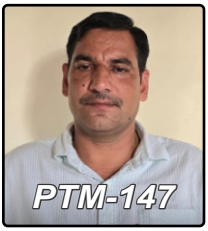
श्री सतवीर जांगिड, बैंगलुरू



श्री महेन्द्र सिंह जांगिड, धारूहेड़ा रेवाड़ी



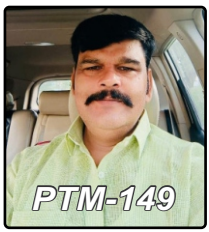
श्री पूरनमल जांगिड, सूरत



श्री नरेश शर्मा, भरूच



श्री बंशीधर जांगिड, भरूच



श्री मुकेश कुमार जांगिड, हिम्मतनगर



श्री गोपाल जांगिड, गांधी नगर



श्री राजेन्द्र कुमार डभाण, खेड़ा



श्री ओम प्रकाश शर्मा, अहमदाबाद



श्री अरूण कुमार डभाण, खेड़ा



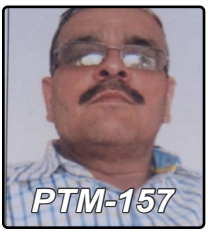
श्री कैलाश चंद्र शर्मा, डभाण, खेड़ा



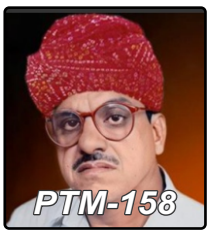
श्री मदन लाल सुथार, भरूच



श्री महेन्द्र जांगिड, भरूच



श्री कन्हैया लाल, (ओजटू वाले) बैंगलुरू



श्री शंकरलाल जांगिड, झुंझुनूं



श्रीमती उषा बड़वा धर्मपत्नी श्री आनन्द बड़वा, कोटा राज0



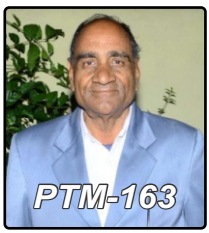
श्री देवेन्द्र शर्मा, उदयपुर, राजस्थान



श्री नरोत्तम लाल जांगिड, फरीदाबाद, हरियाणा



श्री हजारी लाल शर्मा, जयपुर, राज0



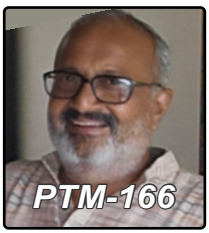
श्री भागीरथ मल जांगिड, जयपुर, राज0



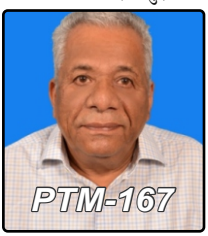
श्री मदनलाल शर्मा, रायपुर छ0गढ़



श्री पतराम शर्मा , गुरूग्राम, हरियाणा

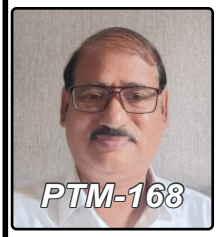


श्री बजरंग शर्मा , दुर्ग, छतीसगढ़

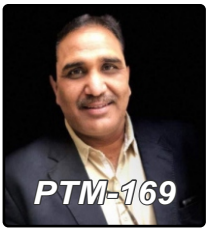


श्री विरदी चन्द शर्मा , रायपुर, छतीसगढ़

वर्तमान प्रधान के कार्यकाल में बने हुए एक लाख रुपये के प्लेटिनम सदस्य



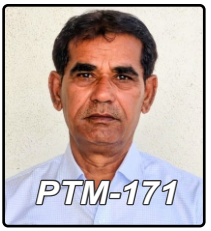
श्री ओमप्रकाश जांगिड, रायपुर, छतीसगढ़



श्री संतलाल शर्मा, बैंगलुरू, कर्नाटक



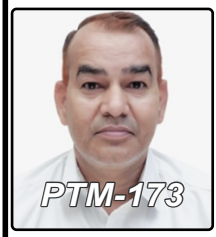
श्री जगन नाथ जांगिड, रेवाड़ी, हरियाणा



श्री राजकुमार चोयल,पोलो ग्राउंड, सीकर



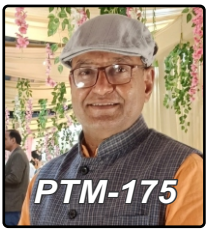
श्री गोपालदास शर्मा, रायपुर, छ0गढ़



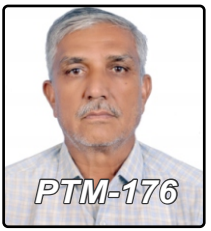
श्री विनोद कुमार शर्मा, रायपुर, छ0गढ़



श्री राधेश्याम शर्मा, जयपुर, राज0



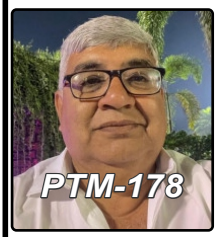
श्री प्रहलाद राय जांगिड, दूजोद, सीकर, राज0



श्री भोलाराम शर्मा, दुर्ग, छतीसगढ़



श्री रमेश शर्मा, रायपुर, छतीसगढ़



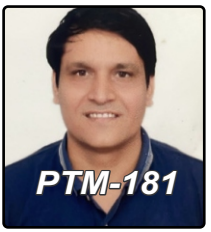
श्री सुरेन्द्र कुमार शर्मा, अहमदाबाद, गुज0



श्री नीलेश कुमार शर्मा, अहमदाबाद, गुज0



श्री अनुराग नीलेश कुमार शर्मा, अहमदाबाद, गुज0



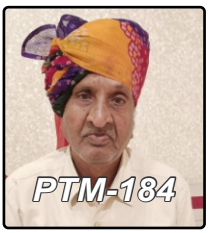
श्री ओम प्रकाश जांगिड, वापी वलसाड, गुज0



श्री शिवपाल जांगिड, बेटमा, इन्दौर, मध्य प्रदेश



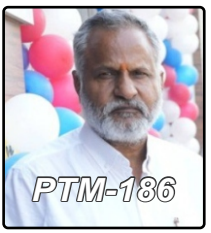
श्री उमेदराम जांगिड, वापी, वलसाड, गुजरात



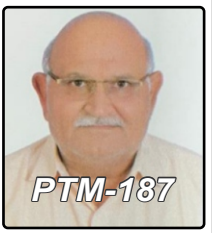
श्री द्वारका प्रसाद शर्मा, वापी, वलसाड, गुजरात



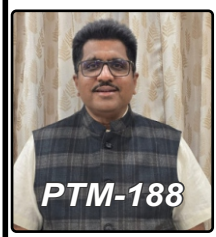
श्री अरुण कुमार, आया नगर, दिल्ली



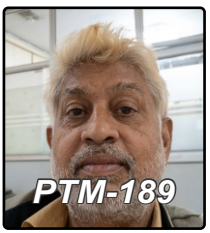
श्री सुरेश जांगिड, दक्षिणी दिल्ली



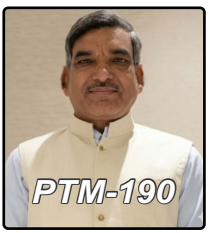
श्री श्रीराम जांगिड, बाजवा,वडोदरा, गुजरात



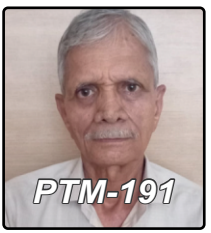
श्री जसाराम सुथार, पणजी, नॉर्थ गोवा



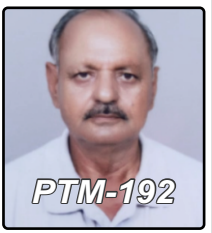
श्री देवेन्द्र कुमार शर्मा, मेरठ, उत्तर प्रदेश



श्री रवि दत्त शर्मा, अहमदाबाद,गुजरात

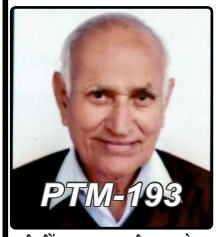


श्री रमेश चंद्र शर्मा, अंजनी नगर, इंदौर



श्री मुरारीलाल शर्मा, अहमदाबाद, गुजरात

वर्तमान प्रधान के कार्यकाल में बने हुए एक लाख रुपये के प्लेटिनम सदस्य



श्री वीरेंद्र कुमार, शामली, उत्तर प्रदेश



श्री महेंद्र जांगिड (पवार), कैलाशपुरी,इंदौर, म.प्र.



श्री सांवरमल शर्मा, दक्षिण गोवा,गोवा



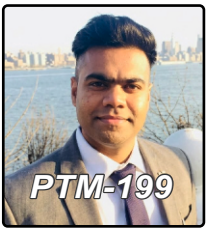
श्री अशोक शर्मा,जवाहर नगर,देवास,म.प्र.



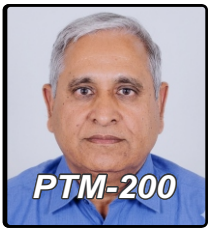
श्री धीरज शर्मा, सेक्टर-ई, इंदौर,म.प्र.



श्री ओम प्रकाश जांगिड, शाजापुर,म.प्र.



श्री विवेक शर्मा, व्यंकटेश नगर,इंदौर,म.प्र.



श्री जसमेंद्र शर्मा, होरामावु,बेंगलुरु,कर्नाटक



श्री गोपेश जांगिड, ढेहर का बालाजी,जयपुर



श्री विमल कुमार शर्मा, ढेहर का बालाजी,जयपुर



श्री सुरेंद्र जांगिड, सीकर रोड,जयपुर, राज.



श्री राम नारायण जांगिड, खातियों की ढाणी, जयपुर, राज.

वर चाहिए

1. Wanted a suitable match for Jangid Brahmin girl, DOB: 03.09.1995, Height – 5'5", Birth Time- 07:35 AM, Education- B.Com, LLB Ujjain, MP Gotras: **Bichayati , Chichawa , Bodliya, Bhakroda,** Contact- Lokendra Sharma - **9575119995**

वधू चाहिए

1.Wanted a suitable match for Jangid Brahmin boy, DOB: 07.08.1995, Height – 5'11", Permanent address: Village - Kheri Safa, PO - Kharak Bhura, Tehsil - Uchana Distt. - Jind (Haryana) – 126115, Academic Qualifications: Bachelor of Arts with Diploma in Firemen, Job / Profession: Supervisor in SIS Group, New Delhi Family Details: Father's profession: Farmer, Mother's profession: Anganwadi Worker, Sister's profession: Home Maker & married **Gotras: Self: Bhere, Mother: Siddhar, Grandmother: Selwal , Contact No: Father - 8810683753**

2. Wanted a suitable match for vegetarian Jangid Brahmin boy of DLF Gurgaon, D.O.B. 4th October 1996, height 5'10". Educational Qualification:-B. Tech in computer science, MBA (IIM Bangalore) and giving service as a senior software Engineer in Google. **Gotra Khudania (Father), Dahiya (Mother), Jhuljulia (Paternal Grandmother), Mariyan (Material Grand mother)** Father: Vijay Sharm a (Own Business) Mother: Suman (Homemaker) Sibling: younger sister, B. Tech computer science & MBA Contact: 9810340014 (Father)

विश्वकर्मा एजुकेशन ट्रस्ट (रजि०)

प्रधान कार्यालय : A-357, मंगल बाजार रोड, संगम विहार, नई दिल्ली-110080
मो. 9811038827, 9810136256, 9810612825

आदरणीय :

सदस्यगण,

विश्वकर्मा एजुकेशन ट्रस्ट (रजि0)

आप सभी को सादर सूचित किया जाता है कि 22 नवम्बर 2026 को छात्रवृत्ति वितरण समारोह का आयोजन ऑनलाईन के जरिये किया जा रहा है।

अतः आपसे निवेदन है कि आप अपनी जानकारी अनुसार समाज के आर्थिक रूप से कमजोर एवं मैधावी छात्र-छात्राओं के छात्रवृत्ति हेतु अनुमोदित कर प्रोत्साहित करें आवेदन में निम्न जानकारी आवश्यक है।

1. छात्र/छात्राओं का नाम .....
2. पिता का नाम .....
3. स्थाई पता .....
4. मोबाईल नम्बर .....
5. परिवार की आय .....
6. नियमित अध्यनरत कोर्स/कक्षा/वर्ष .....
7. छात्र/छात्राओं की प्राप्तांक प्रतिशत .....
8. कॉलेज/इंस्टीट्यूट की बोनाफाइट सर्टिफिकेट संलग्न करना है .....
9. पिछले वर्ष की परीक्षा की सत्यापित मार्कशीट संलग्न करनी है .....
10. बैंक एकाउण्ट नम्बर .....
11. IFSC कोड नम्बर.....
12. बैंक का नाम व स्थान .....

मैं शपथ पूर्वक घोषणा करता/करती हूँ कि मेरे द्वारा दी गई उपरोक्त समस्त जानकारियां सही है। मुझे छात्रवृति मिले, मैं हर हाल में पूरी मेहनत के साथ पंढूगा/पंढूगी और विश्वकर्मा एजुकेशन ट्रस्ट के प्रति सदैव निष्ठावान रहूँगी/रहूँगा। समय आने पर ट्रस्ट की सदस्यता भी ग्रहण करूंगी/करूंगा ।

अनुमोदन :- प्रमाणित किया जाता है कि इस छात्र / छात्रा की आर्थिक स्थिति कमजोर है लेकिन मार्कशीट के अनुसार प्रतिभाशाली है । अतः इसे छात्रवृति प्रदान कर अनुग्रहीत करें ।

1. ट्रस्टी का नाम .....सदस्यता संख्या ..... फोन नं ..... हस्ताक्षर .....
2. ट्रस्टी का नाम .....सदस्यता संख्या ..... फोन नं ..... हस्ताक्षर .....

आवश्यक सूचना

1-प्रार्थी 12वीं कक्षा से ऊपर किसी भी डिप्लोमा या डिग्री में अध्ययन होना चाहिए।
2-प्रार्थी के पिछले वर्ष की परीक्षा में प्राप्तांक 80 प्रतिशत से कम नही होने चाहिए।
3-प्रार्थी किसी भी कॉलेज या संस्थान का नियमित छात्र होना चाहिए।
4-आवेदन पत्र ट्रस्ट के दो ट्रस्टियों द्वारा अनुमोदित होना अनिवार्य है।
5-31 अक्टूबर 2026 तक फार्म जमा कराने होंगे । इसके बाद कोई भी आवेदन स्वीकार नहीं किया जाएगा
6-छात्र व अत्राओं जिसका फार्म सलेक्ट होगा उनको सूचित कर दिया जायेगा व ऑनलाईन छात्रवृति दी जायेगी।
7-किसी भी रूप में गलत जानकारी देने पर आवेदन पत्र निरस्त समझा जायेगा। अपने फोन न. सही होना चाहिए ।
8-कृपया पासबुक के छायाप्रति (फोटोकॉपी) सलग्न करें ।
9-आवेदन प्रधान कार्यालय : A-357, मंगल बाजार रोड, संगम विहार, नई दिल्ली-110080 पर डाक या कोरियर द्वारा भेजे ।

निवेदक : विश्वकर्मा एजुकेशन ट्रस्ट

श्री लादूराम जांगिड	श्री जगदीश प्रसाद जांगिड	श्री बंकट लाल जांगिड
प्रधान	महासचिव	कोषाध्यक्ष
मो0 : 9811038827	मो0 - 9810136256	मो0 : 9810612825

जांगिड समाज के कर्मठ समाजसेवी



सादर श्रद्धांजलि सुमन

अत्यंत दु:ख के साथ सूचित करना पड़ रहा है कि श्रीमान सत्य नारायण शर्मा सुपुत्र श्री भगवान सहाय शर्मा, सागरपुर, दिल्ली (कोटपुतली वाले) का स्वर्गवास दिनांक 25 सितम्बर 2026 को ब्रह्मलीन होकर देवलोकगमन होने की दु:खद घटना के बारे में जानकर हृदय को अपार दु:खद एवं पीड़ा की अनुभूति हुई। उनके स्वर्ग लोकगमन से आपके परिवार को ही नहीं अपितु समाज को जो अपूर्णीय क्षति पहुंची है उसकी भरपाई कर पाना किसी के लिए भी असंभव ही नहीं अपितु दुष्कर भी है, क्योंकि परमेश्वर के विधान के समक्ष हम सभी असहाय है

भारतीय संस्कृति हमें वसुदेव कुटुम्ब का पाठ पढ़ाते हुए स्वयं से उठकर उद्देश्य मूलक जीवन जीने को प्रेषित करती है, पर पीड़ा को अपनी पीड़ा मानकर, इसके निदान हेतु सदैव तत्पर रहना विशिष्ट दैवीय गुण है ऐसे विशिष्ट गुणों को चरितार्थ करने वाले कर्मशील एवं सेवा भावी व्यक्तित्व के धनी, समाजसेवी श्री सत्य नारायण शर्मा हमारे बीच नहीं रहे।

स्वर्गीय श्री सत्य नारायण शर्मा हंसमुख, मृदुभाषी, मिलनसार, परोपकारी एवं धार्मिक व्यक्तित्व के धनी थे। वे अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़ कर गये है।

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा तथा समस्त कार्यकारिणी परम पिता परमेश्वर से प्रार्थना करती है कि वह दिवंगत पुण्यात्मा को अपने श्री चरणों मे उचित स्थान प्रदान करे और शोकाकुल परिवार को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे। हम सभी आपके समस्त परिवार के प्रति गहरी संवेदना प्रकट करते हुए दिवंगत पुण्यात्मा के श्री चरणों मे श्रद्धासुमन और भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

ॐ शांति:... ॐ शांति:... ॐ शांति:....

रामपाल शर्मा -प्रधान महासभा

सांवरमल जांगिड-महामंत्री महासभा

जांगिड समाज के कर्मठ समाजसेवी



सादर श्रद्धांजलि सुमन

अत्यंत दु:ख के साथ सूचित करना पड़ रहा है कि श्रीमान आत्मारामजी कारपेंटर जी का स्वर्गवास दिनांक 10 सितम्बर 2026 को ब्रह्मलीन होकर देवलोकगमन होने की दु:खद घटना के बारे में जानकर हृदय को अपार दु:खद एवं पीड़ा की अनुभूति हुई।

भारतीय संस्कृति हमें वासुदेव कुटुम्ब का पाठ पढ़ाते हुए स्वयं से उठकर उद्देश्य मूलक जीवन जीने को प्रेषित करती है, पर पीड़ा को अपनी पीड़ा मानकर, इसके निदान हेतु सदैव तत्पर रहना विशिष्ट दैवीय गुण है ऐसे विशिष्ट गुणों को चरितार्थ करने वाले कर्मशील एवं सेवा भावी व्यक्तित्व के धनी, समाजसेवी एवं परम हनुमान भक्त श्री आत्मारामजी कारपेंटर हमारे बीच नहीं रहे।

स्वर्गीय श्री आत्मारामजी कारपेंटर हंसमुख, मृदुभाषी, मिलनसार, परोपकारी एवं धार्मिक व्यक्तित्व के धनी थे। कर्म ही जीवन है और सेवा में ही सुख है, इस भावना को अंगीकार करके उन्होंने सदैव जरूरतमंदों की सेवा की। आपकी समाज के प्रति सकारात्मक सोच एवं सहभागिता तथा समाज उत्थान हेतु की गई सेवाएं अमिट एवं अविस्मृत रहेगी।

आपके आकस्मिक देवलोकगमन से परिवार को ही नहीं अपितु सम्पूर्ण जांगिड ब्राह्मण समाज को भी अपूर्णीय क्षति हुई है, अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा दिल्ली एवं उसकी समस्त कार्यकारिणी की ओर से पुण्य आत्मा को विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए ईश्वर से प्रार्थना करते है कि उन्हें सद्गति प्रदान कर अपने श्री चरणों में स्थान दें और शोकाकुल परिवार जनों को यह वज्रपात सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

ॐ शांति:... ॐ शांति:... ॐ शांति:....

रामपाल शर्मा -प्रधान महासभा

सांवरमल जांगिड-महामंत्री महासभा

BHARAT WHEEL

Manufacturer of Rims for Tractor,
Motor Vehicle, Earthmoving Machine.

Our valued customers

VECTRA MANITOU GROUP JCB ESCORTS





Bharat Wheel Private Limited
Muzaffarnagar Road, Shamli - 247776, UP, India
Email : info@bharatwheel.com
www.bharatwheel.com

SHARMA
Group of companies

25 YEARS OF DRIVEN EXCELLENCE
SHARMA HYUNDAI
SINCE 1998



LATE SHREE
KANHAIYALAL
SHARMA
(CHOYAL)
FOUNDER

HYUNDAI

AUTHORISED HYUNDAI DEALER
SHARMA HYUNDAI
Since 1998

Ashram Road
Call : 9099978327

Satellite
Call : 9099978334

Parimal Garden
Call : 9099978328

Naroda
Call : 9099938777



TOYOTA



Authorised Toyota Dealer : NARMADA TOYOTA
VADODARA : 9099916601 I ANAND : 9099916631/32

MORRIS GARAGES
Since 1924

Authorised MG Dealer :
Kayakalp Cars Pvt. Ltd.
Zorba Complex, Akshar chowk, OP Road, Vadodara.
Ph : 6358800230/31



Registered With The Registrar of
News Papers For INDIA,
Under Regd. No. 25512/72

D.L.(DG-11)/8009/2024-26
Posted Under Licence No. U(DN)39/2024-26
of Post without prepayment of postage

Mahindra
Rise

महिन्द्रा का अधिकृत शोरूम एवं वर्कशॉप

भागीरथ मोटर्स (इं) प्रा.लि.



पर्सनल वाहनों के लिए सम्पर्क करें मो. 9109154144, 9109154152
कमर्शियल वाहनों के लिए सम्पर्क करें मो. 9109154153

शोरूम : सर्वे नं. 379/2,ग्राम-डाबला, रेवाड़ी, आगरा रोड, आर.डी. गार्डी कॉलेज के पास, उज्जैन (म.प्र.)

Bhagirth & Brothers

Bus & Truck Body Manufacture Since 1960

Organization :

Audi Automobiles, Pithampur
Bhagirath Coach & Metal Fabricators Pvt. Ltd., Pithampur
B & B Body Builders, A.B. Road, Indore
Rohan Coach Builders, 29Nehru park, Indore



Adm. Office
29, Nehru Park Road, Indore-1(M.P.)
Phone : 0731-2431921, Fax" 0731-2538841

Works:
Plot No. 199-b, Sector-1
Pithampur Dist. Dhar (M.P.) 454775
Phone : 07292-426150 to 70

Website : www.bhagirathbrothers.com





Printed, Published by Sh. J.P. Sharma, K-29, Ward-1, Desu Road, Mehrauli, New Delhi-30, on behalf of (Owner) Akhil Bhartiya Jangid Brahmin Mahasabha, 440, Haveli Haider Quli, Chandni Chowk, Delhi-06, Printed at M/s. Kamal Printers, Anand Parbat, N.D.-05, Ph.:9810622239, Published at Delhi, Editor Sh. Ram Bhagat Sharma, 1741 Sector - 23 B Chandigarh (UT)

मेरा भारत

Posting Date: 22-27 Each Month
Publication Date: 15 September 2026
Weight: 100 gms. Cost: Rs. 240 Yearly

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा
440, हवेली हैदर कुली,
चाँदनी चौक, दिल्ली-110006

फ्री